श्री

प्रयागतीर्थ कर्म पद्धतिः



संकलनकर्त्ता व प्रकाशक

लोकनाथ भारद्वाज

दारागंज वासुकी

प्रयाग



थम वृत्त
१०००

सं० २०२० सन् १९६३

मूल्य—
१ रु० २५ न० पै०

विनम्र-निवेदन

प्रिय बन्धुवों !

बड़ी ही प्रसन्नता की बात है कि तीर्थ सम्राट राज राजेश्वर श्री वेणीमाधव जी की विशेष अनुकम्पा के फलस्वरूप आज हम जिस पुस्तक को आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं, यह कितनी उपयोगी सिद्ध होगी, इसका तो विज्ञ पाठक ही निर्णय कर सकेंगे।

अपना तो जहाँ तक कर्तव्य था, उसका निर्वाह किया और अनुभव भी किया कि हमारे तीर्थ-यात्रियों, तथा विशेषरूप से तीर्थ पुरोहित बन्धुओं को तीर्थ-सम्बन्धी कर्मकाण्ड से बहुत कुछ अंशों में अनभिज्ञता के कारण अन्य मुखापेक्षी बनना पड़ जाता था, जिसके फलस्वरूप यहाँ तक देखा गया है कि शास्त्रीय कर्मकाण्ड एवं भाषा की अज्ञानता के कारण कितने अन्य अनधिकारी व्यक्ति आज-दिन अनधिकारी बन बैठे हैं।

अस्तु—इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर इस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से इस संग्रह ग्रन्थ का प्रकाशन अत्यावश्यक जान पड़ा।

इस महत्व एवं उत्तरदायित्व पूर्ण प्रकाशन कार्य में पर्याप्त समय के अभाव के कारण इसको वृहद् रूप न दे सका, फिर भी उपयोगी अंश के संकलन में पूर्ण प्रयास किया गया है।

इस सम्बन्ध में हम अपने उन पूर्वजों, मित्रों, पण्डितों एवं विद्वानों को भी नहीं भूल सकते, जिनके द्वारा मुझे समय-समय पर, हर प्रकार की सहायता मिली है। सबसे अधिक ऋणी हम स्वर्गीय श्री नारायणदास जी बडील के है,

जिन्होंने आज से पच्चासों वर्ष पूर्व इस दिशा में ॥ तीर्थराजविधिः ॥ नामक ग्रन्थ का प्रकाशन किया था, मुझे इससे सर्वाधिक सहायता मिली, एतदर्थ उनके चिर ऋणी है।

इनके अतिरिक्त हम श्रीमान् पं० भरत जी तिवारी के भी कम ऋणी नहीं हैं, जिनकी प्रेरणा के ही फलस्वरूप आज-दिन इस पुस्तक का प्रकाशन कार्य सुसम्पन्न हो सका।

साथ ही साथ जिन अन्य विद्वानों एवं उनकी कृतियों से सहयोग प्राप्त हुआ है, उनमें :—

सर्व श्री पं० बालकृष्ण जी दूबे "कर्मकाण्डी" ज्योतिषी श्रीमान् पं० राधे श्याम जी दूबे; श्रीमान् पं० बैजनाथ शुक्ल तथा श्रीमान् पं० प्रयाग नारायण पाठक, शास्त्री दारागंज—प्रयाग।

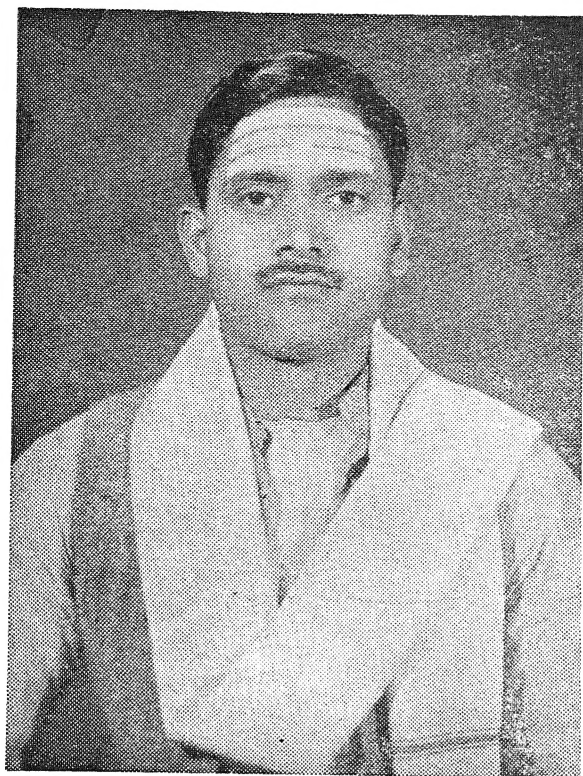
हम इन लोगों के भी विशेष आभारी हैं। साथ ही यह आशा करते हैं, कि इसी प्रकार का सहयोग अन्यान्य प्रकाशन के शुभ अवसर पर भी सदैव मिलता रहेगा।

इस संकलन में जो कुछ भी त्रुटियाँ रह गई है। उनका संशोधन अगले संस्करण में अवश्य कर दिया जायगा। आशा है, विद्वज्जन एवं आचारनिष्ठ व्यक्ति अपने सुझाओं से मुझे सूचित करके कृतार्थ करने की कृपा करेंगे।

विनयावनत

लोकनाथ भारद्वाज,
दारागंज—वासुकी प्रयाग

चैत्र रामनवमी
संवत २०२०



संकलन कर्त्ता

पं० लोकनाथ भारद्वाज

भूमिका

इधर कुछ दिनों से मन में यह संकल्प उठता रहा है, कि तीर्थराज प्रयाग में आने वाले यात्री सभी प्रकार के कर्मकाण्ड सम्बन्धी कृत्य के साथ ही साथ प्रयाग की अन्यान्य उपयोगी वस्तु से स्वयं ही परिचित हो जायें।

इसी बीच "श्री प्रयाग तीर्थ कर्म पद्धतिः" नामक सर्वाङ्गीण कर्मकाण्ड विषयक संग्रह ग्रन्थ देखकर परम सन्तोष एवं उल्लास भी हुआ।

इस पुस्तक के माध्यम से यात्री स्वयं ही अथवा अपने वंश परम्परागत तीर्थगुरू के द्वारा शास्त्रीय-विधि-विधान सहित तीर्थ का कृत्य सम्पादन करा कर सहज ही अपनी यात्रा का सम्पूर्ण फल प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरे प्रकाशन में सर्वाधिक प्रयत्न, स्वल्प समय में, जिस लगन से मेरे सहयोगी "श्री लोकनाथ भारद्वाज" ने प्रयास किया है, वह श्लाघनीय है। आशा है कि पाठकगण, इसे अपनाकर इसी प्रकार तीर्थ सम्बन्धी अन्यान्य साहित्य-सृजन का अवसर प्रदान करते रहेंगे।

साहित्यायुर्वेद व्याकरणाचार्य
देवनारायण शोकहा, शास्त्री
दारागंज—प्रयाग

चैत्र शुक्ल राम नवमी
संवत् २०२०

दो शब्द

'श्री प्रयाग-तीर्थ-कर्म-पद्धतिः' पुस्तक प्रयाग में आने वाले श्रद्धालु यात्रियों एवं तीर्थ-पुरोहितों के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी, इसमें किञ्चित मात्र भी सन्देह नहीं है। मुझे विश्वास है कि इसी प्रकार अन्य तीर्थ-सम्बन्धी कर्म-काण्ड विषयक पुस्तिकाओं का प्रकाशन श्री भारद्वाज जी द्वारा भविष्य में सम्भव हो सकेगा। श्री लोकनाथ भारद्वाज जी का यह श्रम तथा प्रयत्न बहुत ही प्रशंसनीय है।

ओंकारनाथ मिश्र एम० ए०
शास्त्री, 'साहित्यरत्न'
गौतम-निवास
दारागंज—वासुकि, प्रयाग।

चैत रामनवमी
२०२०

सूचिका

श्री वेणीमाधव जी



नीलजीमूत संङ्काशं पीतकौशेवाससम् ।
प्रयागनिलयस्वामिन् वेणीमाधवते नमः ॥

संध्या प्रारम्भ

स्नान कर पवित्र वस्त्र धारण करके नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार पढ़कर अपने शरीर के ऊपर जल छिड़के।

मंत्र—ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्ग गतोऽपिवा। यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

आचमन—ॐ केशवायनमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः। ओं हृषीकेशाय नमः—इस मंत्र से हाथ धो डाले।

संकल्प—ओं तत्सत् ओं अद्यैतस्य ब्रह्मणोह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्तकदेशांतर्गते कलियुगे कलि प्रथम चरणे पुण्यक्षेत्रे अमुक मासे-अमुक पक्षे—अमुकतिथौ-अमुकवासरे-अमुक गोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहं प्रातः-मध्याह्न-सायं संध्योपासन कर्म करिष्ये।

तत्पश्चात् शिखाबन्धन गायत्री मंत्र से विनियोग, आसन पवित्र करना।

ॐ पृथ्वीतिमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलंछदः कूर्म्मो देवता आसने विनियोगः।

मंत्र आसन पर जल छोड़ने का।

ॐ पृथ्वित्वयावृता लोकादेवितां विष्णुना वृता
त्वञ्च धराय मां देवि पवित्रं कुरुचासनम् ॥

आचमन का विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़ दें।

ॐ ऋतञ्चेति, अधमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भाववृतो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मंत्र—ॐ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्याजायत। ततोरात्र्य जायततत: समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादीध सम्वत्सरो अजायत।

अहोरात्राणि विदधद्विश्व स्यमिषतोवशी ॥ सूर्य्याचन्द्र मसौधाता यथा पूर्वमकल्पयन् । दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्तरिक्षमथोस्वः ॥

पुनः जल लेकर गायत्री मन्त्र पढ़कर शरीर के चारों तरफ छोड़े ।

विनियोग प्राणायाम (४) चार बार ।

ॐ कारस्य ब्रह्माऋषिगयित्रो छन्दोऽग्नि दैंवताशुक्लोवर्णः सर्व कर्मारम्भे विनियोगः ।१

ॐ सप्तव्याहृतीनांविश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतमात्रिवा-सिष्ठकश्पाऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् वृहतीपंक्ति स्त्रिष्टुप् जगत्यश्छन्दां-स्यऽग्निर्वाय्वादित्यवृहस्पति वरुणेन्द्र विश्वेदेवादेवता अनादिष्ट प्रायश्चित्त प्रशान्त्यर्थे प्राणायामे विनियोगः । २

गायत्र्याविश्वामित्रऋषिगायित्रीछन्दः सविताद्देवताऽग्निर्मुखमु—पनयने प्राणयामे विनियोगः । ३

ॐ शिरसः प्रजापतिऋषिस्त्रि पदागायत्री छन्दो ब्रह्माग्निवायुः सूर्योदेवता यजुः प्राणायामे विनियोगः । ४

प्राणायाम मंत्र को पढ़ते-पढ़ते नासिका के दाहिने छिद्र से स्वास खींचता जाय एक बार मंत्र को पढ़ने के बाद बायें छिद्र को फिर दूसरी बार मंत्र पढ़-कर अगुष्ठा से दबाये फिर तीसरी बार स्वांस स्थिर करके मंत्र पढ़कर स्वांस को बायें छिद्र से धीरे-धीरे छोड़े ।

मंत्र प्राणायाम—ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात । ओं आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

प्रातः आचमन का विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़े ।

ओं सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्यो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

मंत्र आचमन—ओं सूर्य्यश्चमा मनुश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्तां यद्रात्र्यापापमकार्षमनसावाचा हस्ताभ्यां पदभ्यांमुदरेण

शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितं मयि इदमहमापोमृतयोनौ सत्यें ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

प्रातः काल की भाँति मध्यान्ह का विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़े ।

ओं आपः पुनन्तिवति विष्णु ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ॥

मंत्र आचमन—ओं आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु मां पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता प्रनातु माम् ।

यदुच्छिष्टम भोज्यञ्चयद्वादुश्चरितं मम सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतांञ्च प्रतिग्रहगूँ स्वाहा ॥

सायंकाल का विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़े ।

ॐ अग्निश्चमेतिरुद्रऋषिः प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

मंत्र आचमन—ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिद्दुरितंमयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्येज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ॥

विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़ दे ।

ॐ आपोहिष्ठेत्यादि ऋचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री च्छदः आपोदेवता मार्जने विनियोगः॥

नीचे लिखे मंत्र के द्वारा सात बार अपने ऊपर जल छिड़के आठवीं बार पृथ्वी पर पुनः नवीं बार अपने ऊपर छिड़के नव मंत्र है ।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवः[१] ॐ तानऊर्जेदधातनः[२] ॐ महेरणायचक्षसे[३] ॐ यो वः शिवतमोरसः[४] ॐ तस्यभाजयतेहनाः[५] ओं उशतीरिवमातरः[६] ओं तस्माऽअरंगमामवः[७] ओं यस्यक्षयाय जिन्वथ[८] ओं आपोजनयथचनः ॥[९]

विनियोग पृथ्वी पर जल छोड़ दे ।

ॐ द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः ॥

नीचे लिखे मंत्र को तीन बार पढ़कर अपने ऊपर जल छिड़के ।

ॐ द्रुपदादिवमुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेण वाज्यमापः शुन्धन्तुमैनसः ॥

विनियोग जल पृथ्वी पर छोड़ दे ।

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः भाववृतोदेवता पापपुरुषनिरसने विनियोगः ।

नीचे लिखे मन्त्र को तीन बार एक ही श्वास में पढ़कर बायें छिद्र से श्वास को हाथ के जल में छोड़कर बाईं तरफ पृथ्वी में पटक दे ।

ॐ ऋतञ्चसत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्यजायत ततो रात्र्य जायत ततः समुद्रोअर्णवः समुद्रादर्णवादधिसंवत्सरो अजायत अहोरात्राणिविदधद्-विश्वस्यमिषतोवशी सूर्याचन्द्रमसौधाता यथा पूर्वमकल्पयत दिवञ्च पृथ्वीञ्चान्तरिक्षमथोस्वः ।

आचमन का विनियोग—ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः ।

मंत्र आचमनका—ओं अन्तश्चरसिभूतेषु गुहाया विश्वतोमुखः । त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारः ओं आपोज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥

नोट :—सूर्य भगवान की तरफ मुख करके पुष्प चन्दन मिश्रित जल लेकर गायत्री मंत्र के द्वारा तीन बार अर्घ्य देवे । तत्पश्चात् चार बार विनियोग पढ़कर जल छोड़कर सूर्य भगवान का उपस्थान करे ।

विनियोग मंत्र जल पृथ्वी पर छोड़ दे ।

ॐ उद्वयमित्यस्य हिरण्यस्तूप ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्य्यो-पस्थाने विनियोगः ॥१॥

ॐ उदुत्यमितिप्रस्कण्व ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥२॥

ॐ चित्रमित्यस्यकौत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥३॥

ॐ तच्चक्षुरित्यक्षरातीतपुरउष्णिकछांदोदध्यङ्गाथर्वण ऋषिः सूर्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥४॥

उपस्थान का मन्त्र—ॐ उद्वयंतमसस्परिस्वः पश्यन्तउत्तरं देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

ॐ उदुत्यंजातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशेविश्वायसूर्यम् ॥२॥

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावा-पृथिवी अन्तरिक्ष ॐ सूर्यआत्मा जगतस्तंस्थुषश्च ॥३॥

ओं तच्चक्षुर्देवहितंपुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्पश्येमशरदः शतं जीवे मशरदः शतगूँ श्रृणुयामशरदः शतं प्रब्रवामशरदः शतमदीनाश्यामशरदः शतं भूयश्चशरदः शतात् ॥४॥

नोट :—उपस्थान के पश्चात् आसन पर बैठ कर फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर अंगन्यास करे।

ओं हृदयायनमः। ओं भूः सिरसे स्वाहा। ओं भुवः शिखायै वषट्। ओं स्वः कवचायहुम्। ओं भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यांवौषट्। ओं भूर्भुवः स्वः अस्त्रायफट्।

फिर गायत्री के तीनों विनियोगों को पढ़कर जल छोड़े।

ओं कारस्यब्रह्माऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवताशुक्लोवर्णः गायत्री-जपे विनियोगः॥१॥

ओं त्रिव्याहृतीनां प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छदांस्यग्नि-वाय्वादित्या देवता गायत्रीजपे विनियोगः ॥२॥

गायत्र्याविश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता गायत्रीजपे विनियोगः ॥३॥

नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर गायत्री देवी का हाथ जोड़ कर ध्यान करे।

ओं श्वेतवर्णा समुदिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलंकारैश्च भषिता ॥

नीचे लिखे विनियोग से गायत्री देवी का आवाहन करे और जल पृथ्वी में छोंड़ दे।

विनियोग—ओं तेजोऽसीतिदेवाऋषयः शुक्रंदैवतंगायत्री छन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

मंत्र आवाहन गायत्री—ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यामृतमसि धामनामसि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥

निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करके उपस्थान करे—

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पदपदसि न हि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदोम् मा प्रापत्॥

गायत्री मुद्रा जप करने के पूर्व :

सुमुखं सम्पुटञ्चैव विततं विस्तृतं तथा।
एकं द्वि त्रिमुखंञ्चैव चतुष्पञ्चमुखं तथा॥
षण्मुखं अधोमुखं चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा।
शकटं यमपाशञ्च ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्॥
प्रलम्बं मुष्टिकं मत्स्यः कूर्मो वराहकः
सिंहाक्रांतं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा॥

गायत्री मंत्र—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

गायत्री मुद्रा जप के पश्चात् :

सुरभिर्ज्ञान वैराग्यं योनिः शंखोऽथ पङ्कजम्।
लिङ्ग निर्वाण मुद्रां तु जपान्ते च प्रदर्शयेत्॥

मुद्रा के पश्चात् प्रदक्षिणा करें :

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥

फिर जल लेकर नीचे लिखे श्लोक से विसर्जन करे :

उत्तरे शिखरे जाता भूम्यां पर्वतमूर्द्धनी।
ब्राह्मणे भ्योऽननु ज्ञाता गच्छ देवि यथा सुखम्॥

इतिः सन्धा समाप्तम्

तर्पण प्रारंभ (देवर्षि पितृ तर्पण)

स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण कर पूर्वाभिमुख होकर तीन बार आचमन कर पवित्री पहन कर संकल्प करे।

संकल्प—ॐ अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्तैकदेशे कलियुगे कलिप्रथमचरणे पुण्यक्षेत्रे अमुकसंवत्सरे—अमुकमासे—अमुकपक्षे अमुकतिथौ—अमुकवासरे—अमुकगोत्रोऽमुकनामांहं देवर्षि पितृतर्पणंकरिष्ये।

चावल और त्रिकुशा लेके एक-एक अंजलि जल अर्घा से देवे।

ॐ ब्रह्मादयोदेवा आगच्छन्तु गृहणान्त्वेताञ्जलांजलीन् ॐ ब्रह्मा तृप्यताम् ॐ विष्णुस्तृ० ॐ रूद्रस्तृ० ॐ प्रजापतिस्तृ० ॐ देवास्तृ० ॐ छन्दांसिस्तृ० ॐ वेदास्तृ० ॐ ऋषयस्तृ० पुराणाचार्यास्तृ० ॐ गन्धर्वास्तृ० ॐ इतराचार्यास्तृ० ॐ संयत्सरास्तृ० ॐ देव्यस्तृ० ॐ अप्सरसस्तृ० ॐ देवानुगास्तृ० ॐ नागास्तृ० ॐ सागरास्तृ० ॐ पर्वतास्तृ० ॐ सवितरस्तृ० ॐ मनुष्यास्तृ० यक्षास्तृ० ॐ रक्षांसितृ० ॐ पिशाचास्तृ० ॐ सुपर्णास्तृ० ॐ भूतानितृ० ॐ पशवस्तृ० ॐ वनस्पतयस्तृ० ॐ औषधयस्तृ० ॐ भूतग्राम चतुर्विधस्तृ० ॥

इन ऋषियों को भी पूर्वमुख वैसे ही देववत् जल देवे।

मरिच्यादि दशऋषयः। आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेताञ्जलांजलीन् ॐ मरीचिस्तृ० ॐ अत्रिस्तृ० ॐ अंगिरसस्तृ० पुलस्तयस्तृ० ॐ पुलहस्तृ० क्रतुस्तृ० प्रचेतास्तृ० ॐ वसिष्ठस्तृ० ॐ भृगुस्तृ० ॐ नारदस्तृ० ॥

जनेऊ अंगोछा कण्ठी के समान करके उत्तर मुँह बैठकर दो अंजलि जल कुश और यव से देवे।

ॐ सनकादयः सप्तमुनयः आगच्छन्तु गृहणान्त्वेतांञ्जलाञ्जलीन ॐ सनकस्तृप्यताम् ॐ सनन्दनस्तृ० ॐ सनातनस्तृ० ॐ कपिलस्तृ० ॐ आसुरिस्तृ० ॐ बोढुस्तृ० । ॐ पञ्चशिखस्तृप्यन्ताम ॥

अपसव्य होकर दक्षिणामुख तीन-तीन अञ्जलि इनको भी दे।

दक्षिणाभिमुखो भूत्वा सतिलैर्द्विगुणकुशैः पितृतीर्थेन ॐ कव्यवाडवानलादयोदव्यपितरः आगच्छन्तु गृहणांत्वेतांजलाञ्जलाञ्जलीन् ॐ कव्यवाडवस्तृप्यतामिदंतिलोदकंतस्मैस्वधा ॥३॥ ॐ अनलस्तृप्यतामिदम्० ॥३॥ ॐ सोमस्तृप्यतामिदम् ॥३॥

तर्पण—ॐ यमस्तृप्यतामिदम० ॥३॥ ॐ अर्यमातृप्यतामिदम्० ॥३॥ ॐ अग्निष्वात्तास्तृप्यन्तामिदमजलंतेभ्यः स्वधा ॥३॥ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदम्० ॐ बर्हिषदस्तृप्यन्तामिदम्० ॥

बायें घुटने को जाँघ के नीचे दबाकर दक्षिण मुख बैठकर अपसव्य होकर तीन-तीन अंजलि तिल सहित जल देना १४ यम है जैसे नीचे लिखा है :—

ॐ यमादि चतुर्दशदेवा आगच्छन्तुगृह्णन्त्वेताञ्जलाञ्जलीन ॐ यमाय नमः ॐ धर्मराजायनमः ॐ मृत्यवेनमः ॐ अन्तकायनमः ॐ वैवस्तायनमः। ॐ कालायनमः ॐ सर्व भूतक्षयायनमः ॐ औदुम्बरायनम ॐ दध्नायनमः ॐ नीलायनमः ॐ परमेष्ठिनेनमः ॐ वृकोदरायनमः ॐ चित्रायनमः ॐ चित्रगुप्तायनमः ॥

अब पितरों को मोटक कुश सहित तीन-तीन बार अंजुली जल देवे।

नाभि मात्रेजलेस्थित्वा चिन्तयेदूर्ध्वमानसः॥ ॐ अमुकगोत्रास्मत्पितरः आगच्छन्तुगृहणन्त्वेतांजलांजलीन्। इत्यावाहनम् ॥ ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत्पिता अमुकशर्मारुद्रस्वरूपस्तृप्य तामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ ॥१॥ ॐ अमुकगोत्रोऽस्मत्पितामहो ऽमुक शर्मारुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ ॥२॥ ॐ अमुकगोत्रोस्मत्प्र पितामहोऽमुकशर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्य तामिदंजलंतस्मैस्वधा ३ ॥३॥

ततः मातृपक्षे—अमुकगोत्रास्मन्माता अमुकदेवी गायत्रीस्वरूपातस्यैस्वधा ॥१॥ अमुकगोत्रास्मतपितामहीअमुकीदेवी सावित्री स्वरूपातस्यैस्वधा ॥२॥ अमुक गोत्रामस्त प्रपितामही अमुकदेवी सरस्वती स्वरूपा तस्यैस्वधा ॥३॥ इसी प्रकार माता कुल के लोगों को जल दे। ततोमातामहादिभ्यः तेनैव प्रकारेण जलं दद्यात् नात्र विशेषः। ॐ अमुकगोत्रोऽस्मन्मातामहोऽमुकशर्माग्नि स्वरूपः सपत्निकस्तृप्यतामिदंजलं तस्मैस्वधा ॐ अमुकगोत्रोऽस्मतप्रमातामहोऽअमुको

देवो विष्णु स्वरूपः सपत्नीकस्तृप्यतामिदं जलंतस्मैस्वधा एवं क्रमेणान्येभ्योऽपिदद्यात् अत्रमाता जीवितश्चेत्तदा स्वपित्रादिभ्यः सपत्नीकशेन्द्रेणदद्यात् मातादीनां च तथागतिः सिद्धामातादीनांनात्र स्वपत्निकाः।

नोट—और भी इसी क्रम से चाचा भाई बूआ मौसी बहिन ससुर गुरु सास आदि पितरों को तर्पण करके फिर :—

ॐ आब्रह्मस्तम्बपर्य्यन्तं देवर्षि पितृभानवाः। तृप्यन्तु पितरस्सर्वेमातृ मातामहादयः ॥१॥ ये बान्धवाऽबाधवावयेऽन्यजन्मनि बान्धवाः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तुमद्दत्तेनाम्बुना सदा ॥२॥ येचास्माकंकुले जाता अपुत्रा गोत्रिणोमृताः। 'वस्त्र नीचोड़े' तेपिबन्तुमयादत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम् ॥३॥ येषां पिता नच भ्राता पुत्रानान्यस्त्रगोत्रिणः॥ ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया सृष्टैः कुशोदकैः ॥४॥

सव्य होकर आचमन कर नीचे लिखे श्लोक से भीष्मपितामह को जलाँ-जलि देवे।

वैय्याघ्रपदगोत्राय सांकृत्य प्रवरायच। अपुत्राय ददाम्येतत् जलम्भीष्मा-यवर्मणे॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र से सूर्य नारायण को अर्घ दे।

एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

॥ इति देवर्षिपितृतर्पणं समाप्तम्॥

॥ अथ श्री गंगालहरी प्रारभ्यते॥

१—समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायाः किमपितन
महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथमूर्तं सुमनसां
सुधा सौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु॥
२—दरिद्राणां दैन्यं दुरितमथ दुर्वासनहृदां
द्रुतं दूरीकुर्वन् सकृदुपगतो दृष्टिसरणिम्।

अपिद्रागाविद्याद्रुमदलनदीक्षागुरुरिह
प्रवाहस्ते वारां श्रियमयमपारां दिशतु नः ।
३—स्मृतिं यातापुं सामकृतसुकृतानामपि च या
हरत्यन्तस्तन्द्रां तिमिरमिव चण्डांशुसरणिः ।
इयं सा ते मूर्तिः सकलसुरसंसेव्यसलिला
ममान्तः सन्तापं त्रिविधमपि पापञ्च हरताम् ॥
४—तवालम्बादम्ब स्फुरदलघुगर्वेण सहसा
मया सर्वेऽवज्ञासरणिमथ नीताः सुरगणाः ।
इदानीमौदास्यं भजसि यदि भागीरथि तदा
निराधारो हा रोदिमि कथय केषामिहपुरः ॥
५—अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा
विलोलद्वानीरं तव जननि तीरं श्रितवताम् ।
सुधातः स्वादीयः सलिलमिदमातृप्तिपिबतां
जनानामानन्दः परिहसति निर्वाणपदवीम् ॥
६—उदञ्चन्मार्तण्डस्फुटकपटहेरम्बजननी-
कटाक्षव्याक्षेपक्षणजनितसंक्षोभनिवहाः ।
भवन्तु त्वङ्गन्तो हरशिरसि गङ्गातनुभुव-
स्तरङ्गा प्रोत्तुङ्गा दुरितभयभङ्गाय भवताम् ॥
७—प्रभाते स्नातीनां नृपतिरमणीनां कुचतटी-
गतो यावन्मातर्मिलति तवतोयैर्मृगमदः ।
मृगास्तावद्वैमानिकशतसहस्रैः परिवृताः
विशन्ति स्वच्छन्दं विमलवपुषो नन्दनवनम् ॥
८—स्मृतं सद्यःस्वान्तं विरचयति शान्तं सकृदपि
प्रगीतं यत्पापं झटिति भवतापञ्च हरति ।
इदं तद्गङ्गेति श्रवणरमणीयं खलु पदं
मम प्राणप्रान्ते वदनकमलान्तर्विलसतु ॥

९—यदन्तः खेलन्तो बहुलतरसन्तोषभरिताः
न काका नाका धीश्वरनगरसाकाङ्क्षमनसः।
निवासाल्लोकानां जनिमरणशोकापहरणं
तदेतत्ते तीरं श्रमशमन धीरं भवतु नः॥

१०—न यत साक्षाद्वेदैरपि गलितभेदैरवसितं
न यस्मिन् जीवानाँ प्रसरति मनोवागवसरः।
निराकारं नित्यं निजमहिमनिर्वासित तमो
विशुद्धं यत्तत्वं सुरतटिनि तत्वं न विषयः॥

११—महादानैर्ध्यानैर्बहुविधवितानैरपि च यत्
न लभ्यं घोराभिः सुविमलतपोराजिभिरपि।
अचिन्त्यं तद्विष्णोः पदमखिलसाधारणतया
ददाना केनासि त्वमिह तुलनीया कथयनः॥

१२—नृणामीक्षामात्रादपि परिहरन्त्या भवभयं
शिवायास्ते मूर्तेः क इह बहुमानं निगदतु।
अमर्पम्लानायाः परममनुरोधं गिरिभुवो
विहाय श्री कण्ठः शिरसि नियतं धारयतियाम्॥

१३- विनिन्द्यान्युन्मत्तैरपि च परिहार्याणि पतितै
रवाच्यानि व्रात्यैः सपुलकमपास्यानि पिशुनैः।
हरन्ती लोकानामनवरत मेनांसि कियतां
कदाप्यश्रान्ता त्वं जगति पुनरेका विजयसे॥

१४—स्खलन्ती स्वर्लोकादवनितलशोकापहृतये
जटाजूटग्रन्थौ यदसि विनिबद्धा पुरभिदा।
अये निर्लोभानामपि मनसि लोभञ्जनयतां
गुणानामेवायं तव जननि दोषः परिणतः॥

१५—जडानन्धान्पङ्गून्प्रकृतिवधिरानुक्तिविकलान
ग्रहग्रस्तानस्ताखिलदुरितनिस्तारसरणीन ।

निलिम्पैर्निर्मुक्तानामपि च निरयान्तर्निपततो
नरानम्ब त्रातुं त्वमिह परमं भेषजमसि ॥
१६—स्वभावस्वच्छानां सहजशिशिराणामयमपा
मपारस्तेमातर्जगति महिमा कोऽपि जयति ।
मुदा यं गायन्ति द्युतलमनवद्यद्युतिभृतः
समासाद्याद्यापि स्फुटपुलकसान्द्राः सगरजाः ॥
१७—कृतक्षुद्रैनस्कानथ झटिति सन्तप्तमनसः
समुद्धर्तुं सन्ति त्रिभुवनतले तीर्थनिवहाः ।
अपि प्रायश्चित्तप्रसरणपथातीत चरितान्
नरानूरीकर्तुं जगति खलु जागर्ति भवती ॥
१८—निधानं धर्माणां किमपि च विधानं नवमुदां
प्रधानं तीर्थानाममलपरिधानं त्रिजगतः ।
समाधानं बुद्धेरथ खलु तिरोधानमधियां
श्रियामाधानं नः परिहरतु तापंतव वपुः ॥
१९—पुरोधावं धावं द्रविणमदिराघूर्णित दृशां
महीपानां नानातरुणतरखेदस्य नियतम् ।
ममैवायं मन्तुः स्वहितशतहन्तुर्जडधियो
वियोगस्ते मातर्यदिह करुणातः क्षणमपि ॥
२०—मरुल्लीलालोलल्लहरिलुलिताम्भोजपटल-
स्खलत्पांशुव्रातच्छुरणविलसत्कौंकुमरुचिः ।
सुरस्त्रीवक्षोजक्षरदगरुजम्बालजटिलं
जलं ते जंबलं मम जननजालं जरयतु ॥
२१—समुत्पत्तिः पद्मारमणपदपद्मामलनखा-
न्निवासः कन्दर्पप्रतिभटजटाजूटभवने
अथायं व्यासङ्गो हतपतितनिस्तारणविधौ
न कस्मादुत्कर्षस्तव जननि जागर्ति जगति ॥

२२—नगेभ्यो यान्तीनां कथय तटनीनां कतमया
पुराणां संहर्तुः सुरधुनि कपर्दोधिरुरुहे
कया वा श्रीभर्तुः पदकमलमक्षालि सलिलै-
स्तुलालेशो यस्यां तव जननि दीयेत कविभिः ॥

२३—विधत्तां निःशंकं निरवधिसमाधिं विधिरहो
सुखं शेषे शेतां हरिरवितरतं नृत्यतु हरः।
कृतं प्रायश्चित्तैरलमथ तपोदानयजनैः
सावित्रीकामानां यदि जगति जागर्ति भवती ॥

२४—अनाथः स्नेहार्द्रा विगलितगतिः पुण्यगतिदां
पतन्विश्वोद्धर्त्रीं गदविदलितः सिद्धभिषजम्।
सुधासिन्धुं तृष्णाकुलितहृदयो मातरमयं
शिशुः संप्राप्तस्त्वामहमिह विदध्याः समुचितम् ॥

२५—विलीनो वै वैवस्वत नगरकोलाहल भरो
गतादूरादूरं क्वचिदपि परेतान्मृगयितुम।
विमानानां व्रातो विदलयति वीथीर्दिविषदां
कथा ते कल्याणी यदवधिमहीमण्डल मगात् ॥

२६—स्फुरत्कामक्रोधप्रबलरससञ्जातजटिल-ज्वरज्वालाजा-
लज्वलितवपुषां नः प्रतिदिनम्।
हरन्तां संतापं कमपि मरुदुल्लासिलहरि-
च्छटाचञ्चत्पाथः कणसरणयो दिव्यसरितः ॥

२७—इदं हि ब्रह्मांडं सकलभुवनाभोग भवनं
तरंगैर्यस्यान्तर्लुठति परितस्तिन्दुकमिव।
स एष श्रीकण्ठप्रविततजटाजूटजटिलो
जलानां संघातस्तव जननि पापं हरतु नः ॥

२८—त्रपन्ते तीर्थानि त्वरितमिह यस्योद्धृतिविधौ
करं कर्णे कुर्वन्त्यति किल कपलिप्रभृतयः।

इमं त्वं मामम्ब त्वमियमनुकम्पार्द्रहृदया
पुनाना सर्वेषामघमथनदर्पं दलयसि ॥
२९—श्वपाकानां व्रातैरमितविचिकित्साविचलितैः
विमुक्तानामेकं किल सदनमेनः परिषदाम् ।
अहो मामुद्धर्तुं जननि घटयन्त्याः परिकरं
तव श्लाघां कर्तुं कथमिव समर्थो नरपशुः ॥
३०—न कोऽप्येतावन्तं खलु समयमारभ्य मिलितो
यदुद्धारादाराद्भवति जगतो विस्मयभरः ।
इतीमामीहां ते मनसि चिरकालं स्थितवती-
मयं संप्राप्तोऽहं सफलयितुमम्ब प्रणयतः ॥
३१—श्ववृत्तिव्यासङ्गो नियतमथ मिथ्याप्रलपनं
कुतर्केष्वभ्यासः सततपरपैशुन्यमननम् ।
अपि श्रावं श्रावं मम तु पुनरेवं विधगुणा-
नृते त्वत्को नाम क्षणमपि निरीक्षेत वदनम् ॥
३२—विशालाभ्यामाभ्यां किमिह नयनाभ्यां खलु फलं
न याभ्यामालीढा परमरमणीया तव तनुः ।
अयं हि न्यक्कारो जननि मनुजस्य श्रवणयो-
र्ययोर्नान्तर्यातस्तव लहरिलीलाकलकलः ॥
३३—विमानैः स्वच्छन्दं सुरपुरमयन्ते सुकृतिनः
पतन्ति द्राक्पापा जननि नरकान्तः परवशाः ।
विभागोऽयं तस्मिन्नशुभचयमूर्ते जनपदे
न यत्र त्वं लीलादलित मनुजाशेषकलुषा ॥
३४—अपि घ्नन्तो विप्रानवितरमुशन्तो गुरुसतीः
पिबन्तो मैरेयं पुनरपि हरन्तश्च कनकम्
विहाय त्वय्यन्ते तनुमतनुदानाध्वरजुषा-
मुपर्यम्बक्रीडन्त्यखिलसुरसम्भावितपदाः ॥

३५—अलभ्यं सौरभ्यं हरति सततं यः सुमनसां
क्षणादेव प्राणानपि विरहशस्त्रक्षतहृदाम् ।
त्वदीयानां लीलाचलितलहरीणां व्यतिकरात्
पुनीते सोऽपि द्रागहह पवमानस्त्रिभुवनम् ।।

३६—कियन्तः सन्त्येके नियतमिह लोकार्थघटकाः
परे पूतात्मानः कति च परलोक प्रणयिनः ।
सुखं शेते मातस्तव खलु कृपातः पुनरयं
जगन्नाथः शश्वत्त्वयि निहितलोकद्वयभरः ।।

३७—भवत्याहि व्रात्याधमपतितपाखण्डपरिषत्-
परित्राणस्नेहः श्लथयितुमशक्यः खलु यथा ।
ममाप्येवं प्रेमो दुरितनिवहेष्वम्ब जगति
स्वाभावोऽयं सर्वैरपिलखुयतो दुष्परिहरः ।।

३८—प्रदोषान्तर्नृत्यत्पुरमथनलीलोद्धृतजटा-
तटाभोगप्रेङ्खल्लहरिभुजसन्तानविधुतिः ।
बिलक्रोडक्रीडज्जलडमरुडङ्कारसुभग-
स्तिरोधत्तां तापं त्रिदशतटिनीताण्डवविधिः ।।

३९—सदैव त्वय्येवार्पित कुशलचिन्ताभरमिमं
यदि त्वं मामम्ब त्यजसि समयेऽस्मिन्सुविषमे ।
तदाविश्वासोऽयं त्रिभुवनतलादस्तमयते
निराधाराचेयं भवति खलु निर्व्याज करुणा ।।

४०—कपर्दादुल्लस्य प्रणयमिलदर्द्धाङ्ग युवतेः
पुरारेः प्रेंखन्त्यो मृदुलतरसीमन्तसरणौ ।
भवान्या सापन्त्यस्फुरितनयनं कोमलरुचा
करेणा क्षिप्तास्ते जननि विजयन्तां लहरयः ।।

४१—प्रपद्यन्ते लोकाः कति न भवतीमत्र भवती-
मुपाधिस्तत्रायं स्फुरति यदभीष्टं वितरसि ।

शपे तुभ्यं मातर्मम तु पुनरात्मा सुरधुनि
स्वभावादेव त्वय्यमितमनुरागं विधृतवान् ॥

४२—ललाटे या लोकैरिह खलु सलीलं तिलकिता
तमो हन्तुं धत्ते तरुणतरमार्तण्डतुलनाम् ।
विलुम्पन्ती सद्यो विधिलिखितदुर्वर्णसरणिम्
त्वदीया सा मृत्स्ना मम हरतु कृत्स्नामपि शचम ॥

४३—नरान्मूढांस्तत्तज्जनपदसमासक्तमनसो
हसन्तः सोल्लासं विकचकुसुमव्रातमिषतः ।
पुनानाः सौरभ्यैः सततमलिनो नित्यमलिनान्
सखायो नः सन्तु त्रिदशतटिनीतीरतरवः ॥

४४—यजन्त्येके देवान्कठिनतरसेवांस्तदपरे
वितानव्यासक्ता यमनियमरक्ताः कतिपये।
अहं तुत्वन्नामस्मरणकृतकामस्त्रिपथगे
जगज्जालं जाने जननि तृणजालेन सदृशम् ॥

४५—अविश्रान्तं जन्मावधि सुकृतक मार्जनकृतां
सतां श्रेयः कर्तुं कति न कृतिनः सन्ति विबुधाः ।
निरस्तालम्बानामकृतसुकृतानां तु भवतीं
विनाऽमुष्मिल्लोके न परमवलोके हितकरम् ॥

४६—पयः पीत्वा मातस्तव सपदि यातः सहचरै-
र्विमूढैः संरन्तुं क्वचिदपि न विश्रान्तिमगमम् ।
इदानीमुत्संगे मृदुपवनसंचारशिशिरे
चिरादुन्निद्रं मां सदयहृदये शायय चिरम् ॥

४७—बधान द्रागेव द्रढिमरमणीयं परिकरं
किरीटे बालेन्दुं नियमय पुनः पन्नगगणैः
न कुर्यास्त्व हेलामितरजनसाधारणधिया
जगन्नाथस्यायं सुरधुनि समुद्धारसमयः ॥

४८—शरच्चन्द्रश्वेतां शशिशकलश्वेतालमुकुटां ।
करैः कुम्भाम्भोजे वरभयनिरासौ च दधतीम् ।
सुधाधारा काराभरणवसनां शुभ्रमकर-
स्थितां त्वां ये ध्यायन्त्युदयति न तेषां परिभवः ॥

४९—दरस्मितसमुल्लसद्वदनकान्तिपूरा मृतै-
र्भवज्वलनभर्जितानिशमूर्जयन्ती नरान् ।
चिदेकमय चन्द्रिकाचयचमत्कृतिं तन्वती
तनोतु मम शन्तनोः सपदि शन्तनोरंगना ॥

५०—मन्त्रैर्मीलितमौषधैर्मुकुलितं
त्रस्तं सुराणां गणैः ।
स्रस्तं सान्द्रसुधारसैर्विगलितं
गारुत्मतैर्ग्रावभिः ॥
वीचिक्षालितकालियाहितपदे,
स्वर्लोककल्लोलिनी ।
त्वं तापं शमयाधुना मम भव—
व्यालावलीढात्मनः ॥

५१—द्यूते नागेन्द्रकृत्तिं प्रमथफणिगण—
श्रेणिनन्दीन्दुमुख्यम् ।
सर्वस्वं हारयित्वा स्वमथपुर भिदि—
द्राक्पणीकर्तुकामे ॥
साकूतं हैमवत्या मृदुलहसित या
वीक्षितायास्त्वयाम्ब ।
व्यालोलोल्लासिवल्गल्लहरिनटघटी—
ताण्डवं नः पुनातु ॥

५२—विभूषितानङ्गरिपूत्तमाङ्गा ।
सद्यः कृतानेकजनार्तिभङ्गा ।

मनोहरोत्तुङ्गचलत्तरङ्गा
गङ्गाममाङ्गान्यमली करोतु ॥

५३—इमं पीयूषलहरी जगन्नाथेन निर्मिताम् ।
यः पठेतस्य सर्वत्र ज़ायन्ते सर्वसम्पदः ॥

। श्री गंगालहरी समाप्तम् ।

॥ श्री प्रयागाष्टकम् ॥

श्रुतिः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणम्,
पुराणमप्यत्र परं प्रमाणम् ।
यत्रास्ति गंगा यमुना प्रमाणम्,
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ १ ॥
न यत्र योगाचरण प्रतीक्षा,
न यत्र यज्ञेष्टिविशिष्टदीक्षा ।
न तारकज्ञानगुरोर पेक्षा,
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ २ ॥
चिरं निवास न समीक्षते यो,
ह्युदारचितः प्रददाति च क्रमात ।
यः कल्पितार्थांश्च ददातिः पुंसः,
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ ३ ॥
यत्राप्लुतानां न यमो नियंता,
यत्रास्थितानां सुगति प्रदाता ।
यत्राश्रितानाम मृत प्रदाता,
स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ ४ ॥
पुर्यः सप्तप्रसिद्धाः
प्रतिवचनकरीस्तीर्थ राजस्य नार्यो,

नैकट्यान्मुक्तिदाने

प्रभवति सुगुणा काश्यते ब्रह्म पस्याम् ।

सेयं राज्ञी प्रधाना

प्रियवचनकरी मुक्ति दानेन युक्ता,

येन ब्रह्मांड मध्ये

स जयति सुतरां तीर्थराजः प्रयागः ॥५॥

तीर्थावली यस्यतु कंठभागे,

दानावली वल्गति पादमूले ।

व्रतावली दक्षिणपादमूले,

स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ ६ ॥

आज्ञापि यज्ञाः प्रभवोपि यज्ञाः

सप्तर्षिसिद्धाः सुकृतानभिज्ञाः ।

विज्ञापयंतः सततं हि काले,

स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ ७ ॥

सितासिते यत्र तरँगचामरे,

नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके ।

लीलातपत्रं वटएव साक्षात्

स तीर्थराजो जयति प्रयागः ॥ ८ ॥

॥ इति श्री प्रयागाष्टकम् समाप्तः ॥

॥ कविता श्री गंगाजी की ॥

१—नाम लिये कितने तर जात, प्रनाम किये सुरलोक सिधारे ।
तीर गये सो तरे कितने, कितने तरिजात तरंग निहारैं ॥१॥
तरंगनि तेरो सुभाव यही, तुहीं विष्णु पदी जमलोक उजारे ।
भागीरथी हम दोष भरे पै भरोस यही कि परोस तिहारे ॥२॥

२—छूटी शंभू शीश ते प्रचंड तेज धारा धसी ।

काटैं अघ ओघन के पातक हितै हितै ॥
कहैं प्राणनाथ गंग तेरी ही तरंग देखि ।
गये स्वर्ग लोक सब पातक वितैवितै ॥
सुरशरि महरानी महिमा बखानै कौन ।
वेद और पुरान जस गावत नितैनितै ॥
जम आगे पाप रोवें पाप आगे जम रोवें ।
चित्रगुप्त आप रोवें कागज चितैंचितैं ॥

॥ गणपतिस्मरण स्तुति प्रारम्भ ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥१॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन । द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि ॥ २ ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । संग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ३ ॥ शुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायत् सर्व विघ्नोपशान्तये ॥४॥ अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ५ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ ६ ॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ । अविघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥७॥ वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम् ॥८॥ गणनाथं नमस्कृत्य नमस्कृत पितामहम् ॥ विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ ९ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कत्य दिननाथं निशाकरम् । धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं वृहस्पतिम् ॥ १० ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्य पुत्रं शनैश्चरं । राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ ११ ॥ शक्रादिदेवताः सर्वानृषींश्चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं पर्वतं तथा ॥ १२ ॥ वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ॥ अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम ॥ १३ ॥ भरद्वाजं च माण्डव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम् ॥ अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेदशास्त्रविचक्षणाः । तान्सर्वान् प्रणिपत्याहं

शुभकर्मसमारभे ॥ १४ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ॥ येषा-
मिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ १५ ॥ अग्रतः श्रीनृसिंहश्च पृष्ठतो
देवकीसुतः ॥ रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १६ ॥

॥ अथ वेणी-स्तुतिः ॥ साष्टाङ्ग प्रणम्य ॥

नमस्ते देवदेवाय शितिकण्ठाय वेधसे । रुद्राय चापहस्ताय चक्रिणे
दंडिने नमः ॥ १ ॥ सरस्वती च गायत्री वेद माता गरीयसी । सन्निधात्री-
भवत्वत्र तीर्थे पापप्रणाशिनी ॥ २ ॥ नमो गङ्गे महा गङ्गे नमो देवस्य
वल्लभे । महिता त्वां महादेवि भागीरथि नमोस्तुते ॥ ३ ॥ विष्णुपादोद्भवे
देवि माधवप्रिय देवते । दर्शनं तव पापं मे दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ ४ ॥
लोकत्रयेपि तीर्थानि यानिसंचित देवताः । स्वत्सरूपा त्वमेवासि पाहिमाम्
पापसंकटात् ॥ ५ ॥ विष्णुपाद प्रसूतासि वैष्णवी विष्णुपूजिता । पाहि
नस्त्वेनसोह्यस्मादाजन्ममरणांतिकात् ॥ ६ ॥ तिस्त्रः कोट्योर्धकोटिश्च
तीर्थानां वायुरब्रवीत् । दिविभुव्यंतरिक्षे च तानि ते सन्ति जान्हवि ॥ ७ ॥
गंगेदेवि नमस्तुभ्यं शिव चूड़ा विराजिते । शरणत्राणसम्पन्ने त्राहिमां
शरणागतम् ॥ ८ ॥ इति ।

अथ यमुना-स्तुति :—आदित्यदुहितर्देवि यमजेष्ठे यशस्विनि ।
त्रैलोक्यवंदिते देवि पापं मे यमुने हर ॥१॥ इन्द्रनील जलाकारभानुकन्ये
मलापहे । सर्वदेवस्तुते मातर्यमुने त्वां नाभाम्यहम् ॥२॥ सर्व तीर्थ
कृतावासे सर्वकामवरप्रेद । सर्वपाप कृतध्वंसे नमस्ते विष्णुपूजिते ॥३॥
संज्ञागर्भे समद्भूते संज्ञोच्चारणपुण्यदे । विष्णुप्रियतमे देवि यमुनायै
नमो नमः ॥ इति ॥

अथ सरस्वती स्तुति :—प्रजापतिमुखोद्भूते प्रणतार्तिप्रभंजिनी । प्रयागे
मिलते देवि सरस्वति नमोस्तुते ॥१॥ पद्मरागदलाभास पद्मगर्भारुणे-
क्षिणि । पद्ममालाविताने या पद्मायैतेनमोनमः ॥२॥ वीणावादर-
साभिज्ञे वीणया समलंकृते । जितवीणाखे मातः पाहि मां शरणागतम् ॥३॥

सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरीयसी। सन्निधात्री भवत्वत्र तीर्थे पापप्रणाशिनी ॥ इति ॥

अथ त्रिवेणी माधव—स्तुति :—त्रिवर्गोत्र्यम्बिके देवि त्रिविधाघविनाशिनि। त्रिमार्गे त्रिगुणे त्राहि त्रिवेणि शरणागतम् ॥१॥ संसारानलसंभूतं कामक्रोधादिवेष्टितम् । पतितं पावयस्त्र त्वं शीतलं कुरू वेणिके ॥२॥ तीर्थराजप्रयागेऽस्मिन् प्रत्यक्षाऽसि जगद्धिते। नानाजन्मकृताभ्यासात्पातका दुद्धरस्वमाम् ॥३॥ इति ॥

अथ अक्षयवट स्तुति :—जठरेखिलमादायत्वयिस्वपितिमाधवः। कृत्वामुखाम्बुजे पादं नमोक्षय्यवटायच। त्वन्मूले वसते ब्रह्मा तप मध्ये जनार्दन :। त्वदग्रे वसते शूला ताद्वशंत्वांनमाम्यहम् । सौवर्णानि दलान्यस्य सप्तपातालगा जटाः। तावन्मण्डलविस्तारो वटराजाय ते नमः ॥२॥ इति ॥

अथ माधव स्तुति :—नीलजीमूतसङ्काशं पीतकौशेयवाससम। प्रयागनिल यस्वामिन् वेणीमाधव ते नमः ॥१॥ त्वत् पादं प्रणतोनित्यं कमल श्रीमुखाद्वशा। उद्धरस्वमहोदार वेणीमाधव ते नमः ॥२॥ शङ्ख चक्र गदाधारविभूषित चतुर्भुज। चतुर्वर्गफलाधार वेणीमाधव ते नमः। वेणीमाधव सर्वज्ञ भक्तेप्सितफलप्रद। सफलां कुरूमे यात्रां वेणीमाधव ते नमः ॥ इति ॥

अथ भैरव स्तुति—प्रणवेन जलं स्पृष्ट्वा भैरवादींश्च प्रार्थयेत्। तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पांतदहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्यमनु ज्ञांदातुर्महसि ॥ इति स्तुतिः ॥

गंगा भेट

भेंट नारियल से—इदम् फलम् मयादेव स्थापितं पुरस्तव। येनमे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि गंगा यमुनयोर्मध्ये यत्र गुप्ता सरस्वती। श्री त्रिवेणी भेंट फलं द्रव्यं नमोस्तुते।

॥ पंचार्घ्य प्रारम्भः ॥

गंगा जी को अर्घ्य देने का मंत्र—**ब्रह्म कमण्डलोद्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि। त्रैलोक्यवंदिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते। गंङ्गायैनमः।**
यमुना जी को अर्घ्य देने का मन्त्र **तपनस्पसुते देवि यमज्येष्ठे यशस्विनि त्र्यैलोक्यवंदिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ यमुनायैनमः ॥**

सरस्वती जी को अर्घ्य देने का मन्त्र—**विरञ्चितनये देवि ब्रह्मरंध्रनिवासिनि। शुद्धानाम शुद्धिते देवि गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते। सरस्वत्यैनमः ॥**

अक्षयवट जी को अर्घ्य देने का मन्त्र—**एकार्णवे महाकल्पे सुषुप्तो माधवः प्रभुः ॥ पर्यंकवटदेवत्वं गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ अक्षयवटायनमः ॥**

वेणीमाधव जी को अर्घ्य देने का मन्त्र—**वेणीमाधव सर्वज्ञ भक्तेप्सित फलप्रद सफलां कुरु में यात्रां गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥ वेणीमाधवाय नमः ॥**

(इसके बाद) ततपश्चात स्नान करके आचमन कर कुश सहित ब्रह्मदंड (कुश का होता है) ग्रहण कर ब्राह्मण कि स्तुति करें।

मंत्र—समस्त संपत्समावप्ति हेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः ॥ अपार संसार समुद्र सेतवः पुनंतुमां ब्राह्मण पाद पांसवः ॥ अपाद्धनध्वांतसहस्त्र मानवः समीहितार्थार्पण कामधेनवः ॥ समस्त तीर्थांबुपवित्र मूर्तयो रक्षंतुमां ब्राह्मणपाद पांसवः ॥विप्रौ घदर्शनात् क्षिप्रं क्षीयंतेपापराशयः ॥ वंदनान्मङ्गलावाप्तिरर्चनादच्युतं पदं ॥ आधि व्याधिहरं नृणांमृत्युदारिद्र्यनाशनं। श्री पुष्टिकीर्तिदं वंदे विप्र श्री पाद पंकजं ॥ इति ॥

यह चारो श्लोक पढ़कर तीन बार प्रदिक्षणा करके ब्रह्मदंड पुरोहित (पंडा) के हाथ में देकर महासंकल्प करे ॥

॥ इति पंचार्घ्य ॥

महासंकल्प प्रारम्भ

(ब्राह्मण स्वयं कहे) प्रारम्भ—ओऽम स्वस्ति श्री मुकुन्द सच्चिदानंदस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य मायाशक्ति विजृम्भिताविद्या योगात्कालकर्म्मस्व-भावाविर्भूतमहत्तत्वोदिताहङ्कारतृतीयोदभूतवेदादिपञ्चकेन्द्रियदेवतानिर्मि-तेण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवत: श्री नारायण-स्यनाभिकमलोदभूतसर्वलोक पितामहस्य ब्रह्मण: सृष्टिं—कुर्वतस्त-दुद्धरणाय प्रजापति प्रार्थितस्य समस्त जगदुत्पत्ति स्थितिलयकारणस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अच्युतानंतवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिनारायणस्य अचिन्त्या परिमितशक्तयाध्येयमानस्य महाजन्मौघमध्ये परिभ्रममाणानाम नेककोटिब्रह्मांडानामेकतमेऽव्यक्त-महदहंका रपृथिव्यप्ते जो वाय्वाकाशाद्यावरणै रावृते अस्मिन्महति ब्रह्मांडखण्डयोर्मध्ये आधार शक्ति—श्री मदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजते कूर्मानन्त वासुकितक्षककुलिककर्कोटकपद्म महापद्म शंखाद्यष्टमहा-नागै: संध्रियमाणे ऐरावतपुण्डरीकवामनकुमुदां जनपुष्पदंतसार्वभौम सुप्रतीकाष्ट दिग्गजोपरि प्रतिष्ठितस्य अतलवितलसुतलतलातलरसातल महातलपाताललोकस्योपरि भागे भूर्लोकभुवर्लोकस्वर्लोकमहर्लोक जनलोक तपोलोक सत्यलोकादि सप्तलोकस्याधोभागे चक्रवालशैलमहावलयन-गमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्रफणानां मणि-मण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डोत्तंभिते अमरावती भोगावती सिद्धवती-गन्धर्ववती कांच्यवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरी प्रतिष्ठिते इन्द्रा-ग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायु कुबेरे शानेतिदिक्पाल प्रतिष्ठिते लोकालोका-चल वलयिते लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिक्षीरोदकेति सप्तार्णवपरिवृते जम्बुलक्ष शाल्मलिकुशक्रौञ्चशाकपुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्यता म्रगभस्तिनाग सौम्यगन्धर्व चारणभारतेतिन वखण्डमण्डिते सुवर्ण-गिरिकर्णिकोपेतमहासरोरुहाकार पञ्चाशतकोटियोजन विस्तीर्ण भूमण्डले अयोध्यामथुरामायाकाशीकांच्य वन्तिकाद्वारावतीति सप्तपुरी प्रतिष्ठते

शालग्राम शम्भलनन्दि ग्रमेति ग्रामत्रयेविराजिते चम्पकारण्यबदरिकारण्यदण्डकारण्यार्बुदारण्यधर्मारिण्यपद्मारण्य गृह्यारण्य जम्बुकारण्यादीनां मध्ये नैमिषारण्ये सुमेरुनिषदरज तकूटशुभ्रकूट श्रीकूटहिमाचलानां हरिवर्षकिंपुरुवर्षयोश्च दक्षिणे नव सहस्त्रयोजन विस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचलसह्याचल विंध्याचलानामुत्तरेण स्वर्णप्रस्थचण्डप्रस्थ शुक्तिकावर्तकरमणमहारमणक पाञ्चजन्य सिंहललङ्केतिनवखण्डो पद्वीपमण्डितेदक्षिणावस्थितरेणुकाद्वयसूकर काशीकाञ्ची कालिकालवटेश्वर कालञ्जरमहाकालेति नवो खरयुते द्वादशज्योतिर्लिङ्गयुते गङ्गायमुना सरस्वती नर्मदातापीपयोष्णोकावेरीत्यादि पुण्यनदी विलसिते हिमवन्मेरुगोवर्द्धन क्रौञ्च श्री शैलक चित्रकूट हेमकूट महेन्द्र मलयसह्य विंध्यपारियात्राद्यनेकपर्वत समन्विते मतङ्ग माल्यवत्किष्किन्ध ऋष्यशृङ्गेति पञ्चमहान गरयुते कोकन्तहिरण्य शृङ्गकुब्जा र्बुदमणि कर्णिवटशालग्रामसूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहार्गल पोतस्वामि प्रभासबदरीति चतुर्दश गुह्यविलसिते जम्बूद्वीपे कर्मभूमौ स्वाम्यवर्ति स्वर्गस्थितामराद्या सितावतारे गङ्गादि सरिद्भिः पाविते भारते वर्षे निखिल जनपा वनपरम भागवतोत्तमशौनकादिनिवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तिर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे जनपदेकुरुक्षेत्रादि मध्यरेखायाः कस्मिंश्चित दिग्भागे श्रीविष्णु प्रजापतिक्षेत्र प्रयागे षटकूल मध्ये अन्तर्वेद्यां भागीरथ्याः पश्चिमेतीरे कालिन्द्या उत्तरेत्तीरे वटस्य पूर्वदिग्भागे श्रीमन्नारायण नाभिकमलोद्भूतसकलजगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे पञ्चाशदधिकेवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नोद्वितीये यामे मुहुर्ते रन्थतरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे सद्युगादिचतुर्युगानां मध्ये अष्टाविंशतिमे कलियुगे तत्प्रथमविभागे संवत्सराणां व्यतिक्रांतानां धनुः साहस्यां सप्तत्यधिकायां तदुपरिवर्तमाने मन्नृपविक्रमार्के समयातीत संवदे कोनविंशशताधिकयथा संख्यागमे चान्द्रसावनसौर नक्षत्रादि भ्रमित प्रभवादि संवत्सराणां अमुकनाम्नि संवत्सरे (वर्तमान संवत्सर का नाम लें) उत्तरगोलावलंबिनि

श्रीमार्तण्डमण्डले अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्र अमुकयोगे अमुककरणे अमुकचन्द्रे अमुकदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणविशिष्टे देशकाले—(अब यजमान के मुख से कहलवाये) ममइह जन्मनि जन्मान्तरे वा सञ्चितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान सुवर्णस्तेयगुरु तल्पगमन तत्संसर्गरूप महोपातनां बुद्धिपूर्वकाणां मनोवाक्कायकृतानां बहुकालाभ्यास्तानां उपपातकानांच स्पृष्टास्पृष्ट संकलीकरण मलिनीकरण पात्रीकरण जातिभ्रंशकरण रसविक्रय कन्याविक्रय हयविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्रविक्रय दास्यजादि पशुविक्रय व्रात्य ब्राह्मण दुष्ट ब्राह्मणत्वनिरर्थक वृत्तच्छेदन ऋणानपाकरण ब्राह्मण निंदा गुरुनिंदा वेदनिंदा शास्त्रनिंदाऽभक्ष्यभक्षणाऽभोज्यभोजना चोष्यचोषणालेह्यलेहना स्पृश्यस्पर्शना श्राव्य श्रवणहिंस्यहिंसना वंद्यवंदना चिन्त्यचिन्तना याज्ययाजना पूज्यपूजन पूज्यपूजा व्यतिक्रमण मातृपितृ तिरस्कार स्त्री पुरुष प्रीतिभेदन परस्त्रीगमन वैश्यस्त्रीगमन क्षत्रिय स्त्री गमन ब्राह्मण स्त्री गमन विधवागमन दासी गमन वेश्या गमन चाण्डालदिहीन जाति गमन पशुयोनिवीजपात कूटसाक्षित्व पैशून्यवाद मिथ्यापवाद म्लेच्छ संभाषण ब्रह्मद्वेषकरण स्वाभिभेदन मित्र वंचन भार्या वंचन गर्भपातनरजस्वलागमन सकामस्त्रीस्तनस्पर्शन पथिताम्बूलचर्वण हीन जाति सेवना नृतभाषण परान्न भोजनासाक्षि भोजनगणान्न भोजनभ्रूणहिंसा पशुहिंसा स्त्री हिंसा स्नान त्याग सन्ध्या त्याग पूजा त्यागौ पासनाग्नित्याग वैश्वदेव त्यागास्मार्थ पाककरणैकाकिमिष्ठान्न भोजन बालकैः सहभोजन क्रमुक पात्र भोजन पंक्तिभेदकरणात्म स्त्री सह भोजन प्रकीर्णपातकानां एततक्षणपर्यंतं संचितानां लघुस्थूलसूक्ष्माणाञ्च निरासार्थं सहस्र गोदानजन्यकुरुक्षेत्रादि सर्व तीर्थ स्नान जन्य फल प्राप्त्यर्थं समस्यपितृणां आत्मनश्चविष्णवादिलोकप्राप्तये (अपसव्यंपितृनुच्चार्य्य) समस्तपितृणा (सव्यं) मात्मनश्च एकोत्तर शतकुलविष्णुलोकप्राप्तये (यहाँ संकल्प के अन्त में प्रायश्चित्तात्मक गोदान यथा संख्या) कृच्छ्र (त्रयात्मक षडात्मक द्वादशा-

त्मक) प्रायश्चित पूर्वकम् गङ्गा यमुनासङ्गमे सरस्वत्या गर्भे (सचैलं) (सक्षौरं) (सोपवासं) श्री वेणीमाधवताप्रीत्यर्थेस्नानमहं करिष्ये ।

॥ इति महासङ्कल्प ॥

त्रिर्नि मज्य बहिरागत्य संध्याद्रिकं विधाय मुण्डनं कारयेत् ॥

नोट : तीन बार गोता लगाकर बाहर आकर सध्यादि कर मुंडन करावे

॥ अथ क्षौरसङ्कल्पः प्रारम्भः ॥

मम समस्त पापक्षयपूर्वकयावच्छेदनीयनरवलोमादितत् संख्याकानि वर्षसहस्रावच्छिन्न स्वर्ग वासादिसुखाप्तये, मनोवाञ्छितकामो वाप्रयागे गंगायमुनसङ्गमें श्री वेणीमाधवप्रीत्यर्थं वपनमहं करिष्ये ।

॥ प्रार्थना ॥

आत्मनः शद्धिकामोवापितृणां मुक्तिहेतवे । वपनंकारयिष्यामितीरेऽहं तव जान्हवि ॥ यानिकानिच पापानि ब्रह्महत्यासामानिच । केशानाश्रित्यतिष्ठंति तस्मात्केशान्वपाम्यहम् ॥ महापापौघ पापौघाः केशलोमनखादिजाः । क्षुरेणछिन्न सर्वांगास्तेमेदोषाः पतंत्यधः ॥ यावंतिनख लोमानिछिंदिंति जान्हवीतटे । तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महयिते ॥

॥ इति प्रार्थना ॥

(यजमान के द्वारा प्रश्न किया जाय) :—क्षौरं कारयामि ॥ इति ॥

(ब्रह्मण आज्ञा) :—सुक्षौरोभव ॥ इतिः ॥

(मुण्डन करने का अधिकारी) :—मुडनं सर्वगात्रेषु कक्षोपस्थशिखांविना ॥ अजातचौलो बालो वा ब्रह्मचारी कुमारिका ॥ जीवत्पिताऽपि कुर्वीत वपनं तीर्थनायके ॥ बालो वाऽथ युवावाऽथ वृद्धोवा स्त्री सभर्तृका ॥ गर्भिणी पतिहीना वा प्रयागे क्षौरमाचरेत् ॥

॥ पंचगव्यादि स्नान विधिः ॥

पुनः स्नात्वा आचम्य ॥ शरीर शुध्यर्थे भस्मगोमयमत्तिकादिभिः स्नानमहं करिष्ये ॥ ॥ अथ विनियोगभस्म लगाने का ॥ मानस्तोकेतिकुत्सऋषिः रुद्रो देवता जगती छन्दः भस्मग्रहणे विनियोगः ॥ मंत्र ॥ मानस्तोके तनये मान

आयुषि मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः ॥ मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥ इति मंत्रेण भस्म गृहीत्वा, अग्निरित भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वगूं ह्वा इदं भस्म इत्याभिमन्त्र्य ॥ ईशानः सर्वदेवानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मशिवोमें ऽस्तु सदाशिवोम् ॥ इति शिरसि ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरूद्रः प्रचोदयात । इति मुखे॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोर-घोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वश सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ इति हृदये ॥ वामदेवायनमो जेष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो वलविकरणाय नमो वलाय नमो बल प्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ गुह्ये नमः ॥ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमः भवे भवेनाति भवेभवस्व मामूभवोद्भवायनमः ॥ पादयोः । प्रणवेन सर्वाङ्गेषु ॥ पुनः स्नात्वा आचम्य ॥ गन्धद्वारां पुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपव्हये श्रियम् ॥ इति मन्त्रेण गोमयं गृहीत्वां ॥ अग्र मग्रं चरंतीनामौषधीनांवनेवने ॥ तासामृषभपत्नीनां, पवित्रं कायशोधनं ॥ यन्मे रोगांश्चशोकांश्च नुद गोमय सर्वदा ॥ इत्यभिमन्त्र्य ॥ मायुरदादजमायुरदादत्ग्रश्निरदा ह्यरितो नो वसूनि गवां मंडूका ददतः शतानि सहस्रसावः प्रतिरंतऽआयुः ॥ इति सर्वाङ्गे गोमयं लेपयेत् ॥

॥ अथ मृत्तिका वपंचगव्य स्नात्वा आचम्य स्नानम् ॥

"तस्या स्त्रीन् भागान कृत्वा ॥ मिट्टी तीन भाग करे ॥ प्रथमभागं वामहस्तेन गृहीत्वा तेन नाभेरध उभयकटिप्रदेशावनुलेपयेत् । हस्तं प्रक्षाल्य द्वितीयभागं वामहस्ते गृहीत्वा दक्षिणे नाच्छादयभिमन्त्रयेत ॥ ओ३म् अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे । मृत्तिके हर मे पापं यमन्या पूर्वसञ्चितम् ॥ उद्धृतासि वरोहण कष्णेन शतबाहुना । मृत्तिके ब्रह्मपूताऽसि कश्यपेनाभिवन्दिता ॥ मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् । त्वयाहतेन पापेन सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥ इत्याभिमन्त्र्य ॥ तथै

च "वस्तिं उरू जंघे चरणौ करौ च मृदा प्रत्येकं तूष्णीं त्रिस्त्रिरनुलिप्य पुनर्हस्तौ प्रक्षाल्य आचम्य ॥ तृतीयं भागं गृहीत्वा ललाटादिनाभि पर्यंतं लिम्पेत ॥ ओ३म इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् ॥ समूढ़मस्य-पांसुरे स्वाहा ॥ इति मृत्तिका स्नानम् ।

॥ अथ पञ्चगव्य गव्यादि स्नान विधिः ॥

॥ स्नात्वा आचम्य ॥ स्नान कर आचमन करे ॥ तन्मन्त्राणि ॥ ॥ गायत्री मंत्र से गोमूत्र का स्नान करे ॥ (गोबर मंत्र) गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ गोमयम् ॥ (दुध) आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्णयंभवा वाजस्य संगथे ॥ दुग्धम् ॥ (दही) दधिक्रावणो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ॥ सुरिभिनो मुखाऽकरतप्रणऽआयूं-षितारिषत् ॥ दधि । (घी) शक्रमसि ज्योतिरसि तेजोऽसि देवो वः सविता पुनात्वच्छिद्रेण पशोः सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ घृतम् ॥ (कुश से स्नान) देवस्य त्व सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ता-भ्याम् ॥ कुशोदम् ॥ एषैरेव मन्त्रैः स्नानम् ॥ पञ्चगव्य प्राशनम ॥ (पञ्चगव्यपियो मंत्र) यत्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनात पञ्चगव्यस्य दहत्वाग्निरियेन्धनम् ॥ ततो तीर्थध्यानपूर्वकं स्नात्वा सुचिवाससी परिदध्यात् ॥

पंचगव्य पीकर ध्यानपूर्वक स्नान करे

॥ इति पंच गव्यादिस्नानविधिः ॥

॥ तीर्थ श्राद्ध प्रारम्भः ॥

॥ हिन्दी में पूर्वमुख आसन पर बैठकर पवित्री पहने ॥

आसने प्राङ्मुख्य उपविशम पवित्र धारणमकृत्वा । पवित्रि पहनने का मंत्र ॥ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो सवितुर्नः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्यते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छ केयम । द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीरायासने तथा । पादमूले शिखायान्तु सकृद्र यज्ञोपवीतके ॥

अपने को व श्राद्ध वस्तु को शुद्ध करे ॥ मंत्र ॥

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स वाह्याभ्यान्तरः शुचिः ॥ इति आत्मानं श्राद्धवस्तूनि च अभिविच्य !

एक दीप रक्खे । रक्षा दीपं निधाय ।

आचम्य ।

ॐ केशवाय नमः	श्रीधराय नमः	पुरूषोत्तमाय नमः
ॐ नारायणाय नमः	ॐ हृषीकेशाय नमः	नारसिंहायनमः
ॐ माधवाय नमः	पद्मनाभाय नमः	अधोक्षजाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः	ॐ दामोदराय नमः	अच्युताय नमः
ॐ विश्नवे नमः	सङ्कर्षणाय नमः	जनारदनाय नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः	वासुदेवाय नमः	उपेन्द्राय नमः
त्रिविमाय नमः	प्रद्युमूनाय नमः	ॐ हरये नमः
ॐ वामनाय नमः	ॐ अनिरूद्धाय नमः	ॐ कृष्णाय नमः

प्राणायाम ॥ तीन बार मंत्र जपे ॥

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वधायैः स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः ।

ध्यानम् ॥

त्रिवेणी माधवं सोमं भारद्वाजं च वासुकिम ।
वन्देऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम् ॥
ॐ नमो गंगे महागंगे महादेवस्यवल्लभे,
वहतेत्वां महादेवि भागीरथि नमोस्तुते ॥

पीली सरसों लेकर हाथ जोड़े ।

ओं नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरूषोत्तम ।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥

ॐ प्राच्यै नमः अवाच्यै नमः उदीच्यै नमः प्रतीच्यै नमः उर्ध्वाय नमः श्राद्धभूम्यै नमः ॥ दाहिने टेंट में एक कुश खोंसे ।

यव पुष्पै भूमिः त्रिः सम्पूज्यनीवीं बध्वा ।

पिण्डदान करने का संकल्प करे ।

नोट प्रतिज्ञा संकल्प—ॐ विष्णों विष्णों विष्णुः श्री पुराण पुरुषोत्तमाद्यब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतबाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भरतखण्डान्तर्गत आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे श्री विष्णुः प्रजापतिक्षेत्रे वर्तमान नाम संवत्सरे (संवत् का नाम ले) मासानाममासोत्तमेमासे अमुक मासे (मास का नाम) अमुक पक्षे (पक्ष का नाम) अमुक तिथौ (तिथि का नाम) यथायोग नक्षत्रलग्न मुहूर्तकरणान्वितायां अमुक राशिस्थिते भास्करेऽमुकायने श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफल कामोऽमुकशर्माहं अमुक गोत्राणां मस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानाम मुकामुक शर्माणां सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां तथाच द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाम् मुकामुक शर्मणां यथासंभव सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां समस्त पितृणाम् मक्षयस्ताधिकारिणामृत्तय स्वर्गादिलोक फल प्राप्त्यर्थं तीर्थ श्राद्धमहं करिष्ये !

॥ विश्वेदेवा का आवाहन् तथा पूजन दक्षिण मुख होकर करे। तिपता के पूर्वाविमुख त्रिकुश का दो आसन रक्खे ।

संकल्प—अद्य अस्मत्पितृ पितामह प्रपितामहानां यथासंभव सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां अमुकामुक सर्मणां (वर्मन, गुप्तादास,) तीर्थ श्राद्धे विश्वेदेवाः इद मासनं वो नमः। इसी प्रकार द्वितीय गोत्र का करे। पुनः अस्मत्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां अमुकामुक शर्मणां विश्वेदेवाः इदमासनं वो नमः पुनः यव लेकर आवाहन् करे। आगच्छन्तु महाभागाविश्वेदेवामहाबलाः॥ ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधानाः भवन्तुते ॥ बाद में षोड़शोपचार पूजन करे ।

संकल्प—पितृनुच्चार्य विश्वेदेवानामद्य (महाल्यान्तर्गत) तीर्थ श्राद्धे

गन्धाक्षत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूलं, पुंगीफल (यज्ञोपवीत) दक्षिणा चासांसि विश्वेदेवा: आसनोपरिवो नमः। इसी प्रकार मातामहादिक का संकल्प करे। तिपता का (तीन पत्ता) छः आसन पितरों के लिये दक्षिण मुख करके रक्खे (पितामह तीनों के लिये संकल्प) अमुक गोत्राणां पितृपितामह प्रपितामहानाम् अमुकामुक शर्माणां यथासंभव सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थ श्राद्धे इमान्यासनानि वः स्वधा। तीनों का एक साथ संकल्प। एवं द्वितीय गोत्राणां मातामहवृद्ध प्रमातामहानाम् मुकामुक शर्मणां यथासंभव सपत्नीकानां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थ श्राद्धे इमान्यासनानि वः स्वधा।

गन्धादिदानम् (पूजन करे)

मोटक, तिल, जल दे। अद्यामुक गोत्राणां पितपितामह प्रपितामह-नाम मुकामुक शमर्णां यथासंभव सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थश्राद्धे गन्धादीनिते स्वधा। इसी प्रकार से मातृ पक्ष का करे।

जल घुमाने का

अथ जलेन भोजन पात्रासनयोश्चचतुर्दिशं मण्डलं कुर्यात।

मन्त्र—यथा चक्रायुधो विष्णुः त्रैलोक्य परिरक्षति। एवं मण्डल तोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥ इति॥

दक्षिण दिशा में कुश के ऊपर भूस्वामि के पितरों को अन्न दे।

इदमन्नम तद्भूस्वामि पितृभ्यो नमः।

विश्वेदेवा के आसन पर अन्न आदि रक्खे।

एक पुरुष के आहार मात्रा संभोजन लाकर रक्खे। इसी प्रकार अपशव्य होकर पितरों के लिये भी लाकर रक्खे।

घीं, जल रखकर दोनों हाथ से मधु लगावे। घृतं, जलं चोपनीय अन्नोपरिहस्तद्वयेन मधुदत्वा।

ओं मधुव्वाताऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः॥ मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव गूं रजः। मधुद्योरस्तुनः पिता। मधुमान्नो-ऽवस्पतिर्म्मधुमांऽअस्तुसूर्यः। माध्वीर्गावोभवन्तुनः॥

संकल्प छोड़े—मोटकदीन्यादाय अमुक गोत्रेभ्य: पित पितामह प्रपितामहेभ्य: सपत्नीकेभ्य: तीर्थश्राद्धे इमान्यन्नानि सोपकरणानि व: स्वधा। इसी प्रकार द्वितीय गोत्र मातामहादि का करे। सव्यं कृत्वा। हाथ जोड़े।

मंत्र। अन्नहीनं क्रिया हीनं विधिहीनं च यद्भवेत तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु। तीन बार गायत्री का जाप करे तथा पुरुष सूक्त का पाठ करे।

देवताभ्य: पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नम: स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नम:॥

नोट—पुरुष सूक्त का पाठ गणपति पूजन में है।

बेदी बनावे तत्पश्चात् बेदी के ऊपर तीन रेखा खींचे।

मंत्र—अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरीद्वारावती ज्ञेया: सप्तैता मोक्षदायिका:॥ छिन्नमूल कुशा बिछावे।

बारह अवनेजन पात्र (दियाली) में तिल, जल, चन्दन, फूल बेदी के सामने रक्खे।

मंत्र—मोटक तिल जलान्यादाय अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम् वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां सपत्नीकानाम् तीर्थश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व स्वधा नम:।

इसी प्रकार द्वितीय गोत्र। द्वितिय गोत्राणां मातामह प्रमातामह बृद्ध प्रमातामहानाम् वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां सपत्नीकनां तीर्थश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व स्वधा नम:।

उपरोक्त लिखे हुये मंत्र के द्वारा बारहो दियाली का जल इत्यादि बेदी पर बिछे हुये कुश पर थोड़ा-थोड़ा चढ़ावे।

पिण्डदान करने का मंत्र (पिण्डा दे):

ॐ अद्यामुक गोत्र पितरमुक शर्मन (बर्मन, गुप्त, दास) वसु रूपतीर्थ श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा। इसी प्रकार पितामह रुद्रस्वरूप प्रपितामह आदित्यस्वरूप माता गायत्री स्वरूपणी पितामही प्रपितामही एवं द्वितीय गोत्र मातामह प्रमातामह बृद्ध प्रमातामह बसु रुद्रादित्य स्वरूपाणां सपत्नीकानां आदि का पिण्डदान करे। नोट :—इसके अतिरिक्त चाचा, भाई, गुरु, ससुर भगिनी आदि का पिण्डदान करे।

लम्बा सा एक पिण्डा बनाकर बाएँ हाथ में रखकर दाहिने हाथ से कुश द्वारा काटकर पिण्ड पर चढ़ा देवे।

मंत्र—**लेपभाग भुजः पितस्तृप्यन्तु।**

जो बेदी पर बिछा हुआ कुश है उसमे हाथ पोंछे। बायीं ओर से श्वांस खींचकर पिण्ड पर छोड़ दे।

हाथ पोंछने का मंत्र—**अत्र पितरो मादयध्वम यथाभागा मवृषायिध्वम्।**

इस मंत्र को कहते हुये पितरों का ध्यान कर श्वांस छोड़े।

मंत्र—**अमीदन्त पितरो यथाभागभावृषायिषत।**

पहले का अशिष्ट अवनेजन पात्र तथा मोटक तिल जल लेकर पिण्ड पर छोड़ दे।

छोड़ने का मंत्र—**अद्यामुकगोत्र पितरमुक शर्मन (वर्मन, गुप्त, दास) वसु रूप तीर्थश्राद्ध पिण्डेऽत्र प्रत्यवने निद्वते स्वधा।** इसी प्रकार समस्त पितरों का करे। तथा टेट खुजलावे।

मंत्र—**ततो नीवीं विस्त्रंस्य।**

सव्य होकर आचमन करे। पुनः अपसव्य होकर वस्त्र धोती चढ़ावे। धोती न हो तो सूत बायें हाथ में रखकर दाहिने हाथ से चढ़ावे।

चढ़ाने का मंत्र—**नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरो धोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो ग्रहान्नः पितरो दत्तसतो वः पितरो द्वेष्मैतद्धः पितरो वासः।**

अनन्तर गन्धादि से पिण्ड का पूजन करे तथा सभी भोग सामग्री तथा वस्त्र भूषणादि पिण्ड पर समर्पण करे।

पहले हाथ जोड़े (मन्त्र)—**अक्रोधनैः शौचपरैः सततं ब्रह्मचारिभिः, भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्ध कर्मणि। सर्वायासविनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवर्जितैः, भवितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्ध कर्मणि।**

इस मन्त्र से स्नान करावे—**नमस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिशिरोरुवाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुग धारिणे नमः।**

इस मन्त्र से चन्दन चढ़ावे ।

गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपव्हये श्रियम् ॥

इस मन्त्र से अक्षत चढ़ावे ।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

इस मन्त्र से पुष्प चढ़ावे ।

माल्यादीनसुगन्धीनि माल्यादीनिवैप्रभी ।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

इस मन्त्र से धूप दे ।

वनस्पतिरसो धूपो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीप दिखाने का मन्त्र ।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरा पहम् ॥

नैवेद्य का मन्त्र ।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिर्मेह्यचलांकुरू ।
ईप्सितं में वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥

वस्त्र का मन्त्र — युवासुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः । तं धीराः संकवय उन्नयन्ति स्वाध्यायी मनसा देवयन्तः ॥

ताम्बूल और पूगीफल का मन्त्र ।

पुगीफलं महादिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
खदिरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

दक्षिणा का मन्त्र ।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

सव्य होकर विश्वे देवा के भोजन पात्र पर इन मन्त्रों के द्वारा जलादि छोड़े।

इस मन्त्र से जल—**शिवाआपः सन्तु।**

इस मन्त्र से पुष्प—**सौमनस्यमस्त्विति पुष्पम्।**

इस मन्त्र से चावल—**अक्षतंचारिष्टंचास्त्विति।**

तदन्तर अपसव्य होकर पितरों के भोजन पात्र पर उपरोक्त मन्त्रों के द्वारा जल छोड़े।

तदन्तर (इसके बाद)—**अद्यामुकगोत्राणां पित्रपितामह प्रपितामहानाम मुकासुक शर्माणां (बर्मन, गुप्त, दास) तथा द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाम मुकामुक शर्माणां वसुरूद्रादित्य स्वरूपाणां तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्त पानादिकमक्षय्यमस्तु।**

तब सव्य होकर दक्षिण दिशा में देखता हुआ पूर्वात्र हाथ से पिण्ड पर जलधारा दे। मंत्र **अघोराः पितरः सन्तु।**

फिर पूर्व की ओर हाथ जोड़े।

मंत्र—**गोत्र नो वर्धतां दातारोनोऽभिवर्धन्ताम् वेदाः सन्ततिरेवच श्रद्धाचनोमाव्य गमत्। बहुदेयं चनोऽस्तु। अन्नंचनो बहुभवेदतथीश्च-लमूमहि: यचितार श्चनः सन्तु माच याचिष्म कश्चन एताः सत्याअशिषः सन्तु।**

पुनः अपसव्य होकर पिण्डा पर पवित्र कुशा चढ़ा कर दुग्ध धारा दे।

मंत्र—**ऊर्जं वहन्तिरमृतङ्‌ घृतम्पयः कीलालम् परिस्त्रुतम् स्वधास्थ तर्पयत में पितृन्।**

अपने आसन पर से झुक कर पिण्डा सूंघ ले तदन्तर दक्षिणा संकल्प सव्य होकर विश्वेदेवा का करे। तथा अपसव्य होकर पितरों का दक्षिणा संकल्प करे।

मम समस्त पितृणामक्षय स्वर्गलोक फल प्राप्त्यर्थं कृतैततीर्थ श्राद्ध प्रतिष्ठार्थं अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय हिरण्यमग्निदैवतं यथाशक्ति दक्षिणादातु महमुत्सृजेत (इसके बाद अन्न संकल्प करे तदन्तर पितरों को चौरासी से मुक्त करने के लिये चौरासी दान करे।

संकल्प चौरासी दान का—मम समस्तपितृणां चतुरशीति लक्ष योनिषु गमनागमन निवृत्यर्थं तथा चाक्षय स्वर्गलोकफल प्राप्त्यर्थं चतुरशीतिदान निष्क्रयिणीं यथाशक्ति दक्षिणाममुक नाम गोत्राय शर्मणे दातुमहमुत्सृजे। पितरों का विसर्जन करे। (लोटा बजाकर)

मंत्र—वाजेवाजे वतवाजिनो नोधनेषु विप्रा अमृतऽऋतज्ञाः अस्य मध्व पिबतमादयध्वम् तृप्ता यात पथिमिर्देवयानै ॥

पुनः सव्य होकर तीन बार गायत्री का जप करे तथा गोदान करे। पुनः अपसव्य होकर हाथ से दिया बुझावे। हाथ धोकर तथा सव्य होकर पूर्व की ओर हाथ जोड़े।

मंत्र—प्रमादात्कुर्वतां कर्म पच्वेताध्वरेषुयत्त। स्मरणादेव तद्विष्णों सम्पूर्णंस्यादितिश्रुतिः। श्राद्ध की परिपूर्णता के लिये विष्णु का स्मरण करे शान्ताकारम् मंत्र के द्वारा तदंतर ब्राह्मण से तीन बार श्राद्ध की परिपूर्णता पूछे। ब्राह्मण कहे। परिपूर्णं मस्तु। पश्चात तीर्थ गुरू को सुफल दक्षिणा देवे।

तीर्थ में श्राद्ध में क्या होना चाहिए और क्या नहीं।

१—आवाहनं विसर्गश्च द्विजांगुष्टनिवेशनं।
अर्घ्यं विकिरदानं च दिग्वंधोऽग्नि कृतस्तथा॥
२—पृप्तिप्रश्नश्च दिग्दोषः परिचिष्टान्नरक्षसां।
एतैर्विरहितं कार्यं तीर्थश्राद्धं मुमीश्वराः॥
आसनं पिण्ड दानं च पुनः प्रत्यवनेजनम्।
दक्षिण चन्नसंकल्पः सर्वतीर्थे स्वयं विधिः॥

१—केवल आसन पिण्डदान प्रत्यवनेजन दक्षिणा अन्न संकल्प सब तीर्थों में श्राद्ध की यही विधि बताई गई है।

२—तीर्थ श्राद्ध में आवाहन विसर्जन अंगूठा से अन्न छूना अर्घ्य विकरा का पिण्डा देना दिशाओं को बाँधना अग्नि घुमाना तृप्ति प्रश्न करना दिशा का भ्रम और परोसे हुये अन्न की रक्षा नहीं होता।

तीर्थ श्राद्ध में आवाहन विसर्जन (अँगूठा से अन्न छूना) अर्घ्य विकिर दान, (दशाओं को बाँधना) अग्नि घुमाना तृप्ति प्रश्न दिशा का और परोसे हुये अन्न की रक्षा नहीं होता। केवल आसन पिण्डदान व प्रत्यवनेजन दक्षिण अन्नसंकल्प ही सब तीर्थ की विधि है।

॥ इति तीर्थश्राद्ध विधिः ॥

स्वस्ति वाचन

मंत्र—ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धस्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्ति न स्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभंयामानोव्विदथेषेजग्मयः। अग्नि जिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो देवाऽअवसागमन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः शृणु याम देवा भद्रन्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा गूं शस्त-नूभि र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदोऽ अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम। पुत्रसोयत्र पितरो भवन्तिमानो मध्यारी रिषातायु-र्गन्तोः॥ अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजनाऽ अदिति र्ज्जातमदिति र्ज्जनित्वम॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गूं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः व्वनस्पतयः शान्ति र्व्विश्वेदेवाः शान्ति र्ब्रह्मशान्तिः सर्वं गूं शान्तिः शान्तिरेवशान्ति सामा शान्तिरेधि॥ यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभय-ङ्कुर। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः॥

॥ इति ॥

अथ गणपति पूजन प्रारम्भः

पवित्र आचम्य प्रणायाम संकल्प ध्यान तदनन्तर षोऽशोपचार पूजन पुरुष सूक्त मन्त्र के द्वारा।

(संकल्प)—देश कालौसङ्कीर्त्य.......ममसकल पापक्षय पूर्वक गणपति देवता प्रसन्नार्थमहं करिष्ये।

(ध्यानम)—श्वेताङ्ग श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुर नरतिलकं रत्नसिंहासनस्थम् ॥ दोर्भिः पाशाङ्कुशाब्जाभयवरमनसं चन्द्रमौलि त्रिनेत्र ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री समेतं प्रसन्नम् ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो
नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो
गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमो नमो
विश्वरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः

सेनाभ्यः ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगज कर्णकः लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः

धूम्र केतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः,
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा,
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥
शुक्लाम्बधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायते सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
अभीप्सितर्थसिध्यर्थं पूजितोयः सुरासुरैः,
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमङ्गल माङ्गल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोस्तुते। वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिमसप्रभ। अविघ्न कुरुमे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति गूं हवामहे प्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिगूं हवा-

महे निधीनान्त्वा निधिपति गूंहवामहे व्वसोमम–अहम जानिगर्ब्भधमा-स्त्वमजासि गर्ब्भधम् ।।

आवाहन मन्त्र—आवाहयेत्त गणराजदेवं रक्तोत्पलाभासमशेष-बन्धम् । विघ्नान्तकं विघ्नहरं गणेशं भजामि रौद्रं सहितं च सिद्धया ।

आसन मन्त्र—रम्यसुशोभिनं दिव्यं सर्व सौख्यकरं शुभम् ,
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

पाद्यम मन्त्र—उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ;
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।।

अर्घ्यम मन्त्र—अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह,
करुणाःकर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ।।

आचमनम्—सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ,
आचम्यतां मयादत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ।।

स्नानम्—गंगासरस्वती रेवापयोष्णीनर्मदा जलैः, स्नापितोसि मयादेव तथा शान्ति कुरुष्व में ।।

पंञ्चामृत स्नान—पयोदधितं चैव मधु च शर्करयुतम् ,
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुनः शुद्धोदल स्नान :—नमस्ना०

वस्त्रम—सर्तभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे,
मयोपपादिते तुभ्यं गृह्येतां वाससीत्विमे ।।

गन्धम्—मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम् ,
चन्दनं देवदेवेश स्नानर्थं प्रतिगृह्यताम्

यज्ञोपवीतम—नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ,
उपवीत चोतरीयं गृहाण परमेश्वर ।।

गन्धम—श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ,
विलेपनं सुरश्रैष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

अक्षताः—अक्षताश्च सुरश्रेठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः,
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

पुष्पाणि—माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मया नीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
दुर्वा—विष्ण्वादि सर्व देवानां दूर्बे त्वं प्रीतिदा सदा,
क्षीरसागर संभूते वंशावृद्धिकरी भव ॥
सौभाग्यद्रव्यम्—हरिद्रा कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वरि ॥
धूपम्—बनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः,
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥
दीपम्—आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
नैवेद्यम्—शर्करावृतसंयुक्तं मधुरं स्वादु चोत्तमम् ।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
ताम्बूल—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लोदलैर्युतम् ।
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूल प्रतिगृह्यताम् ॥
फल—इदं फलं मयोदेव स्थापितं पुरुतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
दक्षिणा—हिरण्यगर्भगर्वस्थं हेमवीजं विभावसोः ।
अनन्तपुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥
कर्पूरारातिक्यम—कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ।
आरार्त्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥
प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानिवै ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे ॥
मन्त्र पुष्पाञ्जलिः—नानासुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

नोट—गणपति पूजन वैदिक पुराणिक दोनों मन्त्र के द्वारा लिखे हैं उपरोक्त मन्त्र पुराणिक है तथा नीचे वाले वैदिक मन्त्र पुरुष सूक्त का है ।

पुरुषसूक्त ॥ इति गणपति पूजन समाप्त ॥

॥ पुरुष सूत्र मंत्र ॥

आवाहनम्—सहस्रशीर्षा पुरषः सहस्राक्षः सहस्रपात ॥ सभूमि गूं सर्व्वत स्त्रृत्त्वा त्यतिष्ठ दशाङ्गु लम् ॥१॥

आसनम्—पुरुष एवेद गूं सर्व्वं यद्भुतं यच्च भाव्व्यम ॥ उतामृतत्वस्ये शानो यदन्ने नातिरोहति ॥२॥

पाद्यम्—एतावानस्य महिमातो ऽज्यायांश्च पूरुषः ॥ पादोस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपाद स्यामृतन्दिवि ॥३॥

अर्घ्यम्—त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ॥ ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनान शने ऽअभि ॥४॥

आचमनीयम्—ततोव्विराड जायत व्विराजो ऽअधिपूरुषः ॥ सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भू मिमथोपुरः ॥५॥

स्नानम्—तस्माद्यज्ञा त्सर्वहुतः सम्भृतम्पृष दाज्यम ॥ पशूं स्तांश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥६॥

वस्त्रम्—तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुत ऋचः सामानिजज्ञिरे छन्दा ॐ सिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥

यज्ञोपवीतम्—तस्मादश्वाऽअजायन्त येकेचो भयादतः ॥ गावोहजज्ञिरे तस्मा त्तस्मा ज्जाता अजाऽवयः ॥८॥

गन्धम्—तंयज्ञम्बर्हिषिप्रौक्षन्पुरुष ञ्जातमग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये ॥९॥

पुष्पम्—यत्पुरुषम्व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्येते ॥१०॥

धूपम्—ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या गूं शूद्रोऽ अजायत ॥११॥

दीपम्—चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ॥ श्रोत्रा द्वायुश्च प्राणश्चमुखादग्निर जायत ॥१२॥

नैवेद्यम्—नाभ्या ऽआसदिन्तरिक्षगूं शीर्ष्णोंद्यौः समवर्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ २ऽअकल्पयन् ॥१३॥

ताम्बूल दक्षिणा सहितम्—यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञ मतन्वत ॥ व्वसन्तो स्यासो दाज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥

कर्पूरार्ती (प्रदक्षिणा)—सप्तास्यासन्परिधय स्त्रिः सप्तसमिधः कृताः देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥

मन्त्र पुष्पाञ्जलि (नमस्कारः)—यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्माणिप्रथमा न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्तिदेवाः ॥१६॥

शय्यादानविधि

कल्पवासकृत शय्यादान में उद्यापन विधान के बाद शय्यादान करना चाहिये। तथा पिण्डदान के उपलक्ष्य में शय्यादान पिण्डदान के समय में ही संकल्प करना चाहिये।

शय्यादान करने के पूर्व प्रथम आचम्य, प्राणायाम, गणपति, कलश (स्थापन) पूजन तथा प्रतिज्ञा संकल्प व ब्राह्मण पूजन कर वरण करें। (ब्राह्मण पूजन यथासंम्भवसपत्नीक ब्राह्मण का पूजन करे) और सुवर्णमयी लक्ष्मीना० कि प्रतिमा का पूजा करे।

कलश पूजन (स्थापन) :—कलश को अक्षत के ऊपर रख के ऊपर पूर्णपात्र चावल से भरकर रख दे। हाथ में अक्षत लेकर कलश पर छोड़कर आवाहन करे।

मंत्र आवाहन—तत्वायामि ब्रह्मणा बन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हर्विभिः। अहेडमानो त्वरुणेह बोध्युरुश गूं समानऽआयुः प्रमोषीः ॥

तदन्तर षोडशोपचार पूजन पुरुष सूक्त से करे।

गणेश आवाहन मंत्र—ॐ गणानान्त्वा गणपति गूं हवामहेप्रिया णान्त्वा प्रियपति गूं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गूं हवामहे व्वसोमम्। आहमजानिगर्भधमात्त्वम जासिगर्भधम ॥

तदन्तर गणेश पूजन करे।

प्रतिज्ञा संकल्प—विष्णो-विष्णो विष्णुः.... ... ...

अद्येत्यादि सकलदुरित क्षयपूर्वक विच्छिन्न सन्तान कलत्रावियोग-द्विपादचतुष्पाद धनधान्य कनक रजत रत्न विविध वसनभाण्ड भक्ष्य भोज्य सुगन्ध सकल कुसुम ताम्बूलैरारोग्य जय सुख कल्याण हर्म्यछत्रा-सन चामर वितान शय्यालङ्कार महाभोग्य रुप सौभाग्यादि निखिलमनो-रथ प्राप्युत्तर सहस्त्र युगावधि स्वर्ग प्राप्तिकामः श्री लक्ष्मीनारायण सुप्रीतये साङ्गशय्यादानमहं करिष्ये।

ब्राह्मण पूजन—एक पात्र में जल लेकर दोनों हाथों से ब्राह्मण का चरण धोवे।

मंत्र—अपाद्धनध्वांत सहस्त्रभानवः समीहितार्थर्पण कामधेनवः। अपार संसार समुद्रमध्ये पुनन्तु मां ब्राह्मणपाद पांसवः ॥ इसके बाद यत्फलम् पुनः गन्धाः पान्तु = गंध, अक्षत, पुष्प, से पूजन कर वरण द्रव्य (धोती, लोटा, अगौछा, आसन खड़ाऊ आदि) दे

॥ वरण संकल्प मंत्र ॥

ॐ विष्णो-विष्णो विष्णु... ... ...

अद्येत्यादि अमुकगोतोत्पन्नोऽहं अमुकशर्माहं एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं अमुक शर्मणं ब्राह्मणं शय्यादान प्रतिग्रहार्थं त्वामहं वृणे ॥ इति वरणम्। वरण ग्रहण कर ब्राह्मण कहे वृतोऽस्मि, इति प्रतिवचनम्।

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्राद्धा-माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

शय्या पर रक्खी हुई सुवर्णमयी लक्ष्मीनारायण प्रतिमा का षोडशोपचार पूजन पुरुषसूक्त से करे। ततपश्चात शय्यादान का संकल्प करे। अक्षत जल पुष्प-कुशा लेकर संकल्प करे ॥ मंत्र ॥

ॐ विष्णो विष्णो विष्णुः अद्येत्यादि मुकगोत्रायेमां शय्यां सुलिप्तभूम्यु परिसंस्थितां घृतपूर्ण ताम्रमय कलशसमन्वितां हिरण्मयलक्ष्मीनारायण

प्रतिमा सहितां नूतनां सुघटितां यष्टोदम शूलकगधान गण्डकमसूरिका वितान सहितां विविध यक्षकर्दम विलेपन ताम्बूल धूप दीप कांस्य पात्र सिन्दूर कज्जल भक्ष्य भोज्य लेह्य पेय धर्ै दुग्ध घृत नवनीतेक्षु विकार पक्वान्न तेज: पाक भोजन जल पात्रासन यथाशक्ति सौवर्णरजतालङ्कार-शाक मूल लवण मरिच जीरक धान्याकरासठ मधुव्यञ्जन चामर छत्रोपानत् कर्णिका कर्पासक कौशेय वसन मार्तलोहदान वचणक भाज मधुपकावर्ति गन्धाद्युपचारैः सुपूजितां त्वाष्ट्रदैवतां साङ्गशय्यादानस्य पुराणोक्त सकल सफल प्राप्तिकामो विष्णुलोक फल प्राप्तिकामो वा श्री लक्ष्मीनारायण सुप्रीयते अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय श्रीवेणीमाधवरूपिणे तुभ्यमहं संप्रददे । श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ यह कहकर शय्या का सिरहाना ब्राह्मण के हाथ में दे दे। विप्र उवाच स्वस्ति वचनम् ।

साङ्गता संकल्प मंत्र—अद्येत्यादि कृतैतन शय्यादान प्रतिष्ठा साङ्गता संसिद्धर्थं सुवर्ण दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ।

भूयसी संकल्प मंत्र—कृतैतन्न्यूनतारिक्तदोषपारिपूरणार्थं भूयसी दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥

शय्या बिछाने की विधि :— प्रमाण दान संग्रहे :—देवशय्या शिरः प्राच्या मखशय्या तु दक्षिणे । पश्चिमे तीर्थशय्यास्यात् प्रेतशय्यातु उत्तरे । प्रतिष्ठा सागर में पराशर ने लिखा है । प्राकशिरस्का भवेच्छय्या सावोद्यपन कर्मसु । यमामायां विवाहेदु मृतौ चोत्तरतो महा ॥

॥ इतिशय्यादान विधिः ॥

॥ गोदानविधिः ॥

आचमन, प्राणयाम, गणपतिपूजन, कलस स्थापन और आचार्य वरण करने के बाद संकल्प करे ॥ प्रतीज्ञा संकल्प :—

(मंत्र) ॐ विष्णो २ विष्णु:........अद्यामुकगोत्रोहममुकस्माहं मम-समस्त पापक्षयपूर्वक श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल प्राप्तये गोदानकर्मणि

आचार्य पूजन पूर्वकं वरणञ्च करिष्ये ॥ तत्पश्चात वरण कर गोपूजा करे। पूजा करने का मंत्रः ॥

पूजितासि वशिष्ठेन विश्वामित्रेण धीमता,
कश्यपेनापि देवि त्वं पूजिता ऋषिभिः पुरा ॥

(गों प्रर्थना करें मंत्र)

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता,
सा देवी धेनरुपेण मम पापं व्यपोहतु ॥
देहस्था या च रुद्राणां शङ्करस्य च या प्रिया,
धेनरुपेण सा देवी मम पापे व्यपोहतु ॥
विष्णोर्वेक्षासिया लक्ष्मीया लक्ष्मीर्धनदस्यच,
लक्ष्मी यी लोकापालानां साधेनुर्वरदास्तु मे ॥
स्वाधात्वं पितृ मुख्यानां स्वाह चैव विभावसोः;
तस्मात्पापहरा धेनुर्मम नित्यं भवत्विति ॥
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च;
नमोब्रह्मसुताभ्पश्च पवित्राभ्यो नमोनमः ॥
पञ्चगावः समुत्पन्ना मथ्यसानेमतादधौ ॥
तासांमध्ये तु या श्रेष्ठा तस्यै धेन्वे नमोनमः ॥

गाय के अङ्गन्यास करने का मंत्र :—शृङ्गाग्रे सर्वतीर्थेभ्यो नमः, शृङ्गमध्ये ब्रह्मणे नमः, शृङ्गमूले रुद्रायनमः, ललाटे वृषमध्वजायनमः, कर्णयो अश्विनीकुमाराभ्यां नमः चक्षुषोः शशि भास्कराभ्यां नमः, मुखे विष्णवे नमः जिहवःयां सरस्वत्यै नमः नासा पुटयोः षण्मुखाय नमः, उदरे पृथिव्यै नमः, अङ्गयो सागराय नमः रोककूपे ऋषिभ्यो नमः, पृष्टे रुद्रभ्यो नमः दक्षिणपार्श्वे कुबेराय नमः वामपार्श्वे वरुणाय नमः, रोमाग्रेषु रश्मिभ्यो नमः श्रोणीतटे गणेशाय नमः, गंधयोः सुतीर्थेभ्यो नमः, मुखमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः, क्रोड़े पृथिवीभ्यो नमः हुंकारे वेदेभ्यो नमः, स्तनेषु समुद्राय नमः गोमये लक्ष्म्यै नमः गोमूते गङ्गाय नमः, गोमये यमुनायै नमः ॥

इस प्रकार न्यास करके पूजन करे, स्नान, गन्ध, अक्षत, पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-फल-ताम्बूल वस्त्रालङ्कार आदि से पूजन करने के पश्चात्, तर्पण करे।

(मंत्र तर्पण) ब्रह्मलोके गता ये च ये च विष्णुपुरं गताः. शिवलोके गता ये च विष्णुलोकगताश्च ये। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः, असिपत्रवने घोरे कुम्भी पाके च ये गताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः, पशुमेधमृता ये च अमार्गाश्चैव ये गताः॥

ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः,
पितृपक्षाश्च ये केचित्ये केचिन्मातृपक्षगाः॥
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः,
गुरुश्च सुखेधूनां समुद्रभूता कुलेषु ये ॥
ये प्रेत भावमायन्ता ये चान्ये श्राद्धवर्जिताः,
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु गोपुच्छोदक तर्पणैः॥

गो ग्रास देने का मंत्र :—

सौरभेयी कामदुधाः पवित्राः पुण्यराशयः,
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।

गऊदान करने का संकल्प :—

विष्णों विष्णों विष्णुः........अद्येत्यादि, एवंगुणविशेषणविशिष्ठायां पुण्यतिथौ अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहम मुकशर्माहं ममइह जन्मानि जन्मान्तरे वा सकलपातको पपातक क्षयपूर्वक श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तकामः वेणीमाधव देवता प्रीयते इमां गां स्वर्णश्रृङ्गी रौप्यखुरां ताम्र पृष्ठी कांस्योपदोहनी सवत्सां मुक्तालङ्गुलिनी घंटाग्रीवां विद्रुम मौक्तिकपट वस्त्राच्छन्नां कार्पासवस्त्राच्छन्नां वा रुद्रदैवतां अमुकगोत्रायामुकवेदाध्यायिने-अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ ॐकृष्णार्पमस्तु॥ इति संकल्प।

ब्राह्मण स्वस्ति कहकर ले ले।

सांगता संकल्प : मंत्र—कृते तद्गोदान प्रतिष्ठासिद्धयर्थ सुवर्ण दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। इति संकल्प।

पुनः गौ की प्रार्थना करे :—

मंत्र—गावो ममाग्रतः सन्तुगावो मे सन्तु पृन्ठतः
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

पुनः भूयसी दक्षिणा का संकल्प करे। तत्श्चात् द्यौः शान्तिः इस मंत्र से यजमान का अभिषेक करें और तिलक लगावे। द्यौः शान्तिःमन्त्र स्वस्ति वाचन में है।

नोट :—गोदान करने के लिये आवश्यक वस्तु सोने के सींग चाँदी के खुर ताँबे के पीठ, कासें के दोहनी (बटोई) बछवा सहित गाय मोती के झालर होवें तथा गले में घन्टी मूँगा मोती के जणऊ कपड़े से ओढ़ावे। इसके अभाव में सूत का कपड़ा ओढ़ावे।

॥ इति गोंदान विधिः ॥

॥ भूमिदान विधिः ॥

प्रथम आचमन प्रणायाम पवित्र धारण गणपति पूजन कलश स्थापन करने के उपरान्त प्रतिज्ञा संकल्प करके ब्राह्मणे पूजा तथा वरण संकल्प करे।

प्रतिज्ञा संकल्प—विष्र्णो विष्र्णो विष्णुः अद्येत्यादि सकल वैकल्पोत्पारत दुःख प्रोद्धतदौस्थ्य दौर्भाग्य रोगशोक दरिद्रपातकोप पातक महापातक भयभंग शांतिपूर्वक विच्छिन्न संतति द्विपद चतुष्पद धनधान्यहर्म्याश्व गजरथ मान्यायुर्बल पुष्टि तुष्टि सौभाग्य कनक रजत रत्नमणि रौप्यवसनोर्णिक कौशेय मृगमदघनसारा श्री खंडस्रग्दाम विलेपन भक्ष्यभोज्य लेह्य पेय खाद्य चोष्यफल तांबूल षड्रसाद्यैहिकामुषिक शुभफल प्राप्त्युत्तर विविध सुरांगना गंधर्व गीत नृत्य वाद्यस्तुति सहर्षितानेकभोग महाभोग संभोगाढ्य स्वर्गलोक प्राप्तिकामः पुरग्राम क्षेत्र गोचर्मादि यथा शक्ति श्री वेणीमाधव प्रीत्यर्थे धरादानमहं करिष्ये ॥ इति ॥

वरण संकोप—अद्य: अमुकशर्माहं ऐभि वरण द्रव्यै अमुक गोत्रम अमुकशर्मणं ब्रह्मणाम भूमिदान प्रतिगृहार्थं त्वामहम वृणे ॥ इति ॥

तत्पश्चात भूमि (मकान) के पूजा करे। तथा ध्यान करे।

ध्यान मंत्र—सर्वसस्याश्रयाभूमिर्वराहेण समुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदा अतः शान्तिं प्रयच्छतु ॥

एतानि अर्चनानि तदन्तर संकल्प करें, जल अक्षत पुस्प लेकर।

संकल्प—अद्येत्यादि० अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणायामुकवेदाध्यायिने इमांगो चर्मादि यथाप्रकल्पितां भूमिं गंधादि पूजितां सितवसनाच्छादितां सर्व सस्यावतीं जलवनसहितां कूपोद्यानसमन्वितां अमुक ग्रामनामोपलक्षितां विष्णुदैवतां ससुवर्णां सकल दोष शोक दौर्भाग्य दौस्थ्य दुःख स्वप्न दुरितोत्पात वैकृत्याद्भुत पातकोपपातक महापातक क्षयस्व पूर्वक एष धरादानस्य पुराणोक्त ऐहिकामुष्मिक निखिल सुखसन्तान गजाश्व रथमहिषी वाजिकादासी दास धन धान्य कनक रजत मणि रत्न शय्या षड्रस गोरस वसन हर्म्यामंद सुविनोद सुगंधस्रक्सौभाग्यायुरारोग्य भोगरूप लावण्यबल पुष्टिफल तांबूलादि प्राप्त्युत्तराद्य स्वर्गलोकाद्यय कामः श्री वेणीमाधव प्रीत्यर्थे तुभ्यमहं संप्रददे, श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ कुश जल अक्षत सहित मिट्टी के ढेर ब्राह्मण के हाथ में दे। ब्राह्मण कहे। ॐ स्वस्ति।

सांगता संकल्प—सांगधरादानप्रतिष्ठार्थं सिद्धर्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं श्रीयज्ञ पुरुषप्रीतये तुभ्य महं संप्रददे।

हाथ जोड़े मंत्र—यथाभूमि प्रददानस्य कलांर्भूनार्हन्तिषोडशीम्
दानानन्यनि मे शान्तिर्भू मिदानाद्भवत्विहि ॥

॥ इति भूमिदानम् ॥

॥ गजदान प्रारम्भ ॥

पवित्र आचमन प्राणायाम गज पूजन कलश स्थापन करने के उपरान्त प्रतिज्ञा संकल्प करके ब्राह्मण पूजा तथा वरण संकल्प करे।

प्रतिज्ञा संकल्प मन्त्र—ॐ विष्णुर्-विष्णुर् विष्णु........अद्य अमुकगोत्रः अमुक शर्माहं षटषष्टिवर्ष सहस्त्रवधि कामरपुर भोगोत्तर महाराज्य कामः

कक्षारज्जु स्थिरासन सहितं काञ्चनमालादि कीर्णं चामरगंध पुष्पालं-कृतं गजदान महं करिष्ये ।।

वरण संकल्प मन्त्र—अद्य गजदान प्रतिग्रहार्थं अमुक गोत्रममुक-शर्मणं ब्राह्मणम मुकावेदाध्यायिनमहं वृणे ।। ब्राह्मण कहे वृतोऽस्मि ।।

गजदान संकल्प मन्त्र—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु........अर्द्धोदय महा-पर्वणि गजदान फल प्राप्त्यर्थं इमं हस्तिनं प्रजापतिदैवतं गजशास्त्र-लक्षणोपेतं निर्दोषं अञ्जनावलित मुच्चैस्तराङ्गप्राय गगनचक्रवारि महामेघोपमानं गिरिशिखर शोभित कुम्भस्थलं कार्यानुसारिप्रासाराकुञ्च-नकरं कदलीकुण्डोप मानकरं मेघ मध्यस्थित पयः पानाकाङ्क्षम् दीर्घदन्तद्वयं परसैन्य पराजयप्रदं स्वसैन्य विजयावहं मेघ गम्भीर गर्जितं प्रतिगजघण्टाभयकरं गण्डस्थली वहद्वनवारिप्रवाहं तालखण्ड चतुश्च-रणोपेतं विचित्रग्रीवं वातधूनित बृहद्म्भायन्त्र प्राय शुभ श्रवण योगोपेतं भानु कृशानुप्रतापं प्रायः क्रूरनयनं महामानिनं हस्तिपालां कुशवशाय हेतुस्वरुपं ऐरावत कुलोद्भूतं सर्वाङ्गतैलयुक्तं सिन्दूररञ्जित भालं नील-पीतादि विचित्रनानावर्णैः सुशोभित वस्त्रैर्विभूषितं वारिनिमित्त घण्टा घुंघार शृङ्खलापप्राधुपर्णैः क्रमशोऽग्निना पुच्छपार्श्वसक्राजि भूषितं चामरशोभित गण्डस्थलं संग्रामाङ्गणभूमौ शीतमरीचवर्णं भालसन्नाह संकुलितं कुलिशार्पितं महद्दण्डागमन पर्याास चमारध्वजोपेतं वृष्टिकमत मर्कटप्राय चञ्चली भूतवेग नानामणि खचितपात वारण पृष्ठासनोपेतं विचित्रवर्णं पृष्ठोपरिपदसंछादितं परलोके ऐरावतगजस्कन्धारूपनन्दन-वन विहारिभिर्देवाङ्गनाभिन्याहतान्य सम्भोगसुख प्राप्त्यर्थं चिरकाल इहागत्यवै लक्षराजवंशे नानागजाश्व कोशाद्य संक्षयप्राप्त्यर्थं लक्ष्मीनारायण पद द्वन्द्वप्राप्तिकामो अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

(सागता संकल्प) ॐएतद्गजदानकर्मणः सांगतासिध्यर्थं शतसुवर्ण परिमितां ग्रामादिसंयुक्तां दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

प्रार्थना—त्रैलोक्यनाथ देवेश सर्वभूतकृपानिधे ।
गजदानेन सन्तुष्टस्त्वं प्रयच्छ च वांछितम् ।।

।। इति गजदान ।।

॥ शिविका दान प्रारम्भः ॥ (पालकी)

पवित्र होकर आचम्य प्राणायाम, नारायण स्मरण प्रतिज्ञा संकल्प कर ब्राह्मण पूजा करके वरण कर सुवर्ण मयी प्रतिमा का पूजा करने के पश्चात शिविका (पालकी) का पूजा करे ।

(पालकी समस्त वस्त्र पात्र भूषणादि अलंकार से युक्त होनी चाहिए)

(प्रतिज्ञा संकल्प मंत्र) ॐ विष्णो २ विष्णुः अद्येत्यादि देशकालौ-सङ्कीर्त्य निखिल पातकोपपातकक्षय पूर्वक विविध विपुल भोगोयभोगपूर्वक विष्णु सायुज्य मुक्तिकामनया, विष्णु प्रीत्यर्थं शिविकादानमहं करिष्ये ॥ तदनन्तर ब्राह्मण पूजा कर । वारण सङ्कल्प करे ।

(वरण संकल्प मंत्र) ॐ अद्य अमुकगोत्रम मुकशर्माणं ब्राह्मणम मुकावेदाध्यायिनमहं वृणे ॥ ब्राह्मण कहे वृतोऽस्मि ॥

(संकल्प मंत्र) ॐ विष्णोः २ विष्णुः......ममेहजन्मनि जन्मान्तरे वा सञ्चितानांनिखिल पातकोपपातकानां क्षयपूर्वकं पितृ मित्रवंधुपत्नीय सकल जनोद्धरण पूर्वकानेक कल्पकोटि विच्छिन्न नानाविधिविपुल भोगो-पभोग सुखप्राप्तिपूर्वकं विष्णु सायुज्य प्राप्तये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायाममुकवेदाध्यायिन इमां शिविका प्रददे ॥

(सागता संकल्प मंत्र) ॐ कृतै तत् शिविकादान प्रतिष्ठा सांगता सिद्धार्थं दक्षिणा द्रव्यं तुभ्यमहं संप्रददे ।

॥ इति शिविका दान ॥

॥ श्वेताश्वदान विधिः ॥

पवित्रआचम्य प्रणायाम प्रतिज्ञा संकल्प करके श्वेताश्वदान करे ।

प्रतिज्ञा संकल्प—ॐ अद्यश्वेताश्वदानं जनित फलप्राप्त्यर्थं श्वेतास्यदान महं करिष्ये ॥

दान संकल्प मंत्र – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः........श्वेताश्वदान जनित फल प्राप्त्यर्थमिमं श्वेताश्वं महानदी जल स्थमापितं सकल लक्षणोपेत पञ्चतटकं षड्विधलक्षणोऽन्नतवक्षस्थल द्वात्रिंशदष्टावर्तवर्जित शोभनावर्त संयुतं चञ्चलीभूतनरनृत्यकारिणं जितवायुवेगं मनोजवं समर समयोचित विजयतुरी चतुर मुच्चैश्रवः समानं गन्धर्वकुलचारिणं वर्णाश्वशालविश्रुतं स्वरूपसुवेशं सुशील युवानमव्वयवच्छिन्नघटिकार्द्ध योजनगामिनं दुष्य-कृत्यदुष्य महाभोगभोग्यं हयाम्बरविराजितं खुरक्षुण्णमहीतलं हयमणि-भूषितं नवोल्ललितमुखमराडनं शुद्धरूप्यशोभितं बज्रमणिस्फुरणे नेत्रे दानोदन्त समानं ताम्रखेरोपेतं क्षौमधरं शुभ्रपद सवृत मयः पट्टिका बद्धपादतलं बद्धकक्षं सुवर्ण तिलकालङ्कृतललाट चमारैः सुशोभित ग्रीवं नानाभूषणैर्भूषितं धान्यपर्वतोपरि स्थापितं हयमेधरमणीयरूपम वलम्बित गतागतं चतुर्दशरत्नान्तः पाति रत्नवरं सूर्यदेवदन्त विन्यस्त मौक्तिकमधरोष्ठ विन्यस्त प्रवालनेत्रे रोपितवज्रवैदूर्यमणि-गन्धपुष्पमाला-भूषितं ब्रह्महत्याखिलपाप निष्वदनमेक विंशत्यधिकशत पितॄणां भूषरण-भूतं हयशरीर रोमसंख्या समानकल्पकलावध्यखंरडमहिमरडलाधिपत्य-प्राप्तिकामोऽहं श्री वेणीमाधव प्रीत्यर्थमिमश्वं समलंकृतं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

(सांगता संकल्प मंत्र) ॐ एतच्छ्वेताश्वदानकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं शत सुवर्ण दक्षिणां तुभ्यमहंसम्प्रददे ॥

(हाथ जोड़े)

महर्णवे समुत्पन्न उच्चैश्रवस पुत्रक,
मया त्वं विप्रमुख्याय दत्तोस्यश्व सुखीभव ॥

तदनन्तर भूयसी दक्षिण संकल्प करे।

॥ इति श्वेताश्वदा ॥

॥ अथ दसदान विधिः ॥

पवित्र आचम्य प्राणायाम प्रतिज्ञा संकल्प तदनन्तर दान संकल्प करे।

(प्रतिज्ञा संकल्प मंत्र) ॐ अद्येत्यादि ममसमस्तपापक्षयपूर्वक प्रयागतीर्थ फल प्राप्तये दशदानानि करिष्ये ॥

(दान संकल्प मंत्र) ॐ विष्णुर्विष्णुः.......मम समस्त पापक्षय पूर्वक अक्षयस्वर्गलोक फलप्राप्तकामः प्रायगतीर्थ फल प्राप्तये गौ भू तिल हिरण्य घृत वस्त्र अन्न गुड़ रजत लवणान दसदाननि अहम करिष्ये ॥

(सांगता मंत्र) ॐ कृतै तत दाशदान सागता सिद्धार्थ दक्षिणाम यथानाम गोत्राय ब्राह्मणय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

॥ हाथ जोड़ने का मंत्र गोदान ॥

गावो मे अग्रतः सन्तु गावोमे पृष्ठतः।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्येवसाम्यहम् ॥
गवामङ्गेषु तिष्ठान्ति भुवनानि चतुर्दश।
यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोके परत्र च ॥

॥ भूमिदान ॥

सर्वभूताश्रया पृथ्वी वराहेण समुद्धृता।
अनन्तसस्यफलदा अतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

॥ तिल दान ॥

महर्षेर्गोत्रसम्भूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥
तस्मादासां प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ॥

॥ सुवर्ण दान ॥

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

॥ घृत दान ॥

कामधेनोः समुद्भूतं सर्वजन्तुषु संस्थितम्।

देवानामाज्यमाहार मतः शन्ति प्रयच्छमे ॥

॥ वस्त्र दान ॥

शीतवतोष्णसंत्राणं लज्जाया वारणं परम्।
देहालङ्करणं दिव्यमतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

॥ अन्न दान ॥

सर्वदेवमयं धान्यं सर्वापत्तिनिवारणाम्।
प्राणिनां जीवनोपायमतः शान्ति प्रच्छमे ॥

॥ गुड़ दान ॥

गुड़मिक्षुरसोद्भूतं मंत्राणां प्रणवो यथा,
दानेनानेनमे तस्मात् परालक्ष्मीः सदामुदे ॥

॥ दाँदी दान ॥

प्रीतिर्यस्माच्चपितृणां विष्णुशङ्करयोरपि।
शिवनेत्रोदभवं रौप्यं परामृद्धिं प्रयच्छतु ॥

॥ लवण दान ॥

यस्मादन्नरसाः सर्वे न प्रिया ववणं विना।
शम्भोः प्रीतिकरं यस्मादतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

॥ इति दशदान विधिः ॥

॥ षोडशदान विधिः ॥

भूम्यासन जलं वस्त्रं प्रदिपान्न मतः परम्
शय्या चपादुका गावो कांचनं रजतं तथा।
ताबूलं छत्र गंधं च माल्या फल मथापिच
एतस षोषशदानानि श्राद्धकाले भवन्तिह ॥

१ भूमि २ आसन ३ जल ४ वस्त्र ५ दीप ६ अन्न ७ शय्या ८ पादुका ९ गऊ १० सोना ११ चांदी १२ ताम्बूल १३ छाता १४ गंध १५ माला १६ फल ये सोलह दान हैं।

।। तिल पात्र दान विधिः ।।

आचम्य प्राणायाम प्रतिज्ञा संकल्प ब्राह्मण पूजा तदनन्तर दान संकल्प करे।

प्रतिज्ञा संकल्प मंत्र—ॐ विष्णों विष्णों विष्णुः

मम सकल जन्म जन्मार्जित समस्त पाप निरसन द्वारा श्रीवेणीमाधव प्रीत्यर्थं तिल पात्र दान महं करिष्ये ।।

दान संकल्प मंत्र—ॐ विष्णोंविष्णों विष्णुः......**ममजन्मप्रभृत्यद्ययावत् कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक सकल पापक्षयपूर्वक स्वर्गलोकफल प्राप्ति पूर्वक श्री त्रिवेणी माधव प्रीत्यर्थं इदं तिलपात्र सहिरण्यं सदक्षिणं यथानाम गोत्र प्रवराय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।**

सांगता मंत्र—ॐ **कृतै तत तिल पात्र दान सांगता सिद्धार्थ दक्षिणम यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।**

हाथ जोड़े

तिला कृष्णा पवित्रा च तिलापापहरा स्मृता। शुक्ला वा यदि वा कृष्णा ऋषि गोत्रसमुद्भवा ।। यानि यानि च पापानि जन्मान्तरसमानि च। तिल पात्र प्रदानेनतानि नश्यन्तु में सदा ।। महर्षेर्गोत्र सम्भूता कश्यपस्य तिला स्मृता तस्मादस्याः प्रदानेन नश्यन्तु मम सर्वदा ।।

।। इति तिल पात्र दान विधिः ।।

अथ कूष्माराऽदानम् (भूराकोढा)

नियम—भूराकोढा दान के पूर्व उसके ऊपर घृत तिल लगावे तथा प्रवाल मोती रत्न सुवर्ण फल ताम्बूल वस्त्रादिसे युक्त करके गेहूँ के ऊपर रक्ख कर दान देने का महत्व नियम है। भविष्य पुराणमे कूष्माराडदान का महत्व लिखा है।

ब्रह्महत्यादि पापघ्नं कूष्माराडञ्च सुख प्रदम्।
कार्तिक्यामथ सप्तम्यां दद्यात पुण्य दिने तथा ।।

संकल्प मंत्र—ॐ विष्णों विष्णों विष्णुः.........ममब्रह्महननादिसमस्त पाप क्षय पूर्वक बहुत्रपौत्र श्री सौभाग्यादि सकलमनोरथावाप्ति कूष्माराड वीजसमसहस्र संख्याक ब्रह्मलोक निवास कामो गोत्राय सुपूजिताय शर्मणे इदं कूष्माराडफलं बहुवीजढ्यं घृततिललिप्तं मुक्ताप्रवाल रत्न रत्नहैमफलतांबूल वस्त्रोदियुतं गोधूमराशिस्थितं वनस्पति दैवतं सुवर्ण दक्षिणायुतं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

सांगता मंत्र—कृतैतत कूष्माराडदानम् सांगतासिद्धार्थ दक्षिणाम् यथा गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

साथ जोड़े—ब्रह्महत्यादिपापघ्नं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा,
कूष्माण्डं बहुवीजाढ्यं पुत्रपौत्रादि वृद्धिदम् ।
मुक्ताप्रवाल हैमादियुतं दत्तं तव द्विज,
अनन्त पुण्य फलदमतः शान्ति प्रयच्छमे ॥

॥ इति कूष्माण्डदान विधिः ॥

अथ पुण्याहवाचन प्रारम्भः

दो पात्र, एक कलश, तथा षोडशोपचार पूजन सामग्री होना चाहिए। प्रथम स्वति वाचन गणेश पूजन, कलश स्थापन कर पुण्याहवाच्चन के लिये दोनों घुटना तोड़ के बैठे, और दोनों हाथ अपने मस्तक पर कमल के समान बनाकर लगावे ब्राह्मण तीन वार कलश को यजमान के कमल रूपी बने हाथ में दे और यजमान तीन बार मस्तक पर लगावे।

नोट—स्वस्तिवाचनः गणपति पूजन के पूर्व है कलश आवाहन मन्त्र— तत्वायामि ब्रह्मण व्यन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हर्विभिः। अहेडमानो व्वरूणेह वोध्युरुश गूं समानऽआयुः प्रमोषीः॥ इसके बादकलश पूजन करे।

कलश मस्तक पर लगाने का मन्त्र—दीर्घानागानद्योगि रयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणे पुण्याहं दीर्घामयुरस्तु ॥

ब्राह्मण का पूजा करे। ब्राह्मण के कर में जल छोड़े। मन्त्र—शिवा आपः संतु (पुष्प छोड़े) सौमनस्यमस्तु। (अक्षत छोड़े) अक्षतं चारिष्टं चास्तु॥ (गंध) गंधाः पांतु सौमंगल्यं चास्तु। (पुनः पुष्प) पष्पाणि

पांतु सौश्रेयसमस्तु। (पुनः अक्षत) अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु ॥ (ताम्बूल) तांबूला निपांतु ऐश्वर्यमस्तु। (दक्षिणा) दक्षिणा पांतु आरोग्य मस्तु ॥

यजमान द्वारा कहा जाय—दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। श्रीर्यशोविद्याविन योवित्तं बहुपुत्रंचारोग्यं चायुष्यं चास्तु। यं कृत्वा सर्व वेदयशः क्रियाकरण कर्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्तेतमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहवृषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनु ज्ञातं पुण्यं पुण्याहंवाचयिष्ये ॥ इति ॥

ब्राह्मण कहे—द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत नेष्टादृतुभिरिष्य त ॥ सविताव्वासवानं गूं सुवतामग्निर्गृह पतीना गूं सोमोव्वनस्प तीनाम् ॥ बृहस्पति र्व्वाचइन्द्रो ज्यैष्ठाय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणोधर्मपतीनाम् ॥ ॐ नतद्रक्षा गूं सि नपिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमज गूं ह्येतत् ॥ योविभर्तिदाक्षायण हिरण्य गूं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषुकृणुते दीर्घ मायुः ॥ उच्चातेजातमंध सोदिवि सद्भूम्यादवे उग्र गूं शर्म्समहिश्रवः ॥

यजमान कहे—इत्ये ताऋचः पुण्याहे बूयात। इति ॥ व्रतनियमत्तपः स्वाध्याय क्रतुदयादमदान विशिष्ठानां सर्वेषां ब्राह्मणानांमनः समाधीयताम। इति ॥

ब्राह्मण कहे—समाहित मनसः स्मः। इति ॥

यजमान प्रश्न करे—प्रसीतुभवतः इति ॥

ब्राह्मण उत्तर दे—प्रसन्नाः स्मः। इतिः ॥

कलश का जल थोड़ा सा पात्र में निकाल कर दूर्व से यजमान का अभिषेक करे ॥

मंत्र—शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु ऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवं कर्म्मास्तु कर्मसमृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्र पौत्रसमृद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु (भूमि पर छिड़क दे) अनिष्टनिरसनमस्तु ॥ यत्पापं रोगम शुभम कल्याणं तददूरे प्रतिहतमस्तु ॥ इति ॥

प्रथम पात्र में धीरे-धीरे जल गिरावे मन्त्र—यद्यच्छ्रेयस्तदस्तु उत्तरे-कर्मणिनिर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु उत्तरोत्तर: क्रिया: शुभा: शोभना: संपद्यतां तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नसंपदस्तु तिथकरण-मुहूर्त नक्षत्रग्रहलग्नाधिदेवता: प्रीयंताम् ॥ तिथिकर्णे स मुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेतां दुर्गापाचाल्यौ प्रीयेताम् अग्निपुरोगाविश्वे-देवा: प्रीयंताम् इन्द्रपुरोगामरुद्गणा: प्रीयंताम् वशिष्ठपुरोगा ऋषि-गणा: प्रीयंतां माहेश्वरीपुरोगा उमामातर: प्रीयंताम् अरून्धती पुरोगा एकपत्न्य: प्रीयंतां विष्णुपुरोगा: सर्वेदेवा: प्रीयंतां ब्रह्मपुरोगा: सर्वेवेदा: प्रीयंतां आदित्यपुरोगा: सर्वेग्रहा: प्रीयंतां ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयंताम् अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवतीकात्यायनी प्रीयताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् भगवती वृद्धकरी प्रीयताम भगवतो सिद्धिकरी प्रीयताम् भगवती पुष्ठि-करी प्रीयताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् सर्वा: कुलदेवता: प्रीयताम सर्वा ग्राम देवता: प्रीयंतां सर्व इष्ट देवता: प्रीयंताम ॥

दूसरे पात्र में जल गिरावे मन्त्र—हताश्च ब्रह्मद्विष: हताश्च परि-पंथिन: हताश्च विघ्नकर्तार: शत्रव: पराभवं यान्तु शाम्यंतु घोराणि शाम्यंतु पापानि शाम्यंत्वीतय: ॥

पुन: प्रमथ पात्र में जल गिरावे मन्त्र—शुभानिवर्धतां शिवाआप: सन्तु शिव: ऋतव: संतु शिवाअग्नय: संतु शिवाआहुतय: संतु शिवा ओषद्यय: संतु शिवावनस्पतय: सन्तु शिवा अतिथय: सन्तु अहोरात्रेशिवेस्यातां ॥ ॐ निकामेनिकामेन: पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनओषधय: पच्यंतां योग-क्षेमोन: कल्पताम् ॥ शुक्रांगारकबुध बृहस्पतिश्नैश्चरराहुकेतुसोम सहिता आदित्यपुरोगा: सर्वेग्रहा प्रीयताम् भगवान्नारायण: प्रीयताम्भग-वान्स्वामीमहासेन: प्रीयताम् पुरोनुवाक्यायत्पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु प्रात: सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यमस्तु ॥ (यजमान कहे मन्त्र) पुरायाहकालान्वाच-

यिष्ये ।। (ब्राह्मण कहे मन्त्र) वाच्यताम् ।। (यजमान कहे) ब्रह्मं पुण्यमहर्यच्चसृष्ट्युत्पादनकारकम् । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रु वंतु । ॐ पुण्याहम् ।। (ब्राह्मण द्वारा कहा जाय) ॐ पुनंतुमादेवजनाः पुनंतुमनसाधियः ।। पुनंतुव्विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा ।। पृथिव्यामुद्धृयांतु यत्कल्याणं पुराकृतम् ।। ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याण ब्रु नः ।। भोब्राह्मणाः मम सकुटुंवस्पसपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवंतो ब्रु वंतु ।। ॐ कल्याणम् ।। ॐ यथोमांवाचंकल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्या गूं शुद्राय्चार्य्याय च स्वाय चारणाय च ।। प्रियोदेवनांदक्षिणायैदातु रिहभूयाः समयम्मेकामः समृद्धयतामुपमादोनमस्तु ।। सागरस्यतुया ऋद्धिर्महालक्ष्म्या दिभिःकृता ।। संपूर्णसुप्रभावाचतां तामृद्धि ब्रु वंतुनः ।। भोब्राह्मणाः ममसकुटुंवस्यसपरिवारस्यगृहे ऋद्धि भवंतोब्रु वंतु ।। ॐ ऋद्धयताम् ।। ॐ सत्रस्यऽऋद्धि रस्यगन्मज्योतिरमृता अभूम् ।। दिवंपृथिव्या अद्धयरुहामाविदामदेवान्स्वर्ज्योतिः ।। स्वस्तिस्तुया ऽविनाशास्व्या पुरायकल्याण वृद्धिदा ।। विनायप्रियानित्यं तां तां स्वास्तिं ब्रु वंतु नः ।। भोब्रह्मणाः मम सकुटुंवस्य सपरिवारस्य गृहेस्वति भवंतो ब्रु वंतु ॐ स्वति ।। ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धाश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्ताद्‌र्योऽअरिष्टनेमिः स्वतिनोवृहस्पतिर्दधातु ।। मृकंडसूनोरायुयदध्रु वलोमशयोस्तथा ।। अयुषातेन संयुक्ता जीवेमशरदः शतम् ।। जीवंतु भवंतः ।। ॐ शतमिन्नुशरदो अंतिदेवायत्रानश्चक्राजरसंतनूनाम । पुत्रा सोयत्रपितराभवंति भानोमध्यारीरिषतायुर्गंतोः ।। शिवागौरी विवाहे या या श्री रामेनृपात्मजे ।। धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकं सास्तुसद्मनि ।। भोब्राह्मणाः मम सकुंटुंबस्य सपरिवारस्यगृहे श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रु वंतु ।। ॐ अस्तु श्रीः ।। ॐ मनसः काममा कूतिंवाचः सत्यमशोमायि ।। पशूना गूं रुपमन्नस्यरसोयशः श्रीः मयताम्म यिस्वहा ।। प्रजापतिर्लोकपालोधाता ब्रह्मासदेवराट् ।। भगवाच्छाश्वतोनित्यं सनोरक्षतु सर्वतः ।। भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् । ॐ प्रजापतेनत्वदेतन्न्यान्योविश्वरूपाणि परिताबभूव ।। यत्कामास्ते

जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्वपितासावस्य पितावय गूं स्यामपतयोरणांया गूं स्वहा ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमाना यदाशुषे ॥ कृताः सर्वाशिषः संतुं ऋत्विग्भिर्वे दपारगैः देवेन्द्रस्य यथास्वस्तियथास्वस्तिगुरोर्गृहे ॥ एकलिंगेयथास्वस्तिस्तथास्वस्तिः सदामम् ॥ ॐ आयुष्मतेस्वस्ति ॥ ॐ प्रतिपन्थामपदमाहेस्वस्तिगामनेहसम् । येनविश्वाः परिद्विषोवृणक्ति-विन्दतेवसु ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितर्दुरि तानिपरासुव ॥ यद्भद्रं तन्न-आसुव ॥इति ॥

मंत्राक्षत देने का मन्त्र—मंत्रार्थाः सफलः संतु पूर्णाः संतु मनोरथाः ॥ शत्रुणांबुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुमुदयोस्तुनः ॥ ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः । ब्रह्मवक्त्रे स्थितानित्यं निघ्नतु तव शात्रवान ॥ अक्षतान्वि प्रहस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारि तेषा वर्धंते आयुः कीर्तिर्यशोबलम् ॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमा विधात्यवमानं महीयते । धान्यं धनं पशुं वहुपुत्र लाभं शत सम्वत्सरं दीर्घमायुः ॥ धन वान्पुत्र-वान्लक्ष्मीवान्भव ॥

॥ इति दानखण्डोक्त पुण्याहवाचनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वेणीदान विधिः ॥

प्रथम स्त्री तेल अटपन चूर्णी आदि सौभाग्य द्रव्य पहन लगाकर स्नानादि कर नवीन वस्त्र पहने । इसी प्रकार पुरुष भी स्नानादि क्रिया से शुद्ध होकर नवीन वस्त्र पहनकर वेणीदान कर्म करे प्रथम स्वस्ति वाचन, गणपति पूजन व पुण्याहवाचन करे ॥ तदुपरान्त त्रिवेणी तट जाकर गंगा भेट पञ्चअर्ध्य करके गणपति, कैंची, पति-पूजन कर पुरुष स्त्री कि वेणी की पूजा करे । तत्पश्चात् त्रिवेणी नमस्कार कर अपने पतिदेव को नमस्कार करके वेणीदान के लिए स्त्री आज्ञा प्राप्त करे । तब पुरुष वेणीदान करे। अर्थात वेणी काटे ।

(वेणी काटकर स्त्री के हाथ में रक्खे साथ ही पंचरत्न भी रखें तथा कटी हुई वेणी की पूजा कर त्रिवेणी में प्रवाह करे) पुनः स्नान कर श्री त्रिवेणी जी

का पूजन करे।

त्रिवेणी प्रार्थना—ॐ नमस्ते देवदेवावाय शितिकण्ठाय वेधसे,
रुद्राय चापहस्ताय दण्डिने चक्रिणे नमः ॥
सरस्वती च गायत्री वेदमाता गरीयसी,
सन्निधात्री भवत्यत्र तीर्थपापप्रणाशिनि ॥
ॐ नमो गंगे महागंगे महादेवस्यवल्लभे,
वहते त्वां महादेवि भागीरथि नमोस्तुते ॥

स्वस्तिवाचन पढ़े—मंत्र—स्वस्ति नऽन्द्रो० (गणपति पूजन में है)

गणपति पूजन—पूर्वोक्त लिखित विधान से।

गंगा भेट—इदं फल०

पंचाअर्घ्य—पूर्वोक्त लिखित विधान से।

हाथ जोड़ने का मंत्र—ॐ नमस्ते देवाय शितिकण्ठाय वेधसे०

प्रतिज्ञा संकल्प—ॐ विष्णुं विष्णुं विष्णुः मम समस्तपापक्षय द्वारा अखण्डसौभाग्यसंपत्संतति सौख्यादैधः ऐहि कामुष्मिक फलसिद्धये स्वर्गभोगजन्मजन्मनि सौभाग्यादि वृद्धयर्थं ममभर्तुश्च दीर्घायुरा रोग्यादि सर्वकामनासिध्यर्थं वेण्यां वेणी प्रदानमहं करिष्ये।

स्त्री कि वेणी की पूजा करे। हरद गुलाल कुंकुम सेन्धूर आदि से ॥

गणपति कर्त्तरी (कैची) पूजन—मंत्र गणपतिभ्योनमः, कर्त्तरीभ्योनमः आदि मंत्र से।

पतिपूजन करे—पतिदेवताभ्यो नमः ॥ इस मंत्र से

ब्राह्मण से आज्ञा माँगे। मंत्र—मम वेणीप्रदानाधिकारसंपदस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु, अस्तु वेणीप्रदानाधिकार संपत् ॥

पति आज्ञा व प्रार्थना—अपराध सहस्राणि जातानि मम मोहतः।
तत्सर्वञ्च प्रसन्नेन मनसा क्षेतुमर्हसि ॥

त्वत्प्रसादान्मया भुक्ताः स्वामिन्भोगाः सहस्रशः। आनीतास्मिन्प्रयागाख्ये क्षेत्रे काम फलप्रदे ॥ गंगायमुनयोर्यत्र सरस्वत्याश्च संगमः।

वेणी च प्रथिता लोके भाग्य सौभाग्यवर्द्धिनी । तत्र वेणीं प्रयच्छामि यदाज्ञा स्वामिनो भवेत् ॥

वेणी में शीश फूल लगाकर पुरत्र काटे । तथा स्त्री के हाथ में रखकर पुनः कुंकम आदि से पूजन करे । अन्त में वेणी त्रिवेणी में प्रवाह करे । तत्पश्चात दानादि करे ।

वेणी पूजा मंत्र—सुमङ्गलीरियं वधूरिया गूं समेन पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वा याथास्तं विपरेत न ॥

प्रवाह मंत्र—वेण्यां वेणी प्रदानेन मम पापं व्यपोहतु ।
जन्मान्तरेष्वपिसदासौभाग्यंममवर्द्धताम् ॥

प्रवाह कर तीर्थ पुरोहित का पूजा कर वंशपात्र दान करे । वंशपात्र में सौभाग्य की सामग्री रखे ।

(प्रथम प्रतिज्ञा संकल्प) ॐ विष्णों २ विष्णुः.........सौभाग्यभिवृद्धये वंशपात्र दानमहं करिष्ये ।

(दान संकल्प) इदं वंशपात्रं ससुवर्णं सौभाग्यद्रव्य सहितं सदक्षिणाकं वेणीमाधवस्वरूपिणे तीर्थगुरवेऽमुकशर्मणेतुभ्यमहं सम्प्रददे ॥

हाथ जोड़े—वंशपात्रमिदं श्रेष्ठं सौभाग्याष्टकसयुनम् ।
वंशानामुत्तमं दानमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

(तीर्थ गुरू कहें) देवस्या त्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । प्रतिगृह्यताम्, प्रति गृह्णामि ॥ कोदात कस्मा अदात कामोऽदात कामायादात कमोदाता कामः प्रतिगृह्ता कामैतते ॥

(सांगता भूयसी) अद्य कृतस्य कर्मणः साङ्गतासिद्व्यर्थं भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ॥

जल छोड़े—अनेन वेण्यां वेणीप्रदानेन कृतेन
श्री वेणीमाधवः प्रीयताम् न मम् ॥

पुनः प्रणाम करे—यस्य स्मृत्या नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । नूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम ॥

इसके बाद पेटारिका दान करें ।

संकल्प—ॐ विष्णों २ विष्णुः.........एवं गुणविशेषण विशिष्टायां

शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽहं ममुकनामाहं सौभाग्यादिवृद्धयर्थं श्री वेणीमाधवदेवता प्रीत्यर्थं पेटारिकां सौभाग्यसामग्रीसहितां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ॥ इति वेणी माधव देवता तर्पणमस्तु ॥ यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन संकल्प करे।

पुनः स्नान कर त्रिवेणी पूजा करे ॥

॥ वेणी दान सामग्री ॥

छालीमाला ।	हरिद्रा ।	जोडी ।
चूड़ी ।	अबीर ।	मणी ।
धोती ।	रोरी ।	नथ ।
अगौछा ।	बुक्का ।	सीसफूल ।
नारियल ।	गंध ।	वंश पात्रदान (वायनदान
कंघी ।	अक्षत ।	वायनदान महादक्षिण ।
ऐना ।	पुष्प ।	कतरनी (कैंची)
डिब्बीर ।	धूप, दीप ।	विरोधी ।
सुगन्ध तेल ।	नैवेद्य ।	मंगलसूत ।
चोली पातल ।	ताम्बूल, सुपारी ।	विगुडी ।
सूप ।	ऋतुफल पंचमेवा ।	वेणीदान महादक्षिण
	पेटारी	तथा तीर्थगुरु पोशाग ।

॥ इति वेणी दान विधिः ॥

श्री गङ्गा पूजा विधिः

यथा विधि स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनकर कुश आदि किसी पवित्र आसन पर गङ्गा की ओर मुह करके बैठे। पवित्र आचमन कर गणेश तथा इष्ट देवता भगवान विष्णु आदि का ध्यान करके हाथ में कुश अक्षत जल लेकर संकल्प करे।

संकल्प मन्त्र—ॐ विष्णॊ-विष्णॊ विष्णुः...... अद्यामुकगोत्रा सपुत्रादिपरिवारा अमुकनाम्नीदेव्यहं जन्मजन्मातरज्ञाताज्ञातवाङ्मनः

कायविहितानेकविधदुरितनिकर निराकरण पूर्वक श्रुतिस्मृतिपराणाभिहि-तोभयलोकोत्तमपादवाप्तये श्रीगंगा समर्चयिष्ये ॥

ध्यान मन्त्र—सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्राम् ।
करधृतकलशाब्जाभीत्यभीष्टार्थमुद्राम् ॥
हरिहरविधिरूपामिन्द्रकोटिप्रकाशाम ।
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं चिन्तयामि ॥

॥ तदन्तर प्रयागाष्टक पढ़े ॥

आवाहन करे मन्त्र—चतुर्भुजां प्रसन्नास्यां भक्तानामभयप्रदाम्,
हरमौलिकृतावासां गङ्गामावाहयाम्यहम् ।

आसन देने का मन्त्र—सुवर्णमणिभिर्दिव्यैरर्चिते देवनिर्मिते,
रत्नपद्मासनेस्निग्धे गङ्गे वस यथासुखम ।

पाद्य प्रदान करने का मन्त्र—पादोदकमिदं मध्यं सुवर्णकलशेस्थितम्,
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भागीरथि गृहाण भोः ।

अर्ध्य देने का मन्त्र—अष्टद्रव्यसमायुक्तं स्वर्णपात्रेऽभिमन्त्रितम्
अर्ध्यं गृहाण गंगे त्वं प्रसीद वरदाभव ।

आचमन मन्त्र—देवि देवि नमस्तुभ्यं भागीरथि नमोनमः,
मयानीतमिदं तोयं गृहाणाचमनीयकम् ।

पञ्चामृत स्नान मन्त्र—पयोदधियुतञ्चैव शर्करामधुपञ्चमम्,
एतैः पञ्चामृतैर्भक्त्या देवि त्वां स्नापयाम्यहम् ।
नदीनां चैव सरसां मयानीतं जलं शुभम्,
एलालवङ्गगन्धाढ्यं स्नाहि मातर्नमोऽस्तुते ।

वस्त्रधारण मन्त्र—वस्त्रयुग्म समानीतं पट्टसूत्रेणनिर्मितम,
सुवर्णसदृशं भास्वत्परिधेहि स्वरापगे ।

वेणीसूत्र मन्त्र—कर्पासतन्तुरचितं कार्तस्वरविभूषितम्,
वेणीसूत्रमिदं गंगे गृहाण परयामुदा ।

अलङ्कार मन्त्र—रत्नकुण्डलकेयूरकाञ्ची हीराङ्गुलीयकम्,
समर्पितमिदं मातरलङ्कारमुरीकुरु ।

चन्दन मन्त्र—मलयाचलसम्भूतं कस्तूरीकेसरान्वितम्,
कर्पूररेणु संमिश्रं गंगेऽङ्गीकुरु चन्दनम्।

कुंकुम मन्त्र—सुरक्तं कुङ्कुमं दिव्यं भालशोभाकरं परम्
भागीरथि मयादत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।

अक्षत मन्त्र—मुक्ताफलस्वच्छतरान्नक्षतान सूरपूजिते,
गृहाण गुणगम्भीरे देवि सौभाग्यदायिनि।

पुष्प मन्त्र—मल्लिकामालतीजाती कुन्दचम्पकपङ्कजैः,
रचिता चारु मालेयं गृह्यतां जन्हुकन्यके.

धूप मन्त्र—वनस्पतिरसोद्भूतो दशाङ्गागरुमिश्रितः,
महागंगे मनोहारी धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।

दीप मन्त्र—गोघृतेन समाक्ताभिः शुद्धकार्पासवर्तिभिः,
गृहाण रचितं गंगे दीपं लोकप्रकाशकम्।

नैवेद मन्त्र—देवतालय पातालभूतलाधार धान्यजन्म्,
आस्वादयेदं नैवेद्यं सितागोरसकल्पितम्।

ताम्बूल मन्त्र—सचूर्णखदिरैः पूगीलवङ्गै लाफलैर्युतम्,
सुधाबिन्दूद्भव गंगे ताम्बूलं परिगृह्यताम्।

दक्षिणा मन्त्र—हिरण्यगर्भगर्भस्थ हेमबीजं विभावसोः,
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

नीराजन कपूर आरती—भागीरथि नमस्तेऽस्तु ज्योतिरुपे सुरार्चिते,
नीराजनमिदं पश्य बहुवर्ति सुशोभितम् ॥

पुष्पाञ्जलि मन्त्र—नन्दने यानि पुष्पाणि यानि चैत्ररथे वने,
गंगे तैः पूजयामि त्वां गृहाण कुसुमाञ्जलिम।

नमस्कार मन्त्र—नमो नमस्ते हरिपादपद्मगे,
नमो नमस्ते शिवमौलिकालिके।
नमो नमस्ते मुनिदेवसेविते,
नमो नमस्ते शरणागतप्रिये ॥

क्षमा प्रार्थना मन्त्र—गंगे भगवति गंगे गंगे वरप्रदे गंगे,
ज्ञानाद्वाकृतमज्ञानादपराधं क्षमस्व मे ।

॥ प्रार्थना ॥

नमोऽस्तु ते दीनमयैकसिन्धो,
नमोऽस्तुते जाह्नवि दीनवन्धो ।
पापाहि गंगे भुवि मां पुनीहि,
मातर्मदीयं कलुषं लुनीहि ॥

नोट :—गंगा लहरी का पाठ करे ।

॥ इति गंगा पूजा विधिः ॥

॥ अथ श्री वेणीमाधव पूजा प्रारम्भः ॥

(पवित्र आचमन प्राणायाम करके)

गणपति ध्यान—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः, लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः । धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भालचन्द्रो गजाननः, द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते । शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णंचतुर्भुजम प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये । अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः । वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ, निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा । सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलंम् येषां हृदिस्थो भगवान मङ्गलायतनो हरिः तदेव लग्न सुदिन तदेव, तारावलं चन्द्रवलं तदेव, विद्यावलं दैववलं तदेव, लक्ष्मीपते तेंघ्रियुगं स्मरामि ।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः,
तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम् ।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मशान जनार्दनाः ।

लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, उमामहेश्वराभ्यां नमः, शचीपुरन्दराभ्यां नमः, वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः, मातापितृभ्यां नमः, इष्टदेवताभ्यो नमः, कुलदेवताभ्यो नमः ग्रामदेवताभ्यो नमः स्थानदेवताभ्यो नमः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ॥

त्रिवेणी माधवं सोमं भरद्वाजञ्च वसुकिम्,
वन्देऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम् ॥

प्रयागाष्टक पाठ करे पूर्व में लिखा है तदन्तर संकल्प करे ।

संकल्प—ॐ विष्णो विष्णो विष्णुः श्री मद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलयुगे कलिप्रथमचरणे भरतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीप आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे श्रीविष्णुःप्रजापतिक्षेत्रे षटकूलमध्ये अन्तर्वेद्यां भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे कालिन्द्या उतरे तीरे वटस्यपूर्व दिग्भागे सोमेश्वर सन्निधौ विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकमासे-अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्र अमुकराशिस्थिते चन्द्रे यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशेषणविशिष्टयां पुण्यतिथौ मम सकुटुंम्बस्यायुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्धयर्थं पुत्रपौत्राद्याभिवृद्धयर्थं शान्त्यर्थं पुष्ट्यर्थं निर्विघ्नार्थं चतुर्विधिपुरुषार्थसिध्यर्थञ्च मम समस्त पाप क्षयार्थम प्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्मीसंरक्षणार्थं श्रीवेणीमाधवप्रीत्यर्थं यथामिलितोप चारद्रव्यैः षोडशोपचार पूजनमहं करिष्ये ॥

आसन के नीचे एक कुश रक्खे तथा आसन पवित्र करने के लिए मंत्र पढ़े ॥ विनियोग पढ़कर जल छोड़ दे ॥

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरूपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः कूर्मोदेवता आसने विनियोगः ।

मंत्र पढ़कर जल आसन पर छोड़े—ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता त्वञ्च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

न्यास करे—ॐ आगुष्ठाभ्यां नमः, ह्रीं तर्ज्जनीभ्यां नमः, क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ऐं अनामिकाभ्यां नमः, सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, त्रिवेण्यै नमः, करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः श्रीं हृदयाय नमः ह्रीं शिरसे स्वहा, क्लीं शिखायै वषट्, ऐं कवचाय हुं, सौं नेत्रत्रायय वौषट्, त्रिवेण्यै नम अस्त्रायफट्, वेणीमाधवाभ्यां नम इति दिग्बन्धः, लक्ष्म्यै नमः शिरसि परायै नमो ललाटे, कामायै नमो भ्रुवोर्मध्ये (भव मध्य) वाग्वीजायै नमो मुखे, मायायै नमो नेत्रयोः, भुवनेश्वर्यै नमो दक्षिणनासिकायाम् पद्मायै नमो दक्षिणकर्णे, विन्ध्यै नमो वामकर्णे, शक्रायै नमः कपोले (गाल) मायायै नमो जिह्वायाम्, विपत्यै नमो दन्तपंक्तौ, निकारायै नम ऊर्ध्वोष्ठ, मन्मथायै नम अधरोष्ठे, हकारायै नमस्तालु मूले, पृथिव्यै नमः कण्ठे, लज्जायै नमः स्कन्धयोः, ब्राह्म्यै नमो वक्षुद्वये योन्यै नमो वक्षसि, तुरीयायै नमो हृदये मंदिन्यै नमो नाभौ, मायायै नमो पार्श्वयोः (कोख) लज्जायै नमो गुह्ये, वाग्वीजायै नमो मूलाधारे कामायै नमो ऊर्वो, परायै नमो जानुद्वययोः रमायै नमः पादयोः ।

तत्पश्चात प्रार्थना—स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्
तावत्वं प्रीतिभावेन गङ्गायां सन्निधो भव ।
स्थिरो भव, वरदो भव, सुमुखो भव, शान्तो भव, सुप्रतिष्ठितो भव ।।

लोटा में गन्ध अक्षत पुष्प छोड़े मंत्र द्वारा । मंत्र—कलशदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।।

ऐसा करके हाथ जोड़े मंत्र—कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः । कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा, ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथवर्णः । अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः अत्रगायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी तथा । आयान्तु देव पूजार्थमभिषेकार्थ सिद्धये, गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु ।

इसी प्रकार शंख की पूजा करे मंत्र—शंखदेवताभ्यो नमः गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

हाथ जोड़े—शङ्खं चन्दार्क दैवत्यं मध्ये वरुणदेवता ।
पृष्ठे प्रजापतिश्चैव अग्रे गंगा सरस्वती ।।
दर्शनेचापि शङ्खश्च स्पर्शने पापनाशनम् ।
अघोर पापनिर्मुक्तं बासुदेवस्य जाज्ञियात् ।।

घन्टा पूजा—घण्टादेवताभ्यो नमः गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।।

हाथ जोड़े—आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् कुरु घन्टेर वं तत्र देवताह्वानमेव च ।। अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।

पूजा वाले लोटा के जल में धेनु मुद्रा दिखावे और उसी जल से शंख को भर कर शंखमुद्रा दिखावे तथा उसी शंख के जल से अपने ऊपर और समस्त पूजन सामग्री के उपर जल छिड़के ।

मन्त्र—अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा । यः स्मरेत् पुडरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

ध्यान मन्त्र—नवाम्बुदसमद्यतिं विविध भूषणा भूषितम् ।
सुगौरवसनावृतं सकलदेवता संस्तुतम् ।।
भुजैर्धृतमहायुधं रथपदं गदांपङ्कजम् ।
प्रयागनिलयं सदा मनसि माधवं भावयेत् ।।
सितासितसमद्युतिं त्रिनयनां विचित्राम्बरां,
दरदयुत चतुर्भुजां सकलचन्द्रबिम्बाननाम् ।
समस्त कमितप्रदां सकलदेवताराधिताम् ,
प्रयागनीलयां सदा मनसि वेणिकां भावयेत ।।

आवाहन मन्त्र—आगच्छनन्तदेवेश केशवाच्युतमाधव,
गृहाणमत्कृतां पूजां त्रिवेण्या सहितप्रभो ।।

आसन मन्त्र—नानामणिगणाकीर्णं जाम्बूनद विभूषितम् .
सिहासनसमानेदं त्रिवेण्यासहितप्रभो ।
त्रिवेणीमाधवाभ्यां नमः ।।

पाद्य—शीतलं निर्मलं स्वादु गन्धाक्षत समन्वितम्,
पाद्यं गृहाण देवेश त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
अर्घ्य—गंगाजलं समानीतं सुवर्णकलशेस्थितम्,
अर्घ्यं गृहाण देवेश त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
आचमन—मलयाचलसम्भूतं घनसार मनोहरम्,
गृहाणाचमनं देव त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
स्नान—गङ्गा गोदा गोतमी च कावेरी सरयू तथा,
स्नानार्थं ते मयाददत्तं त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥

दूध स्नान—क्षीरोदतनयानन्त क्षीरोदतनयाप्रिया,
क्षीरोदागार हृदयं क्षीरं स्नानाय गृह्यताम् ।
पयस्नानं समर्पयामि ॥ ओ पयः पृथिव्याम्पय०
दही स्नान—जगदेतदधौक्षत स्वं ददाति जगतां हितम्,
दधिवामनरूपेण दधि स्नानाय गृह्यताम् ।
दधिस्नानं समर्पयामि ॥ ओं दधिक्राव्णो०
घी स्नान—घृतकुम्भससायुक्तं घृतयोने घृतप्रिया ।
घृतभुकघृतधामासि घृतस्नानायगृह्यताम् ॥
घृतस्नानं समर्पयामि ॥ ओं घृतस्मि०
सहत स्नान—मधुरुपोवसन्तस्त्वं त्वमेव जगतां मधु ।
मधुसूदनसंप्रीत्या मधुस्नानाय गृह्यताम् ॥
मधुस्नानम समर्पयामि ॥ ओं मधुव्वाता०
शर्करा चीनी—गंगायमुनयोः संगनिर्मलं स्वादुशीतलम् ।
स्नानार्थन्ते मया दत्तं त्रिवेण्यासहित प्रभो ॥
षष्ट गंधोदक स्नानंसमर्पयामि ॥ ॐ अपागूं०
शुद्धोक स्नान—नारायण नमस्तेस्तु नरकार्णवतारक ।
गंगोदकं समानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
शुद्धोकस्नानं समर्पयामि ॥

पंचोपचार पूजन करके जल छोड़े ।

मन्त्र—अनेनपंचामृतपूजनाख्येनकर्मणा श्री भगवान वेणीमाधव प्रीयेतां ॥

महिम्न स्तोत्र से वेणीमाधव जी का अभिषेक करे। अभिषेक करके। पुनः पूजन करे।

आचमन स्नान—गंगोदकमिदं दिव्यं हेमभाजनमण्डितम्।
गृहाणाचमनं स्वामिन् त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
आचमनीयं समर्पयामि ॥

वस्त्र—पीताम्बरधरोसि त्वं दत्तं पीताम्बरं मया।
गृहाणमाधवस्वामिन् त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
वस्त्रं समर्पयामि।

पुनः आचमन—यामुनं विशदं दिव्यं यमबाधानिवारणम्।
उत्तरीयं मया दत्तं त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
उत्तरीयं वस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीत—श्रौतस्मार्त क्रियाधारं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्।
ब्रह्मसूत्रमिदं श्रेष्ठं गृह्यतां माधवप्रभो। यज्ञोपवीतं समर्पयामि
यज्ञोपवीत के पश्चात द्वि आचमन ॐ केशवाय नमः ॐ माधवाय नमः ॥

छन्दन—मलयाचलकर्पूरं कस्तूरी केशरान्वितम्।
गृहाण चन्दनं देव त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥ चन्दनं समर्पयामि।

हरिद्रा—हारिणीं विष्णुमनसो मुखपंकजकारिणीम्।
हरिद्रां त्वं गृहाणेयं त्रिवेण्यखिलवन्दिते ॥ हरिद्रां समर्पमामि।

कुंकुम—सौभाग्यध्वजरूपोयं श्रीसत्स्वर्वार्थ साधनम्।
कुंकुमन्ते मय दत्तं गृहाणसुरवन्दिते ॥ कुंकुमं समर्पयामि।

अक्षत—अक्षताः परमा दिव्याः सर्वकामफलप्रदाः।
पूजा संरक्षणार्थाय अक्षतान्प्रतिगृह्यताम् ॥ अक्षतन समर्पयामि।

तुलसी पत्ती१—मल्लिकामालतीजाती कुन्दकल्हार पङ्कजम्।
तुलस्यन्तं गृहाणेश त्रिवेण्यासहित प्रभो ॥ तुलसीपत्र स०

तुलसीदलवपुष्पसहित—माल्यादीनिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्। पुष्पं समर्पयामि ॥
केशवादि द्वादशनामाभिः पुष्पाणि तुलसी दलानि समर्पयेत् ॥

धूप—बनस्पत्योरसोधूपो गन्धाढ्यो गन्धउत्तमः।
सर्वदेवानां धूपोयम्प्रतिगृह्यताम् ॥ धूपं समर्पयामि ॥

दीप—साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्यादीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहिमां नरकात घोरात दीपज्योति नमोस्तुते ॥ दीपं समर्पयामि।

नैवेद्य—नैवेद्यं गृह्यातां देव भक्तिमेह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम् ॥
अन्नं चतुर्विधिस्वादु रसषड्भिः समविन्तम।
भक्त्या निवेदितं चारु प्रीत्यर्थं प्रतिगह्यताम् ॥
भक्ष्यभोज्य महानैवेद्यं समर्पयामि ॥

पुनः आचमन—ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः
हस्तौ प्रक्षाल्य हाथ धो डाले ॥

ताम्बूल—पुंगीफलमहद्दिव्यं नागवल्यादलैर्युतम्।
चूर्णं कर्पूरसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ताम्बूलं समर्पयामि

दक्षिणां—हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभासोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥
सुवर्णपुष्पदक्षिणां समर्पयामि ॥

फल—इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
फलेन फलितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम।
तस्मात्फलप्रदानेन सफलाञ्च मनोरथोः ॥
पूर्णफलं समर्पयामि ॥

कर्पूर आरती—घृतवर्ति समायुक्तम ज्ञानध्वान्तनाशनम्
दीपं गृहाण दिव्याभं त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
उत्तर नीरांजन दीपं समर्पयामि ॥

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ प्रदक्षिणां समपयामि ॥

मंत्र पुष्पांजलि—नाना पुष्पैश्च पत्रैश्च नानावर्णैः सुगन्धिभिः
पुष्पाञ्जलिमर्पयामि त्रिवेण्यासहितप्रभो ॥
मन्त्रपुष्पांजलिं समर्पयामि ॥

पुनः प्रदक्षिणा—पदे पदेऽघविध्वन्सिन्सर्वकामार्थदं नृणाम् ।
प्रदक्षिणां करिष्यामि त्रिवेण्यासहित प्रभो ॥
प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥

नमस्कार—श्री माधवदयासिन्धो भक्तिकामार्थ पूरक ।
त्राहिमां शरणं प्राप्तः पाहिमां दीनवत्सलः ॥
भ्रामित्वं सर्वदेशेषु दुःखमूलेषुदुःखितः ।
प्रणमामि पदं युग्मं यथेप्सितं तथा कुरु ॥
अनादिमध्य निधनद्रवद्ब्रह्मस्वरूपिणे ।
आदिमध्यांतहीना त्वं तीर्थराजो विराजसे ॥
मन्त्र तंत्र क्रियाहीनं पूजनं यन्मया कृतम ।
सफलं कुरु तत्सर्वं त्रिवर्णी जगदम्बिके ॥
नमस्कारान्समर्पयामि ॥

प्रार्थना—

नमो नमोऽक्ष्यवटाधिवास नमो नमो भक्त मनोनिवास ।
नमो नमस्तीर्थ सुताधिवास नमो नमस्तेस्तु जगन्निवास ॥
प्रयागराजेति विराजितायै देवर्षिसिद्धोरगसंस्तुतायै ।
धर्मार्थ कामादिषु चार्थ दायै नमस्त्रिवेण्यै जगदम्बिकायै ॥
माघे मृगोर्के निजमज्जनात्सुपदप्रदायै कमितप्रदायै ।
केनाप्युयेन च संगतायै देहावसानेह्यमृत प्रदायै ॥

श्री जाह्नवी भानुसुता सरस्वती योग त्रिवेणी त्यमिधागतायै ।
विरंचिवागीशपदप्रदायैं नमस्त्रिवेण्यै जगदम्बिकायै ।।
यथाशक्ति यथाज्ञानं कृतं पूजन कर्मयत ।
प्रीयतान्तेन मे देवौ त्रिवेणीमाधवौ सदा ।।

इति पद्मपुराणे पातालखण्डे श्री वेणी माधव पूजन विधिः ।। श्री वेणी माधवार्पणमस्तु

इति वेणी माधव पूजा विधिः ।।

।। सेतु क्षेप विधिः ।।

प्रथम शुद्ध होकर आचमन प्राणायाम गणपतिध्यान प्रतिज्ञा संकल्प सेतू प्रायश्चित कर ताम्रपात्र में सेतु निकाल कर सहत से सानकर लिंग रुद्र सूक्त पाठ के द्वारा निर्माण कर प्राणप्रतिष्ठा करे। तथा पंचामृत स्नान तदनन्तर पञ्चोपचार पूजा गर्भाधान आदि पञ्च संस्कारों के पूर्ति के लिए पन्द्रह बार गायत्री जप। अङ्गन्यास ध्यान तर्पण पुरुष सूत के द्वारा रुद्राभिषेक, के पश्चात उत्तर पूजनषोडशोपचार प्रार्थना गोदान पुनः प्रार्थना यथाशक्ति मंत्र जप के अन्त में क्षमा प्रार्थना कर विर्सजन करे।

गणपति ध्यान—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः,
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननांशो विनायकः ।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः,
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा,
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्,
प्रसन्नवदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोपशान्तये ।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः,
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्य कोटि समप्रभ,

अविघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सवार्थसाधिके,
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।
अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः,
सर्वविघ्नहरस्तस्यै गणाधिपतये नमः ।।

प्रतिज्ञा संकल्प—विष्णों-विष्णों विष्णुः........ अमुकगोत्रोत्पन्नः शर्मा सपत्नीकोऽहं ममशाश्वतब्रह्मलोक प्राप्तिकामनया श्री सेतु माधवप्रीत्यर्थं मयाकाकुत्स्थनिर्मितसेतुबन्ध गङ्गोत्तरीतीर्थानीतं गङ्गाद्भिः स्नावितं श्री रामेश्वरलिंगं यथाशक्त्याकृत सेतूयात्रासेतु सिकताकणसम-संख्यामचलशिवप्रतिष्ठाफल संपूर्णतायै उभयसागरसंगमानीतसिकता निर्मितलिङ्गस्य शिवकलासान्निध्यर्थं रुद्र यामलोक्तविधिना अर्चनपूर्वक-मस्मिन् तीर्थराजे सितासितसंगमे सेतुनिक्षेपाख्यं कर्म करिष्ये ।

सेतु प्रायश्चित संकल्प मन्त्र—मार्गे धूम्रशकटादि चाण्डालादि हीन जातिस्पर्शपरिहारार्थं श्री सेतुमाधवप्रीत्यर्थं कृच्छ्रत्रय प्रायश्चित्तं तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

सेतु पात्र में रखने का मंत्र—मानस्तोके तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ।मानो वीरान्नरुद्रभामिनो वधीर्हविष्मतं गूं सद-मित्वा हवामहे ।

मधु के द्वारा बालू साने मंत्र—मधुवाताऋतायते मधुरक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधिः, मधुनक्तमुतोषस्ते लधुमत्पार्थिव गूं रजः मधुद्यौ-रस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमान्नस्तु सूर्यः, माध्वीर्गावो भवंतु नः ।।

लिंग निर्माण करे रुद्रसूक्त से मंत्र—नमस्तेरुद्र मन्न्यवऽ उतोतइषवे नमः । इत्यादि ।। (पूजासंकल्प करके) प्राण प्रतिष्ठा करें ।

प्राणप्रतिष्ठा मंत्र—ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं सं हं सः शिवस्य जीव इह जीवाः ।

ओं आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः शिवस्य प्राण इह प्राणा शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुश्रोत्र जिह्वाघ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

ॐ मनो जूति र्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्य ज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं समिमं दधातु । विश्वेदेवाऽस इहमादयं तामोम्प्रतिष्ठ ॥

गर्भाधान आदि पंञ्चसंस्कार के लिये पन्द्रह बार गायत्री का जप करे ।

अङ्गन्यास—ॐ ललाटे शिवाय नमः, ॐ कण्ठे रुद्राय नमः, ॐ नभौ विशालायनमः, जान्वोः शङ्कराय नमः । पादयोः सर्वव्यापिने नमः, शिवाय नमः सर्वाङ्गम् ॥

ध्यान मन्त्र—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम । पद्मासीनं समन्तास्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिंवसानं विश्ववाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम ॥

पंचामृतस्नान—ॐ नमो हिरण्यवाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमो नमः । वृक्षभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमो नमः ॥ शष्पिञ्ज रायत्विषे मते पथीनाम्पतये नमो नमः । हरिकेशायो पवीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमः ॥

तर्पण—कुशं तर्पयित्वा शिवं तर्पयामि, भवं तर्पयामि, उग्रं तर्पयामि, रुद्रं तर्पयामि, विरूपाक्षं तर्पयामि, विश्वरूपं तर्पयामि, मृडं तर्पयामि, हरं तर्पयामि, शशिशेखरं तर्पयामि, कपर्दिनं तर्पयामि, शशिशेखरं तर्पयामि, भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि, सर्वस्व पत्नी तर्पयामि, रुद्रस्यपत्नी तर्पयामि, पशुपति देवं तर्पयामि, उग्रस्य देवं तर्पयामि, भीमस्य देव तर्पयामि, ईशानस्य देवं तर्पयामि, महान्तं देवं तर्पयामि ॥

पुरुष सूक्त के द्वारा रुद्राभिषेक :—तत्पश्चात

उत्तर पूजन षोडशोपचार :—

ॐ नमः शिवाय ।

अर्घ्य--ओं ह्रौं ह्रीं जूं सः।

आचमन—ॐ शम्भवे नमः।

स्नान—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररुपेभ्यः। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात। ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥

वस्त्र—जेष्ठायनमः वस्त्रं समर्पयामि ॥

यज्ञोपवीत—रुद्राय नमः यज्ञोपवीतम स० यज्ञोपवीतम परमं० ॥

यज्ञोपवीत द्विराचमनीयं ॐ केश्वाय नमः ॐ माधवाय नमः ॥

चन्दन—ॐ कालाय नमः चन्दनं ॐ गंध० ॥

अक्षत—ॐ कलविकरणाय नमः अक्षतम्। अक्षतान० ॥

वेलपत्र—ॐ शिवाय नमः, रुद्राय नमः, पशुपतये नमः, नीलकण्ठाय नमः, महेश्वराय नमः, हरिकेशाय नमः, विरूपाक्षाय नमः, पिनाकिने नमः, त्रिपुरान्तकाय नमः शम्भवे नमः, शूलिने नमः, महादेवाय नमः ॥१२॥

पुष्प—ॐ भवाय नमः ॐ मल्यादीनि० ॥

धूप—ॐ वलायनमः वनस्पत्यो०

दीप—ॐ वलप्रथमनाय ॐ चन्द्रमा० ॥

नैवेद्य—ॐ सर्वभूतदमनाय नमः ॐ नाभ्या० ॥ (पुनः आचमन ॐ शम्भवे नमः आचमनियं०)

ताम्बूल—ॐ मनोन्मनाय नमः ताम्बूल समर्पयामि।

फल—ॐ फलं अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो की साम्ब० नमः फलं स० ॥

दक्षिणा—ॐ शिवाप्रियायनमः ॐ हिरण्य० ॥

एतानि अर्चनानि०

प्रार्थना—त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्,
उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

नमः पौरुषरूपाय नमोऽक्षरवयुधृते,
नमो नादात्मते तुभ्यं नमो विन्दुकलात्मने।
अलिङ्गलिङ्गरूपाय रूपातीताय ते नमः,
नमस्ते रुद्र भगवन भास्करामिततेजसे।
नमो भवाय रुद्राय उमयासहिताम च,
पशूनाम्पतये तुभ्यं पावकामिततेजसे।
पार्थिवानाचश्च लिङ्गनां यन्मया पूजनं कृतम्,
तेन मे भगवन रुद्रो वांछितार्थ प्रदोभव।
श्री रामेश्वर रामेण पूजितस्त्वं सनातनः,
त्वत्प्रसादात् कृता यात्रा सेतुबन्धस्यशर्मदा।
जय विश्वेशविश्वात्मन भक्तानामभयप्रद,
प्राप्तोमयात्र देवेश यात्रापूर्तिकरोह्यसौ।
आनीतासिकताकृच्छ्रादभयार्णवसंगता,
तत्पूर्त्यै निर्मिष्टं लिङ्गं मधूच्छिष्टेन बालकम्।
पूजनं चात्रदेवेश कृतं तव विधानतः,
तदङ्गी कुरु कामारे सर्वलोकसुख प्रद।
सेतु यात्राकृतायातु वरदो भवशङ्कर॥
अज्ञानादज्ञानतोवापि येऽपराधा मया कृताः
तत्क्षम स्वात्र देवेश करुणामय सागर॥
यथाशक्ति गोदान करे व गोदान सांगता करे।

पुनः प्रर्थना मंत्र—स्वागतं देवदेवेशमद्भक्त्या त्वमिहागतः,
प्राप्तं स्वेन तु मां भक्त्या बालवत्परिपालय।
धर्मार्थ काम सिद्ध्यर्थं स्थिरोभव शुभायनः,
सन्निध्यं सर्वदादेव क्षेत्रेऽस्मिन वै प्रयागके।
यावचन्द्रश्च सूर्यश्च यावतिष्ठति मेदिनी,
तावत्वयात्र देवेश ह्ययं भक्त्यानुम्प्यताम्।
भगवन देव देवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम्,

येन रुपेण देवेश स्थेयमत्र जगत्पते ।
आनीतोदूरतः स्वामिन् यथाशक्त्या सुपूजितः,
यात्रापूर्त्यैतुं गङ्गायाः सलिले वै प्रवाहितः,
अत्र वासस्त्वया देव कार्यः सर्वसुखावह ॥

त्रुटि क्षमा प्रार्थना—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

विसर्जन मंत्र—ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महादेवाय नमः ।
ॐ ईशानः सर्व विद्यानामोङ्कारो भुवनेश्वरः ।
कैलासं गच्छा देवेश पुनरागमनाय च ॥
अनेन पूजनेन श्री सेतुमाधवौ प्रीयेताम् ॥

इति सेतु क्षेप विधिः

॥ अथ भुज्जी विधिः ॥ विष्णु प्रीतये

नोट—पाठकगण बंगला भाषा के कर्म में जो शब्द लिखे हैं उसका उच्चारण पढ़ने में मात्र भाषा अर्थात् संस्कृत पर ही ध्यान देंगे । क्योंकि बंगला कर्म का लेख बंगला भाषा के उच्चारण स्वरूप लिखा है ।

भुज्जी दो प्रकार कि होती है । प्रथम तो पितरो के लिए द्वितीय स्वयं विष्णु प्रीतये । पितरो वाली भुज्जी श्राद्ध के पूर्व होती है । भुज्जी में चार प्रकार का दान होता है ।

अन्न, वस्त्र, जलपात्र, ताम्बूल ।

॥ भुज्जी सामग्री ॥ चावल, दाल, घी, फल, ताकारी, पान, सुपारी, धोती, अगौछा, जलपात्र, दक्षिण ॥ आदि ॥

शुद्ध मंत्र—ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा । यः स्मेरत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

आचमन मंत्र—ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः ॐ हृषीकेशाय नमः ॥

नमस्कार—ॐसोमं राजान वरुण अग्निरुग्ना हवामेह ॥ आदित्यं

सूर्य विष्णु ब्रह्माणं च वृहस्पतिं ॥ ॐ स्वति ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्ति ॥

पुनः अक्षत लेकर नमस्कार करे—ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्ति न स्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पति र्दधातु ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ स्वस्ति ॥

ॐ सूर्यः सोमो जमः कालं संन्धि भूतानिहः खपाः ॥ पवंनादिग पतिभूमीराका संख चरामरा ॥ ब्राह्मश्वा सनमास्थाय कल्पःद्रुमिह संन्निधिं ॥ ॐ पुन्याहं ॥ ॐ पुन्याहं ॥ ॐ पुन्याहं ॥

प्रार्थना मन्त्र—ॐ संख चक्र धर विष्नु द्विभुजं पतिवाससं ॥ प्रारम्भे कर्म विघ्र पुंडरीकः शरद्धरिं ॥ सर्व मंगल मागल्यं वरेण्य वरदशिवं ॥ नारायण नमस्कृत सर्वकर्माणि कारयेत ॥ ॐ कुरू क्षेत्रे गया गंगा प्रभासे पुस्कराणि च ॥ तीर्थन्नेत्तानि पुंण्यानि दान काले भवंतिह ॥

जल पात्र में पुष्प छोड़ने का मंत्र—१ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे गणेशादि पंच देवताभ्यो नमः ॥ २ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे सूर्यादि नवग्रह देवताभ्यो नमः ॥ ३ ये ते गंन्ध पुष्पे इन्द्रादि दश दिगपालेभ्यो नमः ॥ ४ ॐ गंन्ध पुष्पे श्रीं नारायणाय नमः ॥ ५ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे श्री गुरुवे नमः ॥

पात्र का जल घुमाने का मंत्र—अखंड मंडला कारं व्याप्तयेन चराचरं । तत्पदंदर्शितं येन तस्मै श्री कुरूवेनमः ॥

सूर्य नमस्कार मंत्र—ॐ जवा कुसुम संका संकाष्यपे यमहः घृतो । ध्वान्ताघ्न सर्व पापघ्नं प्रणतोस्मिदिवाकरं ॥ श्री सूर्याय नमः ॥

जल में फूल छोड़े मंत्र—१ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे तेज सा धार गंगोदकाय नमः ॥ २ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे दधि पतये देवाय श्री विष्णवे नमः ॥ ३ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे संप्रदनाय ब्राह्मणाय नमः ॥ सुप्रोक्षितानि संन्तु ॥ ॐ विष्णु पुनातु ॥

संकल्प—ॐ तत्सत ॐ नमोऽद्य अमुकमासे अमुकपक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रः श्री अमुकदेव शर्मा अमुकगोत्राणां

पितरो को देना हो तो—पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुक देव शर्मा द्वितीय गोत्र माता मह प्रमातामह वृद्धः प्रमातामहः अमुक देव

शर्मा प्रयाग तीर्थ प्राप्त निमित्तक स्वर्ग कामयेतत्तेतेजसा धार गंगोदकं गन्धार्चितं श्री विष्णु दैवतं यथा सम्भव गोत्राय अमुक नाम्ने ब्राह्मणाय अहं ददानि ॥

अन्नदान मन्त्र— ॐ ये ते गंध्न पुष्पे स घृत सोपकरण यज्ञ सूत्र आमान्नं भुञ्जायनमः ॥१॥ ॐ ये ते गंध्न गंध्न पुष्पे दधिपतये देवाय श्री विष्णवे नमः ॥२॥ ॐ ये ते गंध्न पुष्पे संप्रदानाय ब्राह्मणायनमः ॥३॥ सोप्रोक्षितानि संन्तु ॥ ॐ विष्णुः पुनातु ॥४।

संकल्प— ॐ तत्सत । ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रः श्री वारपुर्षेनाम अमुक देव शर्मा । येतत्तेसघृत सोपस्कर यज्ञ सूत्र आमांन्नभुञ्यं गंन्धार्चितं श्री विष्ण दैवतं यथा सम्भव गोत्राय नाम्ने ब्राह्मणाय अहंददानि ।

वस्त्रदान मन्त्र— ॐ ये ते गंध्न पुष्पे तेजसाधार वस्त्राय नमः ॥१॥ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे दधिपतये देवाय श्री विष्नवे नमः ॥२॥ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे संप्रदानाय ब्राह्मणाय नमः ॥ सुपोक्षितमस्तु ॥ ॐ विष्णुःपुनातु ॥३॥

संकल्प— ॐ तत्सत । ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्र श्री द्वादश पित्रेरनाम । देव शर्मा एतते कार्पासवस्त्रं गंधार्चितं श्री विष्नु दैवतं यथा सम्भव गोत्राय नाम्ने ब्राह्मणाय अहं-ददानि ॥

ताम्बूलदान मन्त्र— ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे तेजसाधार ताम्बूलाय-नमः ॥१॥ ॐ ये ते गंध पुष्पे दधिपत्तेये देवाय श्री विष्णवे नमः ॥२॥ ॐ ये ते गंन्ध पुष्पे संप्रदानाय ब्राह्मणाय नमः ॥ सुप्रोक्षितमस्तु ॥ ॐ विष्णु पुनातु ॥३॥

संकल्प— ॐ तत्सत ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्र श्री वारः पुर्षेनाम् । अमुक देव शर्मा ॐ एतत्ते तेजसा-धार तांबूलं गंन्धार्चितं श्री विष्णु दैवतं यथा सम्भव गोत्राय नाम्ने ब्रह्मणाय अहंददानि ॥

सांगता संकल्प—ॐ तत्सत ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रः श्री वारः पुर्षेनाम् । अमुक देव शर्मा कृतै तत अंन्न जल वस्त्र तांबूल दानकर्म सांग्यतार्थं दक्षिणां कांचन मूल्यं ताम्र-खंडं गन्धार्चितं श्री विष्णु दैवतं यथा सम्भव गोत्राय नाम्ने ब्राह्मणाय अहंददानि ॥

प्रार्थना—अन्नदानात्परं दानं नभूतो न भविष्यति । अन्नात्रपात रिक्षस्य न कालं नियमः कचित '। अन्नं प्रतिष्ठिता लोके अन्न मायु प्रकीर्तिता । तस्मात् अन्न प्रदानेन प्रीयतां मे जनार्दनां ॥ प्राणिनः प्राणिनं चैव प्राणिनः पावनमहत् । यानि तस्य प्रदानेन प्रीयतां मे न साश्वतिं ॥

ॐ कृतै तत अन्न जल वस्त्र तांबूल दान कर्मा छिद्रमस्तु ॥

संकल्प कर जल छोड़े एतानादि जैसा—

ॐ तत्सत ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ । अमुक गोत्र श्री निजनाम अमुक देव शर्मा कृतेस्मिन् अन्न जल वस्त्र तांबूल दान कर्मणि जनितं यद्य द्वैगुण्यं जातं द्वोषप्रशुमनाय श्री विष्णुनाम स्मरणमहं करिष्ये ॥

पुनः हाथ जोड़े प्रार्थना करे ।

यत्सांङ्गं कृतं कर्म जांनता वाप्य जांनता । सांङ्गं भवति तत्सर्वं श्री हरिर्नामकीर्तनात् ॥ ॐ श्री वेणीमाधवसर्वज्ञ भतेष्ठिप्सित फलप्रदः ॥ सफलां कुरु मे यात्रां वेणीमाधव ते नमः ॥ मन्त्र तन्त्र क्रयाहीनं पूजनं यन्मया कृतं ॥ सफलां कुरु तत्सर्वं श्री त्रिवेणी जगदंबिके त्रैलोक्यनाथ देवेश सर्व भूतदयानिधे ॥ दाने स्नाने मखे श्राद्धे यथोक्त फलदो भव ॥ प्रीयतां पुडरीकाक्ष सर्वज्ञ श्वरोहरिः ॥ त्वयि तुष्टे जगततुष्टं प्रणिते प्रणितं जगत् । मया यदे ततकर्म कृतं तत्सर्बं श्री वेणीमाधव चरणे समर्पितमस्तु ॥

अथ ध्वज दानं ॥ अथ ठाकुर चरन पूजां च करिष्ये ॥ अथ आचार्य दक्षिणां दद्यात् ॥

॥ इति भुज्जी समाप्तः ॥

॥ अथ बंगलापार्वण (पिन्डी) श्राद्ध ॥

बंगालियों के पार्वण श्राद्ध में कोई विशेष अन्तर न होकर केवल हस्त क्रिया का अन्तर होता है। जो कि स्वयं देखने या कराने से हस्त क्रिया का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। लेकिन तीर्थ में पार्वण श्राद्ध न होकर तीर्थ श्राद्ध ही होता है। जिसे बंगला भाषा में पिण्डी भी कहते हैं।

॥१॥ ततः प्रथम भुज्जां—ॐ कुरुक्षेत्रे गयागंगा प्रभासपुष्कराणिच ॥ तीर्थान्नेतानि पुण्यानि दानकाले भवन्तिः ॥ ॐ येतेगंध पुष्पे स घृत सोपकर्ण यज्ञश्रु त्रआमाऽन्नभुज्याय नमः ॥ ॐ येते गंध पुष्पे दधिपतये देवाय श्री विष्णवे नमः ॥ ॐ येते गंध पुष्पे सं प्रदानाय ब्राह्मणाय नमः ॥ सुप्रोक्षितमस्तु ॥ ॐ विष्णुः पुनातु ॥ ॐ तत्सत् ॐ अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ ॥ अमुक गोत्र श्री अमुक देव शर्मा अमुक गोत्र श्री पितुः पितामः प्रपितामह अमुक देवशर्मा ॥ अमुक गोत्र श्री मातामः प्रमातामः वृद्धः प्रमातामः अमुक देवशर्मा प्रयागतीर्थ प्राप्तनि विक्ति कपावर्णाण विधिक श्राद्धवासरे ॥ पुनः द्वाद पुर्वनामनः ॥ अक्षैयस्वर्गकाम ॥ इदं सोपकर्ण आमान्नभुज्य गंधार्चितं श्री विष्णु देवतं यथा संभव गोत्रनाम्ने ब्राह्मणाय अहं ददानि ॥ ॐ तत्सत् नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्र श्री अमुकदेव शर्मा द्वादस पित्रिंमुख्यार्यः ॥ अमुकदेव शर्मा कृतस्मिन्नं सोपकर्ण भुज्यसांज्ञतार्थं दक्षिणां कांचन मूल्यं ताम्रखंडं श्री विष्णु दैवतं यथा सम्भव गोत्रनाम्ने ब्राह्मणाय अहं ददानि ॥ कृतैतत सोपकर्णं आमांन्न भुज्यदानकर्मा अच्छिप्रमस्तु ॥ कृतःस्मिनं सोपकर्ण आमान्न भुज्यदान कर्मणि यत् यत् वैगुन्यं यातं तद्यो स प्रसुमनाय श्री विष्णु नामसरण महं करिष्ये ॥ पिता स्वर्ग पिता धर्म पिताहि परमं तप ॥ पितरः प्रीति महापुण्ये प्रीयन्ते सर्व देवता ॥ अथ ॥ ॐ कुरुक्षेत्रे गया गंगा प्रभासपुष्कराणिच ॥ येतां नितीर्थ पुण्यानि श्राद्धकाले भवन्तिः ॥ ॐ येतत्पाद्य वस्तु पुरुषाय नमः ॥ ॐ इदं अर्घ्य वास्तु पुरुषाय नमः ॥ ॐ इदं अचमनीयं वस्तु

पुरूषाय नमः ।। ॐ इदं सानीयं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषते गंध वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषते पुष्पं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषते धूपं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषतेदीपं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषते सोप-कर्ण श्राद्धीय अग्रभाग नैवेद्यं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ येषते तांबूलं वस्तु पुरूषाय नमः ।। ॐ सर्व सम्पूर्णार्थे गंगोदकं यस्तु पुरूषाय नमः ।।

अर्थ प्रार्थना मंत्र—सर्वे वस्तु मयादेव सर्वे वस्तु मयं जगत् ।। पृथ्वी धरस्तु विज्ञेया वस्तुदैव नमोस्तुते ।।

ॐ ये तत्पाद्यं यज्ञेश्वराय श्री विष्णवे नमः ।। ॐ इदं अर्ध्यं यज्ञेस्वराय श्री विष्णवे नमः ।। ॐ इदं अच्मनीयं यज्ञेश्वरा श्री विष्णवे नमः ।। ॐ इदं सानीयं यज्ञेस्वराय श्री विष्णवे नमः ।। ॐ येतत्पुष्पं यज्ञेस्वरा श्री विष्णवे नमः ।। ॐ येषते धूपं यज्ञेस्वरा श्री विष्णवे नमः ।। ॐ येषते दीपं यज्ञेस्वराय यज्ञेस्वराय श्री विष्णवे नमः ।। ॐ येषते सोपकर्ण श्राद्धीय अग्रभाग नैवद्यं यज्ञेस्वरा श्री विष्णवे नमः ॐ श्री येषते ताबूलं यज्ञेस्वराय श्री विष्णवे नमः ।। ॐ सर्व सम्पूर्णार्थे गंगोदकं यज्ञेस्वरा श्री विष्णवे नमः ।।

अथ प्रार्थना मंत्र—ॐ यज्ञेस्वरोह व्यसमस्तकव्य भोक्ता व्ययस्नाहरिं स्वरत्र ।। तस्यं निधानं वजंतिसघोर त्तांसिसेषांन्रसुरा श्रसर्वे ।। ॐ यज्ञे-स्वरो भगवान्प्रसीद प्रदोभव ।। अत्र श्राद्धे अधिष्ठाता भव ।।

अथ—ॐ ये तत्पाद्यं गंगावैनमः ।। ॐ इदं अर्ध्यंगंगावैनमः ।। ॐ इदं आच्मनीयं गंगावैनमः ।। ॐ इदंऽसनीयं गंगावैनमः ।। ॐ येषते गंध गंगावैनमः ।। ॐ येषते पुष्पं गंगावैनमः ।। ॐ येषते धूपं गंगावैनमः ।। ॐ येषते दीपं गंगावैनमः ।। ॐ येषते सोपकर्ण आमान्नं श्राद्धेय अग्रभाग नैवेद्यं गंगावैनमः ।। ॐ येषते तांबूलं गंगावैनमः ।। ॐ सर्वसम्पूर्णार्थे गंगोदकं गंगावैनमः ।।

अथ प्रार्थना मंत्र—ॐ सद्योपातक संहतीसद्यो दुःख विनासिनी ।। सुखदामोक्षदा गंगा गोत्र परमांगतिं ।। ॐ येतत्पाद्यं भूस्वामि श्री वेणी माधवाय नमः ।। ॐ येतत् अर्ध्यं भूस्वामि श्री वेणीमाधवाय नमः ।।

ॐ येतत् अच्मनीयं भूस्वामि श्री वेणीमाधवाय नमः ।। ॐ येषते सांनीयं भूस्वामी श्री वेणीमाधवाय नमः ।। ॐ येषते गन्धं भूस्वामि श्री वेणी माधवाय नमः ।। ॐ येषते पुष्पं भूस्वामि श्री वेणीमाधवाय नमः ।। ॐ येषते धूपं भूस्वामि श्री वेणी माधवाय नमः ।। ॐ येषते दीपं भूस्वामि श्री वेणी माधवाय नमः ।। ॐ येषते सोपकर्ण आमान्नं श्राद्धेय अग्रभाग नैवेद्यं भूस्वामि श्री वेणीमाधवाय नमः ।। येषते तांबूलं भूस्वामि श्री वेणीमाधवाय नमः ।। ॐ सम्पूर्णार्थे गंगोदकं भूस्वामि श्री वेणी माधवाय नमः ।। ॐ माधवो माधवो वाची माधवो माधवो हरिः ।। सरंतिसाधकः सर्वे सर्व कार्य्येखुमाधव ।। अथ कुसग्ठं वंधनं मन्त्रः ।। ॐ कुसोसित्य पवित्रो सी ब्राह्मणं निमितं पुरा ।। देवस्य विहितार्थायः स्यंतीग्रंथ वंन्धनं ।।

अथ स्नान मत्र—सहश्रसीरेषाइति ।। अथ गन्धः द्वारांमितिगंन्धं ।। दर्भमय ब्राह्मणाय नमः ।। पुष्पं ।। धूपं ।। दीपं दर्भमय ब्राह्मणाय नमः ।। ॐ येषते सोपकर्ण नैवेद्यं दर्भमय ब्राह्मणाय नमः ।। अथ देवपि त्रिअस्थानः त्रयेन त्रिकुस कृत्वा ।। तदुपरि देवनेकं ।। पित्रः द्वयं ।। दर्भमयब्राह्मण कुसपरि सौस्थाप्य ।। अथ विश्वेदेवा अनुज्ञां कुर्य्यात् ।। ॐ तत्सत् नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्र श्री पितुः बारह पुरुषे नीम अमुक-अमुक देवशर्मा ।। प्रयाग-तीर्थ प्राप्त निवित्तीक पार्वण विधिक श्राद्धे ।। कर्तव्य पुरुश्वोमाद्रिव सौ विश्वे सं देवानां अद्य कर्तव्य पार्वण श्राद्धे दर्भमय ब्राह्मणयोः अहं करिष्ये ।।

अथ ॐ देवताभ्यः इति पठित्वा—अथ प्राचिनामिति । अथ पित्रेषु अनुज्ञां कुर्य्यात् (अपसव्यं) ॐ तत्सत् ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्र श्री पितुः पितामः प्रपितामः अमुक देव शर्मा प्रयाग तीर्थ प्राप्तनिवित्तिक पार्वण विधिक श्राद्धे दर्भमय ब्राह्मणयो अहं करिष्ये ।। ॐ देवताभ्यः इति पठित्वा ।। अथ ॐ तत्सत ॐ नमो अद्य अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ ।। अमुक गोत्र श्री

मातामः प्रमातामः वृद्धः प्रमातामः अमुक देव शर्मा। प्रयाग तीर्थप्राप्त-निविक्तिक पार्वण विधिक श्राद्धे दर्भमय ब्राह्मणयो अहं करिष्ये ।। ॐ देवताभ्यः इति पठित्वा ।। अथ संव्येनत्रित्यिका जलेन श्राद्ध वास्तु निसिंचयेत् ।। अथ जलपात्रं मेकयसे स्थाययेत् ।। अंगुष्ठमात्रं पुरूषं इदं संप्रत्छटतेमही असुरानांवेदार्थाय भूमौसंस्थाप्यतोमया ।। यावत श्राद्ध करोमितावत् श्राद्धे रक्षांकुरू (अथ दर्भासनं) अथ जल स्थाने पूर्वेषु विश्वेदेवा य तत ते दर्भासन वो नमः (अपसव्य) अथ पित्रेषु दर्भासनं दद्यात ।। ॐ तत्सत ॐ नमो अद्य पितुः पितामह प्रपितामः अमुक देव शर्मा येतत्ते दर्भासनं ये चात्रिप्ता मनुजांत्त्व मनु तस्यैते स्वधा ।। द्वितिय गोत्र मातामह प्रमातमः अमुक देव शर्मा येतते दर्भासनं चात्रिप्सा मनुजांत मनु तस्यै स्वधा (अथ संव्येन गंधादिदानं मंत्र) विष्टरो पुरुरवो-माद्रिव सौ विश्वेदेवा येतानि वो नमः ।। येषते गंध पुष्प धूप दीप नैवेद्य तांबूल यज्ञसूत्र दत्तदानानिवो नमः ।। ॐ येषते गंध ।। ॐ येषते पुष्पः ।। ॐ येषते धूपः ।। ॐ येषते दीपः ।। ॐ येषते नैवेद्यं ।। ॐ येषते तांबूलं ।। ॐ येषते यज्ञसूत्रं ।। ॐ येषते अच्छादनं ।। ॐ सर्व संपूर्णनार्थे गंगोदकं वो नमः ।। (अथ पित्रेषुगंधनादि दानं मंत्रः) विष्टरो गोत्र पितुः पितामः प्रपितामहः प्रपितामः अमुक देव शर्मा येतानि ते गंध पुष्प धूप दीप आच्छादनानि ये चात्रिप्ता मनु जांत मनु तस्यै ते स्वधा ।। ॐ येषते गंधः ।। ॐ येषते पुष्पः ।। ॐ येषते धूपः ।। ॐ येषते दीपः ।। ॐ येषत्ते तांबूलं ।। ॐ येषते यज्ञ सूत्रं ।। ॐ येषते आच्छादनं । (इसी प्रकार द्वितीय गोत्र का करें ।। तत्पश्चात) ॐ याद्रिसंमया गंधादि दान विहितं ताद्रिषं संपूर्णमस्तु ।। ॐ गधादिदानकर्मा अच्छिद्रमस्तु ।। अथ भोजन पात्र अर्हंपातइस्ये ।। ॐ पातय ।। अथ इसां न मारभ्यदेव मंडलं कुर्य्यात् ।। अथ नैरित्य मारभ्य पित्रिपात्रे चतुस्कोंण मंडलं कुर्य्यात् ।। अथ सघृत मन्नं मादाय ।। ॐ अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा इदं कव्य वाहनाय ।। सोमाय पित्रिमते स्वाहा इदं सोमाय पित्रिमते ।। ॐ भूर्भुवः स्वाहा ।। जमाय अंगिरस ये स्वाहा इदं जमाय अंगिरसये ।। अथ

वार: द्वयं तथा तृतीयो वार: त्रयं पित्रिपिहार्थे किं चित्था पड़ला ॥ अथ हस्त द्वयं विश्वेदेवाग्रे सुत्तानं क्त्विा मन्त्र: ॥ पृथ्वी ते पात्रं चौर विधानां ब्राह्मण:स्य मुखे अमृत्ते अमृत्तं जोहोमि स्वाहा ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधेपदं समूढमस्य पांसुरे ॥ जवान्विकीर्ष्ये ॥ (अपसव्यं) अथ हस्त: द्वयेन पित्राग्रे चित्पात्रं कृत्वा ॥ पृथ्वी ते पात्रं चौर विधानं ब्राह्मण:स्य मुखे अमृत्ते अमृत जुहोमि स्वाहा ॥ ॐ विष्णु हव्यं-रख्य:श्व ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदं समूढमास्य पांसुरे ॥ अथ अपाहेत तिलान्विकीर्ष्ये ॥ (सव्य होकर तीन बार गायत्री का जाप करे तथा मधुव्वाता मंत्र पढ़े) ॐ विष्टरों पितु: पितामः प्रपितामः पुनः द्वितिय गोत्र मातामः प्रमातामः वृद्ध: प्रमातामः अमुक देव शर्मा इदं-मन्नं सोपकर्णं घृताढ्य कर्ण समेतं सतिल गंगोदकं ये चात्रिप्ता मनुजांत मनु तस्यै ते स्वधा। पुनः तीन बार गायत्री जप करे तथा मधुवाता मंत्र पढ़ पढ़कर नीचे लिखे मंत्र से हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।

मंत्र—यग्येश्वरों हव्य समस्तकव्य भोक्ताव्ययस्तां हरिरिस्मर:त्र ॥ निधानं नवजंतिस घोरक्षांसि सेषां न सुराश्वसर्वे । ॐ यग्येश्वरो भगवान प्रसीद प्रदोभव ॥ ॐ जोगीश्वरो जाग्यवल्क सपूज्यो मूनये त्रवन ॥ वर्णाश्रमे तारन नेवृहि धर्मान सेषत्ते ॥ मन्न्वंति विष्नु हारित्वं जाग्यवल्क सनंगिरा ॥ मार्जयास्तुभ संभर्त्ता कात्यायम वृहस्पतिं ॥ पारासर: व्यास संखलिखिता रक्षगौतमौ ख्याता तथौ वशिष्टाश्वधर्म शास्त्र प्रजा जका। ॐ तद विष्नो: परमं पदं सदा पस्यंति सूरयदिवी व चक्षाक्षुतं ॥ ॐ दुर्योमनुम यो महाद्रुमरकं दस्कर्ण सकुनी तस्य साखा दुसासनों पुष्प-फलेसमृद्धं मूलं राजा धृतराष्ट्रो मनसी: ॥ युधिष्टरो धर्म मयो महा द्रुमरकंद: अर्जुन भीमसेनस्य साखा माद्रि सुतौ पुष्पफलेसमृद्धै ॥ मूलं कृडम ब्रास्नन् ब्राह्मणाश्व ॥ अथ सप्त व्याधादसारन्ने मृगा: कालंजरे गिरौ ॥ चक्र वाकासर: द्वीपेहं सासरसि मानसे ॥ तेपि जाता कुरुक्षेत्रे ब्राह्मण वेद पारगा ॥ प्रस्थितादीर्घ मध्वांन्ने यू यतेभ्योवसीदत ॥ ॐ नील-कंठायनम: ॥ ॐ महा भारतं ॐ महाभारतं ॥ ॐ नम:स्तुभ्य विरूपाय-

नमस्ते दिव्यचक्षुसे ।। नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्तायते नमः (अथ विकरसनं मंत्र असौस्कृत्तइति) अथ सतिलं प्रोक्षिते कुसै (विराका का पिन्डा देने का मंत्र) ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा जेप्य दग्धा कुले मम भूमौदत्तेन तृप्य तू तृप्ता यां तुपरांगतिं ।। ॐ जेसां न माता न पिता न वन्धू नैवांन्न सिद्धीन तथा नमस्ते ।। तृप्त प्रमन्नभुमिदत्तमेत्तत प्रयांतिलोकायसुखा-यतद्वत ।। ॐ प्रयागमाधव हरी (पुनः हाथ-पैर धोकर दूसरी पवित्री पहन कर यह मंत्र पढ़े) पेसमन्नमप्यस्तीकदेय ।। इष्टिभ्योदीयतां (पिन्डदान का संकल्प करे) ॐ कुरुश्व अथ मंडलं कुर्य्यात ।। पिण्डस्थाने भीः ।।

मंत्र—निहंन्य सर्वयदमघ पम्द वेंत्धृताश्च सर्वेशुर दानवामया ।। रक्षांसियक्षास पिचाससंघा ।। हता मया यास्तु धानाश्वसर्वे ।।

रेखा खीचे ।। मंत्र—अपहताः सुरारक्षां ॐ शिवेदिसतत् ।।

कुशा रेखा पर बिछावे ।। मंत्र—ॐ देवताभ्य मंत्र पठित्वा ।। ॐ ये चेहि पितरः सोम्या सौगभीरेभिः पूर्वनेभिदत्ता सर्व द्रविनेह भद्रं रयं चनः सर्वविरं निरक्षत ।। अथ समस्त पित्रेषु अवने जलं दद्यात । अथ अमुक गोत्रः देवशर्मा येत्तते यवनेजलं ये चात्रिप्रा मनु जांत मनुतस्यै ते स्वधा ।। अथ पिडंमाद्य मधुवाता इति पठित्वा ।। अक्षंन्नीमदंन्तभूवः पिया अस्मौसत्तसुत भानवो विप्रान विष्टयाम तिया जोजं निंदतेहती ।। ॐ विष्टरों गोत्र पितुः अमुक देवशर्मा एतते सोपकर्णं पिंडं सतिल गंगोदकं ये चात्रिप्ता मनुजांत मनुतस्यै ते स्वधा ।। (उप मन्त्र से बारह पित्रों को पिन्ड दे ।)

पिंडां ते पिंडषे सं विकीरयेत् ।

अथ लेप भाग भुजः ।

नमस्कार करे— महेंद्रि विरजे चैव गंगा यां जांन्हवी जले ।। अन्न पिंड प्रदाने न ब्रह्मलोक मनामयं ।

वेदी पर बिछे हुये कुश के अग्र भाग में हाथ पोछे । तथा पिंड पात्र के जल से हाथ धो डाले । आचमन कर उत्तर मुख करके सांस खीचकर पिंड पर पितर व सूर्य ध्यान कर सास छोड़े ।

सांस छोड़ने का मंत्र—ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथा भाग मावृषाइध्वं ॐ अमी मदन्त पितरो यथा भागमावृषाइषन् ।।

पुनः बाये हाथ में पिंडपात्र लेकर दाहिने हाथ से पिंडा पर जल चढ़ावे ।

मन्त्र—विष्टरों गोत्र पितु अमुक देवा शर्मा पिंडः प्रत्यवने निष्पये चा तृप्ता मनुजांत मनुतस्यै ते स्वधा ।। अथ बांमे पाँणीनां सुमादाय । दक्षिणा करेण पिंडोयरिदत्त्व ।। ॐ नमोवः पितरोरसाय ।। ॐ नमो पितरो नमोवः ।। गृन्हां सत्तोवः पितरो दत्तं एतद्वः पितरो वासः ।। विष्टरों गोत्र पितुः अमुक देव समायेत्तते पिंडोवासः ।। येचात्रिप्राप्ता-मानुजात मनुतस्यै ते स्वधा ।। ततः तूष्म पिंड पूजनं ।। अथ भाष्कर-मूर्ति ध्यायेत् ।। ॐ वसंन्ताय नमस्तुभ्ये भीष्माय च नमोनमः ।। वर्षाभ्यः श्चसांस्त्संङ्क रियते च नमः स्वधा ।। हेमान्ताय नमस्तुभ्यं नमः स्तेसि-सिराय च ।। मास सम्वत्सरोभ्यः अदिवसेभ्यो नमोनमः ।। अथ सिवा आपः सन्तुइ तिजलं ।। सौमनस्य पुष्पं ।। ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।। प्राचीना मितिये वं विधेपितृ पिंडेषु दद्यात् ।। (तिल, जौं, शहद, जल लेकर पिण्डा पर छोड़े) विष्टरों गोत्रस्य पितामहस्य अमुक देव शर्मा अमुक गोत्रस्य मातामहस्य अमुक देव सर्मा कृतस्मिन् प्रयागतीर्थ प्राप्तनिवित्तिक पार्वण विधिक श्राद्धे दतैतदन्न पानादिकं मत्तैयमुक पतिष्ठतां ।। ॐ अस्तु ।। स पवित्रं कुसः त्रयच पिंडो परिधृत्वा ।।

पूर्व मुख करके जल धारा पिण्डा पर छोड़े ।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु ।। ॐ मातामह सन्तु ।। ॐ गोत्रंन्नो-वर्धान्तां दातारंन्नोभिवर्धन्तां वेदासंततिरेवच ।। श्राद्धाच नोमाभ्यगमत् वहुदेयंचन स्तुति ।। अन्नं चनो वहुभवेतद् तिथिं श्रलभे महीयाचितारः सनः सन्तुमाचयाचिस्म कंचनः ।। अन्नंच वर्धतां नित्यं दाता सतं-जीवतु ।। तेभ्यः संकल्पिता द्विजातेसांमक्षयामस्तु ।। ॐ पितृं वरः प्रसादास्तु ।। अथ पिंडोपरिकुसानास्तीर्य ।। ॐ पूज्यविहंति इतिं पठीत्वा ।। अथ भो पिंडा सम्पन्न सुसंपंन्नमस्तु ।। पिंडायां प्रयागे भूमि-तिष्ठ पितरः विष्णुलोकं गच्छ ।। अथ पिंडा आघ्राय उत्थापयेत ।।

(दक्षिणा संकल्प) ॐ तत्सत् ॐ नमो अद्य गोत्र पितु तथा द्वादस पित्रानां अमुक देव शर्मा प्रयागतीर्थ प्राप्तनिवित्तिक पार्वण विधिक श्राद्धे कर्मणः प्रतिष्ठार्थे दक्षिणां रजतमूल्यंताम्रखंडं यथासंभव गोत्रनांम्ने ब्राह्मणाय अहंददे ।। येवं विधेः विश्वेदेवाः दक्षिणां दद्यात् ।। तद्यथा ।। रजतरजतं कांचनकांचनं असिसोमे प्रतिदीयतां आसिखः प्रति-गृह्यतां दातारंन्नोपि वंर्द्धतां इति ।। अथ अभिरम्यतां क्षमस्व ।। इतिजलं ।। वाजेवाजे मधुवाजिनोनु धेनुषुः विप्रा-न्वे दारितत्र्या अस्य पीवतमादय ध्वंस्टप्नायाप्यः पथिभिर्देवजानै ।। ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्याद्विविधाप्टथिवी विश्वरूपे ।। अमागंतां पितरा मातरां जुग्मामासोमो अमृत त्वाय गम्यात् ।। ॐ पिता स्वर्ग इति पठीत्वा ।। ॐ तत्सत् ॐ अद्य गोत्र अमुक देवसर्मा प्रयाग तीर्थ प्राप्तनिवित्तिक पार्वण विधिक श्राद्धकर्मा अच्छिद्रमस्तु ।। ॐ अस्तु ।। कृतः स्मिन्या वर्णविधिक श्राद्ध कर्मणि जत् जत् तन्दोस प्रसुमनाय श्री विष्णु नाम सरण महं करिष्ये ।। प्रमादात् इति पठीत्वा ।। प्रीयतां पुंडरीकाक्षं सर्वजज्ञः श्वरोहरि ।। इसंतुष्टे जगतुष्टे प्रणिते प्रणितं जगत् ।। ॐ मया जदेतत्कर्म तंतत्सर्वं श्री वेणीमाधव चरणे समर्पित मस्तु ।। मंत्र तंत्रकृयाहीनं पूजनं जन्मयाकृतं ।। सफलं कुरू तत्सर्वं श्री त्रिवेणी जगतंबिके ।। ॐ कव्य धा हनलः सोमोजमः श्रैवाजमस्तथा ।। अग्नित्वा तावर्हिखदा सोमया पित्र देवता ।। आगःच्छंतु महाभागाजवा भी-रक्षितात्विह ।। यदि पापितरो वेच कुले जातासनामयंते सांपिडं प्रदानेन आगतोस्मि प्रयागतः ।। ते सर्वे त्रिप्तमायांतु पिंडदानेन सर्वदा ।।

।। अथ बँगला श्राद्ध समाप्तं ।।

किन्चित दान

मंत्र—प्रयागे ।नीलयस्वामिन भक्तसंङ्कट नाशिनी,
किञ्चिद्दान नमो देव प्रसन्नो भव माधव ।।

।। इति ।।

ध्वज दान

मंत्र—प्रयागे नीलयस्वामिन भक्तसंकट नाशिनो,
ध्वजदानं नमो देव प्रसन्नो भव माधव ॥

॥ इति ॥

॥ अस्थि प्रक्षेपण विधिः ॥

प्रथम सचैल (सवस्त्र) स्नान कर प्रतिज्ञा संकल्प तथा प्रायश्चित संकल्प करे। तदन्तर पंचगव्य से अस्थि को स्नान (धो डाले) करावे। स्नान कराकर प्रवाहित करे। तब भगवान का ध्यान कर चौरासी दान का संकल्प करे। तथा निम्नलिखित श्लोक यजमान से कहलावे।

प्रतिज्ञा संकल्प—विष्णों विष्णों विष्णुः.........अमुकगोत्रस्य अमुक-शर्म्मणः (वर्मनः गुप्तः दासः) अपुनरावृत्तिक ब्रह्मलोकावाप्तये प्रयाग-तीर्थे अस्थिप्रक्षेपमहं करिष्ये ॥

प्रायश्चित संकल्प—विष्णों विष्णों विष्णुः........अमुकगोत्रस्य अस्मत् (पितुः मातुः भ्रातुः आदि) मार्गे धूम्रशकटादि चाण्डालादि हीन जातिस्पर्श दोष परिहारार्थं अस्थि प्रक्षेपणाधिकार सिद्धयर्थं प्रायश्चितं तुभ्यमहं सम्प्रददे।

तदनन्तर पंचगव्य स्नान कराकर दक्षिण दिशा देखता हुआ नाभिमात्र गंगा में जाकर अस्थि प्रवाहित करे।

प्रवाह मंत्र—नमोस्तु धर्म्मराजाय स मे प्रीतोऽस्तु ॥

पुनः स्नान कर बाहर आकर सूर्य को नमस्कार करे व भगवान का ध्यान कर रजत दक्षिणा दान तीर्थ पुरोहित (पन्डा) को दे।

चौरासी दान संकल्प—विष्णों विष्णों विष्णुः.......अमुक गोत्रस्य (पितुः मातु भ्रातुः आदि) ब्रह्मलोकावाप्तये कृतस्य अस्थिप्रक्षेपण चतुरशीति लक्ष योनिषु गमनागमन निवृत्यर्थं तथा चाक्षय स्वर्गलोकफल

प्राप्त्यर्थं चतुरशीतिदान निष्क्रयिणीं यथाशक्ति दक्षिणाममुक नाम गोत्राय शर्मणे दातुमहमृत्सृजे ॥

॥ श्लोक ॥

हाथ जोड़े—यावदस्थि मनुष्यस्य गंगा तोयेषु मज्जति ।
तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥१॥
गंगा तोयेषु यस्यास्थि प्लवते शुभकर्म्मणः ।
न तस्य पुनरावृत्ति र्ब्रह्मलोकात्कथञ्चन ॥२॥
दशाहाभ्यंतरे यस्य गंगा तोयेऽस्थि मज्जति ।
गंगायां मरणे यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात ॥३॥

॥ इति अस्थि प्रक्षेपण विधिः ॥

॥ त्रिवेणी में देह त्याग विधिः ॥ नियम ॥

प्रथम मनुष्य को चाहिए कि प्रायश्चित कर शरीर शुद्ध करे। ततपश्चात यदि उसका श्राद्ध करने वाला उसके कुटुम्ब में न होय, तो स्वयं जीवित श्राद्ध सपिन्डन तक करे। तथा गोदान उपवास करके पारण के दिन पारण करके संकल्प पूर्वक श्री विष्णु जी के ध्यान कर श्री त्रिवेणी में घुस जाय।

॥ दानाधिकारी पात्र लक्षणम् ॥

सपत्नीकः शुचिः शान्तः सद्वृतः श्रोत्रियोद्विजः ।
अव्यङ्गश्चाप्यरोगीच कुटुम्वी पात्र मुच्यते ॥

शान्त सदाचारी वैदिक सर्वाङ्गपूर्ण कुटुम्वी और स्त्रीयुत ऐसे वैदिक ब्राह्मण पात्र कहा जाता है। अर्थात् वही दान लेने का अधिकारी होता है।

गीता के सत्रहवें अध्याय में बीसवाँ श्लोक है ।

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले चपात्रे च तद दानम् सात्त्विकं स्मृतम् ।।

दान देना ही कर्त्तव्य है ऐसे भाव से जो दान देश, काल, पात्र प्राप्त होने पर प्रत्युपकार न करने वालों के लिए दिया जाता है । वह दान सात्त्विक कहा गया है । अर्थात् जो पुरुष देश, समय, दान लेने वाला उचित अधिकारी को समझ कर दान देता है । वही दान सात्विक दान कहा जाता है ।

।। माघ मलमास नियम ।।

माघ मलमास पड़ जाय तो मासोपवास चन्द्रायण आदिव्रत मल-मास में ही समाप्त करे । और स्नान दानादि द्विमास पर्यन्त चलेगा ।

।। माघ स्नान नियम ।।

पौषशुक्ल एकादसी से अथवा पूर्णामासी से अथवा अमावस्या से माघ स्नान प्रारम्भ करना चाहिए । स्नान का समय उत्तम तारागण निकले रहें, मध्यम तारा लुप्त हो जाय, निकृष्ट सूर्योदय स्नान होता है । प्रयाग में माघ मास तक रहकर जो व्यक्ति कल्पवास तथा यज्ञ सेज्या-गोदान, ब्राह्मण भोजन गंगा पूजा, वेणीमाधव पूजा तथा व्रतादि और दानादि करता है । उसका विशेष २ महत्व तथा पुन्य होता है ।

।। माघ माहात्म्य ।।

माघमासे गमिष्यन्ति गंगायमुनसंगमे ।
ब्रह्मविष्णु महादेवरुद्रादित्यमरुद्गणाः ।।

अर्थात् : ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, रुद्र, आदित्य तथा मरुद्गण माघ मास में प्रयाग राज के लिए यमुना के संगम पर गमन करते हैं ।

प्रयागे माघमासे तु त्र्यहं स्नानस्य यद्भवेत् ।
नाश्वमेधसहस्त्रेण तत्फलं लभते भुवि ॥

प्रयाग में माघ मास के अन्दर तीन बार स्नान करने से जो फल होता है सो फल पृथ्वी में हजार अश्वमेध यज्ञ करने से भी प्राप्त नहीं होता है ।

कुम्भ अर्ध कुम्भ योग तथा महात्म्य

कुम्भ योग—मकरे च दिवानाथे ह्यजगे च वृहस्पतौ ।
कुम्भ योगो भवेतत्र, प्रयागे ह्यति दुर्लभः ॥

वृषराशि में वृहस्पति होवे और जिस दिन सूर्यनारायण मकर राशि में प्रवेश करते हैं उस योग को कुम्भ योग कहते हैं ।

अर्ध कुम्भ योग विवरण

वृश्चिक राशि के वृहस्पति और मकर राशि के सूर्य व चन्द्र माघ मास में अमावस्या के दिन जब आवे तब अर्ध कुम्भ योग होता है । अर्ध कुम्भ केवल प्रयाग में ही होता है ऐसा योग प्रयाग में अति दुर्लभ है ।

कुम्भ स्वरूप—कलशस्य मुखेः विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्मृताः ॥१॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदो समावेदोऽथर्वणः ।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ॥२॥

कुम्भ प्रार्थना मन्त्र—देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।
त्वत्तोय सर्व तीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि, त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ॥

त्वत्प्रसादादिमं स्नानं कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नोभव सर्वदा ।।

दोनों हाथों के अंगूठों को मिला कर खुली मुट्ठी बाँधे ।

त्रिवेणी जी में स्नान करने से पूर्व कलश मुद्रा दिखा कर उसमें अमृत की भावना करके फिर उक्त प्रार्थना मन्त्र पढ़ता हुआ स्नान करे ।

कुम्भ माहात्म्य—यत्फलं दशभिर्वर्षैः प्राप्यते नियमैर्नरः ।।
तत्फलं प्राप्यते कुम्भेत्र्यह स्नानान्न संशयः ।।

जो फल मनुष्यों को दस वर्ष नियम से माघ स्नान करने से होता है । वह फल कुम्भ पर्व के समय तीन बार स्नान करने से प्राप्त हो जाता है इसमें कोई संशय नहीं ।

सहस्रं कार्तिके स्नानंमाघेस्नानशतानि च ।।
वैशाखे नर्मदा कोटिः कुम्भस्नानेनतत्फलम् ।।

कार्तिक मास में एक हजार बार यदि गंगा स्नान करे और माघ मास में सौ बार स्नान होवे, वैशाख मास में नर्मदा में करोड़ बार स्नान करे तो उन स्नानों का जो फल होता है सो फल प्रयाग में कुम्भ के समय पर स्नान करने से प्राप्त होता है ।।

विष्णु पुराणे—अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
लक्षं प्रदक्षिणा पृथिव्याः कुम्भस्नानेनतत्फलम् ।।

हजार अश्वमेघ यज्ञ करने से, १०० वाजपेय यज्ञ करने से और पृथ्वी की लाख बार प्रदक्षिणा करने से जो फल मिलता है सो फल कुम्भ स्नान से प्राप्त होता है ।

धनं धान्यं समृद्धिश्च प्रतिष्ठारोग्यमेव च ।
अभीष्टफल सिद्धिश्च जायते नास्ति संशयः ।।

प्रयाग कुम्भ में—स्नान, जप, दान, पुण्य, ध्यान, ज्ञान, देवार्चन, सत्संगादि, करने से धन, धान्य, पुत्र, कीर्ति, आयु, आरोग्यता तथा ज्ञान, व सद्गति मनोभिलषित फल की सिद्धि होती है ।

॥ वेद में प्रयाग का महत्व ॥

सितासिते सरिते यत्र संगमे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति ॥
ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनास्ते जनासो अमृत्व भजन्ते ॥

जिनके जल श्वेत और श्याम वर्ण के हैं, जहाँ गंगा और यमुना मिलती है, उस प्रयाग सङ्गम से स्नान करने वालों को स्वर्ग लोक को प्राप्ति होती हैं। जो धीर पुरुष वहाँ शरीर का त्याग करते हैं उन्हें अमृतत्व अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

॥ संक्रान्ति माहात्म्य ॥

यस्मिन्कालेऽर्कसंक्रान्तिर्दिवा वा यदि वा निशि
तत्काले स्नानदानादि कृत कर्माऽक्षय भवत् ॥ १ ॥

सूर्य की संक्रान्ति के दिन में या रात्रि में जब हो—उस पुण्य समय में किया हुआ स्नान, दान, यज्ञादि कर्म अक्षय (अनन्त) होता है।

संक्रान्ति की विशेषता—उत्तरे त्वयने विप्रं वस्त्रदान महाफलम्।
तिलं स्वर्णमनऽवाहं जत्त्वा रोगौर्विमुच्यते ॥ २ ॥

जो मकर संक्रान्ति में तिल स्वर्ण वृषभ का दान ब्राह्मण को देता है। वह कठिन से कठिन रोग से मुक्त हो जाता है।

॥ प्रयाग महत्व ॥ संक्रान्त के दिन त्याज्य

सक्रान्तौ तैलसंयोगः स्त्रीसभोगः पलाशनम्।
दन्तधावनकाष्ठ च यः कुर्यात पतितो भवेत् ॥ ३ ॥

संक्रान्ति के दिन में जो कोई तैल लगाता है संभोग करता है मास भक्षण करता है और काष्ठ दातून करता है। वह पातकी होता है।

॥ प्रयाग के प्रधान तीर्थ ॥

त्रिवेणी माधवं सोमं भारद्वाजं च वासुकिम्।
नत्वाऽक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थनायकम् ॥

त्रिवेणी, माधव सोमेश्वर, भरद्वाज, वासुकी, अक्षयवट, शेष और तीर्थराज प्रयाग ये प्रधान तीर्थ हैं।

प्रयाग के प्रसिद्ध माधवों के नाम

शंख माधव—छतनगा के पास मुन्शी बाग में।
चक्रमाधव – अरैल में (अलर्कपुर)
गदामाधव—नैनी में।
पद्ममाधव—वीकर देवरिया में।
अनन्तमाधव—अक्षयवट के पास।
बिन्दुमाधव—द्रौपदीघाट के पास।
मनोहरमाधव—चौक द्रव्येश्वरनाथ के मन्दिर में।
अशिमाधव—नागवासुकी के पास।
सङ्कटहरमाधव—संध्यावट के नीचे (झूसी में हंसकूप के पास)
आदिवेणीमाधव—जलरूप से त्रिवेणी संगम में।
आदिमाधव—अरैल में।
श्री वेणीमाधव—दारागंज में।
वट माधव—वट के मूल में।

त्रिवेणीदशकस्तोत्रम्

मुक्तामयालं कृतमुद्रवेणी भक्ताभयत्राणसुबद्धवेणी।
मत्तालिगुञ्जन्मकरन्दवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ १ ॥
लोकत्रयैश्वर्यनिदानवेणी तापत्रयोच्चाटनबद्धवेणी।
धर्मार्थकामाकलनैकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ २ ॥
मुक्तांगनामोहनसिद्धवेणी भक्तान्तरानन्दसुबोधवेणी।
वृत्यन्तरोद्वेगविवेकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ३ ॥
दुग्धोदधिस्फूर्जसुभद्रवेणी नीलाभ्रशोभाललिता च वेणी।
स्वर्णप्रभाभासुरमध्यवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ४ ॥
विश्वश्वरोत्तुङ्गकर्दिवेणी विरिञ्चिविष्णुप्रणतैकवेणी।
त्रयीपुराणासुरसार्धवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ५ ॥

मङ्गल्यसंपत्तिसमृद्धवेणी मात्रान्तरन्यस्तनिदानवेणी ।
परंपरापातकहारिवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ६ ॥
निमज्जदुन्मज्जमनुष्यवेणी त्रयोदयोभाग्यविवेकवेणी ।
विमुक्तजन्मविभवैकवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ७ ॥
सौन्दर्यवेणी सुरसार्थवेणी माधुर्यवेणी महनीयवेणी ।
रत्नैकवेणी रमणीयवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ८ ॥
सारस्वताकारविघातृवेणी कलिन्दकन्यामयलक्ष्यवेणी ।
भागीरथीरूपमहेशवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥ ९ ॥
श्रीमद्भवानीभवनैकवेणी लक्ष्मीसरस्वत्यभिमानवेणी ।
मातात्रिवेणीत्रयीरत्नवेणी श्रीमत्प्रयागे जयति त्रिवेणी ॥१०॥
त्रिवेणीदशकं स्तोत्रं प्रात्तर्नित्यं पठेन्नरः ।
तस्य वेणी प्रसन्नास्याद्विष्णुलोकं स गच्छति ॥११॥

॥ त्रिवेणीदशकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

अन्तर्वेदी के तीर्थ

गोघट्टन तीर्थ—मनकामेश्वर से पूर्व जमुना जी में ।
गोघट्टन तीर्थ—(दूसरा) मुट्ठीगंज के पास ।
पिशाच मोचन तीर्थ—गोघट्टन तीर्थ से आगे ।
कामतीर्थ—कामेश्वर मन्दिर के नीचे यमुना तट पर ।
कपिलतीर्थ इन्द्रेश्वर शिव—कामतीर्थ से आगे ।
तक्षक तीर्थ तक्षकेश्वर शिव—दरियाबाद में यमुना के किनारे ।
कालियह्रद—तक्षक तीर्थ के पास ।
चक्रतीर्थ—बरगद घाट पर ।
सिन्धुसागर तीर्थ—(गङ्गासागर घाट) ककरहा घाट के पास ।
पांडवाश्रम-पांडवकूप—सिन्धुसागर से उत्तर अटाले से पूर्व ।
वरुणतीर्थ—पाण्डवाश्रम से उत्तर गढई सराय में कूप है ।

अत्रि अनुसूयाश्रम—अतरसुइया महाल में।

भरद्वाजाश्रम—कर्नलगंज में।

विश्वामित्राश्रम—भरद्वाजाश्रम से उत्तर में।

गौतमाश्रम—विश्वामित्राश्रम से उत्तर में।

जमदग्नि आश्रम—गौतमाश्रम से उत्तर में।

वसिष्ठाश्रम—जमदग्नि आश्रम से उत्तर में।

(इसी प्रकार वरुणाश्रम से वायु आश्रम तक ८८ आश्रम हैं)

उच्चैःश्रवाश्रम—भरद्वाजाश्रम से पूर्व गंगा तट पर।

वासुकी नाग—दारागंज से उच्चैश्रवाश्रम से पूर्व।

भोगवती कुण्ड—वासुकी के नीचे गंगा जी के पक्के घाट में।

ब्रह्मकुण्ड—वासुकी से दक्षिण गंगा के पच्छिम।

लक्ष्मी तीर्थ—गंगा के पच्छिम में।

महोदधि तीर्थ—लक्ष्मी तीर्थ से दक्षिण में।

दशाश्वमेध घाट—दारागंज में।

मलापह तीर्थ—महोदधि से दक्षिण में।

उर्वशी कुण्ड—मलापह से दक्षिण में।

शक्रतीर्थ विश्वामित्र तीर्थ वृहस्पति तीर्थ अत्रि तीर्थ दत्तात्रेय तीर्थ दुर्वासा तीर्थ सोम तीर्थ सारस्वत तीर्थ	दशाश्वमेध घाट से अक्षयवट तक ये तीर्थ हैं।

मध्यवेदी के तीर्थ

सोमतीर्थ, सोमेश्वर शिव--अरैल में।

सूर्य तीर्थ—सोम तीर्थ से पश्चिम में।

कुबेरतीर्थ, वायुतीर्थ, अग्नितीर्थ—सूर्यतीर्थ से पश्चिम में।

वीरतीर्थ, चक्रमाधवतीर्थ, यमतीर्थ, वरुणतीर्थ, रामतीर्थ, सीताकुण्ड, हनुमानतीर्थ—सोमेश्वरनाथ के मन्दिर से आदिमाधव के मन्दिर तक गंगा-यमुना की जलधारा में।

उर्वतीर्थ, शूलटङ्केश्वर—संगम से नैऋत्यकोण में।

सुधारसतीर्थ—शूलटङ्केश्वर से आगे।

कम्बलाश्वतरतीर्थ—सुधारस के दक्षिण यमुनातट पर सैनी में।

विकरक्षेत्र—वीकर गाँव में।

बहुमूलकस्थान—विकरक्षेत्र से उत्तर में।

भार्गव, गालव, चामर आदि ऋषि—बहुमूलक से उत्तर में।

कोटितीर्थ—शिवकोटि (शिकोटी) गंगा जी के दक्षिण तट पर।

॥ बहिर्वेदी के तीर्थ ॥

मानसतीर्थ—गङ्गा के उत्तर तट पर नई झूँसी से ढाई कोस पर।

यज्ञतीर्थ—मानसतीर्थ से गङ्गातट पर।

अरुन्धती तीर्थ—यज्ञतीर्थ से दक्षिण।

उर्वशी तीर्थ—अरुन्धती तीर्थ से दक्षिण।

हंसतीर्थ—उर्वशी तीर्थ से दक्षिण।

कालकूप, हंसकूप—हंसतीर्थ से दक्षिण।

शाल्मलीतीर्थ—कालकूप से दक्षिण।

ब्रह्मकुण्ड—शाल्मली तीर्थ के पास।

हंसप्रपत्तनतीर्थ—ब्रह्मकुण्ड के पीछे।

नलतीर्थ—ब्रह्मकुण्ड से आगे दक्षिण में।

ऐलतीर्थ, ऐलेश्वर शिव—नलतीर्थ से आगे।

समुद्रकूप—ऐलतीर्थ से आगे।

व्यासतीर्थ—समुद्रकूप से आगे दक्षिण में।

नागतीर्थ, नागेश्वरनाथ शिव—छतनगा के पास।

॥ प्रयाग के अन्य तीर्थ ॥

शूलटङ्केश्वर—वट वृक्ष से दस हाथ उत्तर।

तिल भाण्डेश्वर—शूलटङ्केश्वर से पच्छिम।

साक्षी विनायक—तिल भाण्डेश्वर के पास।

आदि गणेश—वट वृक्ष के समीप।

गौरी गणेश—वट वृक्ष के समीप।

कुलस्तम्भ—किले के अन्दर।

ललिता देवी—अक्षयवट के समीप।

ललितेश्वर शिव—वट के पश्चिम।

सूर्यकुण्ड—वट के पश्चिम।

॥ अन्तर्वेदी के तीर्थ ॥

आदिवेणीमाधव—जल रूप से त्रिवेणी सङ्गम में।

घृतकुल्या, मधुकुल्या—संगम से पच्छिम यमुना तट पर।

निरञ्जन तीर्थ—घृतकुल्या के पच्छिम।

आदित्य तीर्थ—मधुकुल्या के पच्छिम।

ऋणमोचनतीर्थं— किले के नीचे तट पर।

पापमोचन तीर्थ— ऋणमोचन तीर्थ से आगे।

परशुरामतीर्थ—किले के नीचे सरस्वती कुण्ड पर।

॥ प्रयाग में पञ्चकोशी परिक्रमा का क्रम और मार्ग ॥

पहले दिन :—त्रिवेणी स्नान देवा पूजन और प्रतिज्ञा संकल्प कर अक्षयवट का पूजन करे। पश्चात् यमुना के पार में शूलटङ्केश्वर का दर्शन पूजन करे। अनन्तर सुधारस तीर्थ उर्वशी कुण्ड का स्मरण कर आदि वेणीमाधव का दर्शन करे। तट भाग से हनुमान तीर्थ, सीताकुंड, राम तीर्थ, वरुण तीर्थ, चक्रमाधवादि को प्रणाम कर सोमेश्वरनाथ जी के क्षेत्र में उस रात्रि निवास करे।

दूसरे दिन :—तट भाग से सोमतीर्थ, कुबेरतीर्थ, वायुतीर्थ, अग्नि-तीर्थ प्रभृति को प्रणाम कर महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की बैठक में होकर नैनी गाँव में जाकर गदामाधव का और सैनी में कम्बलाश्वतर तीर्थ का दर्शन करे पश्चात् रामसागर में उस रात्रि निवास करे।

तीसरे दिन :—वीकर देवरिया में यमुना जी के तट भाग में निवास करे। इस स्थान में श्राद्ध करने का अनन्त फल होता है। इसलिए यहाँ श्राद्ध करे।

चौथे दिन :—यमुना पार में वनखंडी शिवजी के क्षेत्र में अथवा बेगमसराय में रात्रि को निवास करे।

पाँचवे दिन :—नीमघाट होकर द्रौपदी घाट में जाकर निवास

छठवे दिन :—शिवकोटि तीर्थ में रात्रि में निवास करे।

सातवे दिन :—पण्डिला महादेव जी का दर्शन कर मानस तीर्थ में जाकर रात्रि निवास करे।

आठवे दिन :—झूँसी होकर नागतीर्थ या शङ्खमाधव के समीप जाकर रात्रि में निवास करे।

नवें दिन :—नागतीर्थ, शंखमाधव, व्यासाश्रम, समुद्रकूप, ऐलतीर्थ सङ्कष्टहरमाधव, सन्ध्यावट, हंसकूप, हंसतीर्थ, ब्रह्मकुंड उर्वशी तीर्थ और अरुन्धती तीर्थ होता हुआ झूसी में रात्रि में निवास करे।

दसवे दिन :—त्रिवेणी में जाकर बहिर्वेदी की परिक्रमा कर उस रात्रि में निवास करें।

ग्यारहवे दिन :—अन्तर्वेदी की परिक्रमा कर उसी जगह रात्रि में निवास करे।

बारहवे दिन :—त्रिवेणी में स्नान कर वटवृक्ष का पूजन करे।

पश्चात मधुकुल्या, घृतकुल्या, निरञ्जनतीर्थ, आदित्यतीर्थ, ऋणमोचन तीर्थ, पापमोचन तीर्थ, गोदोहन तीर्ल, समतीर्थ सरस्वती कुंड, कामेश्वर तीर्थ, बरुआघाट, तक्षकेश्वर, तक्षककुंड, कालियाहद, चक्रतीर्थ, सिन्धुसागर तीर्थ, पाण्डवकूप, और वरुणकूप होकर द्रव्येश्वरनाथ का दर्शन करते हुये सूर्यकुंड में जाय और उस दिन भरद्वाजाश्रम में रात्रि में निवास करे प्रातः काल नागवासुकी तथा वेणीमाधव का दर्शन कर दशाश्वमेध घाट जाकर शिव जी का दर्शन करे और वहाँ से लक्ष्मी तीर्थ उर्वशी तीर्थ दत्ततीर्थ सोम दुर्वासा और हनुमान जी होकर त्रिवेणी तट पर जाकर परिक्रमा समाप्त करे। पश्चात यथाशक्ति गोदान और ब्राह्मण भोजन करावे। अनन्तर विष्णु भगवान का स्मरण कर उन्हीं को परिक्रमा आदि सब अर्पण कर दे। चैत्रकृष्ण की तृतीया से अमावस्या तक १२ दिन की परिक्रमा हर साल करनी चाहिए। अथवा डेढ दिन की परिक्रमा करनी चाहिए। जो लोग डेढ दिन में परिक्रमा करना चाहे वे अन्तर्वेदी की परिक्रमा करें।

तीर्थ पुरोहितों का स्वर्णिम अतीत

(१)

संस्कृत विद्या में प्रधानता हमारी होती, कर्मकाण्ड विषय के पूर्ण हम ज्ञाता थे।
विविध विधान जानते उपासना को रहे, ज्ञान मार्ग के हम प्रदर्शक प्रदाता थे।
जग के प्रपंच के प्रपच से बचे थे हम, विबुधेश वैभव विभूतियों के दाता थे।
अपने अखंड तपताप के प्रताप ही से, विश्व के विचित्र एक हम भी विधाता थे।

(२)

हम गुण ग्राहक थे दाहक अनीति के थे, विश्व में हमारे पूर्व शारदा अकेली थी।
धैर्य अधिकार में हमारे लूटता था सुख, दया दुःखहारिणी हमारी मुख्य चेली थी।
रहता परोपकार ही का लक्ष्य था सदैव, विबुधेश मेरी क्षमा बरछी नुकीली थी।
चारों ओर फैलती हमारी कीर्ति चाँदनी थी, चंद्रिका थी चंचला थी चाँदी थी चमेलीथी।

(३)

शुद्ध आचारण थे सराहनीय सत्यता थी, हमी ने सुरों को अश्वमेध करवाये थे।
होते सदा शोभित थे स्थान अपने पै हम, द्वार-द्वार जाने को निषिद्ध ठहराये थे।
पूर्णतया तीर्थ के प्रधान पूज्यमान रहे विबुधेश शास्त्रों में प्रभाव पूर्ण छाये थे।
आज वह स्वत्व भूल बैठे हैं नहीं तो हम वही हैं जो यमलोक ऊजड़ बनाये थे।

आवश्यक जानकारी

१—स्नान, दान. जप, होम में स्त्री को दाहिने रखना चाहिये और भोजन, शयन, रण में बांये रखना चाहिथे ॥

२—श्री मन्ते (सिरगुत्थी) में विवाह-विवाह ही में चतुर्थ भोजन साथ में जो होता है उसमें व्रत, दान, यज्ञ, श्राद्ध में स्त्री को बांये रखना चाहिये ॥

कुल्ला कराने का मन्त्र—मुख दुर्गन्ध नाशय दन्तानाम् च विशुद्धे। स्थीमनाय च गात्राणां कुर्वेहम् दन्त धावनम् ॥

मुद्रक—गायत्री प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद।